काव्य-भारती

उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के लिए

'काव्य-भारती' एवं 'गद्य-भारती' के निर्माण में कृपापूर्ण योगदान के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् निम्नलिखित विद्वानों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है :

डा० नगेन्द्र, डा० विजयेन्द्र स्नातक, डा० विद्यानिवास मिश्र, डा० रामेश्वरलाल खंडेलवाल 'तरुण', डा० रामप्रकाश अग्रवाल, श्री ब्रजभूषणलाल शर्मा, श्री विपिनबिहारी वाजपेयी, श्री रामसंजीवन सिंह, डा० कैलाशचंद्र भाटिया, डा० मिथिलेशकांति, डा० सत्यदेव चौधरी, श्री विष्णुकांत शास्त्री, श्रीमती मन्नू भंडारी, श्री मानसिंह वर्मा, डा० सुरेशचंद्र त्रिपाठी, श्री नंद चतुर्वेदी, श्री नेपालनाथ मिश्र, श्री होतीलाल भारद्वाज, श्री सरोजकुमार, डा० सुरेशचंद्र सेठ, श्री रमापति शुक्ल, श्री सत्यनारायण लाल, श्री निरंजनकुमार सिंह, श्री आनंदप्रकाश व्यास, डा० संकटाप्रसाद उपाध्याय, डा० रामशकल पांडेय, श्री हरिदत्त जोशी, श्री रामप्रकाश वशिष्ठ, डा० बरसानेलाल चतुर्वेदी, डा० हरिप्रसाद राजगुरु, श्री पुरुषोत्तमलाल तिवारी, श्री पुरुषोत्तमलाल गुप्त, श्रीमती सत्या कतूरिया, श्री भगवत रावत श्री प्रेमदत्त शर्मा, श्री वेदव्यास, श्री जयपाल सिंह 'तरंग', श्री कौस्तुभ पंत, श्री महानंद वर्मा।

काव्य-भारती

उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के लिए

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण

जून १९७३ : ज्येष्ठ १८९५

पुनर्मुद्रित

फरवरी १९७४ : फाल्गुन १८९५
मार्च १९७५ : चैत्र १८९७
अप्रैल १९७६ : चैत्र १८९८
अगस्त १९८० : श्रावण १९०२
मार्च १९८२ : चैत्र १९०४
जनवरी १९८४ : पौष १९०५
जनवरी १९८६ : माघ १९०७

मूल्य : रुपये ५-२५

प्रकाशन विभाग में, सी रामचंद्रन सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली-110016 द्वारा प्रकाशित तथा मधु प्रिंटर्स, बी-62/4 नारायणा इण्डस्ट्रियल एरिया, फेज II, नई दिल्ली-110028 में मुद्रित।

प्राक्कथन

विद्यालय स्तर पर शिक्षा में सुधार के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने जो अनेक योजनाएँ चलाई हैं उनमें से एक प्रमुख योजना अच्छी पाठ्यपुस्तकों का निर्माण है। इस योजना के अंतर्गत हिन्दी पाठ्यपुस्तक समिति तथा हमारे विभाग के सहयोग से सात वर्ष पूर्व 'काव्य-संकलन' एवं 'गद्य-संकलन' नामक दो पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया गया था जो तब से अनेक राज्यों में अपने मूल या कुछ परिवर्तित रूप में निर्धारित रही हैं। इस बीच इन पुस्तकों के विषय में अध्यापकों से प्रतिक्रियाएँ व सुझाव समय-समय पर प्राप्त होते रहे। अनुसंधान संस्था होने के नाते हमारा यह कर्तव्य हो जाता है कि हम नवीन उपयोगी दृष्टिकोण से पाठ्यपुस्तकों का निर्माण करते रहें। इसलिए अब से तीन वर्ष पूर्व हमने उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के लिए गद्य और कविता की नई पाठ्यपुस्तकें तैयार करने के उद्देश्य से अनुभवी अध्यापकों, अध्यापक-प्रशिक्षकों एवं विश्वविद्यालय-प्राध्यापकों की कार्य-गोष्ठियों की एक श्रृंखला आरंभ की थी। इन गोष्ठियों में नई पाठ्यपुस्तकों के निकष, पाठ्यवस्तु का स्वरूप व परिमाण, प्रश्न-अभ्यास आदि के स्वरूप पर विस्तारपूर्वक विचार हुआ। तदनुसार पाठ्य-सामग्री का चयन व संपादन किया गया।

काव्य-भारती पाठ्यपुस्तक के निर्माण में प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित रहे हैं :

१. छात्रों को भाषा, भाव तथा शैली की दृष्टि से हिन्दी कविता के विभिन्न रूपों का रसास्वादन करने का अवसर मिल सके।

२. वे काव्य के प्रमुख तत्वों का परिचय प्राप्त कर सकें।

३. इन कविताओं के अध्ययन के माध्यम से उनमें सौन्दर्यानुभूति का विकास हो सके।

४. वे भाषा के सौन्दर्य और प्रभाव को अधिक अच्छी तरह पहचान सकें तथा स्वयं भी भाषा के माध्यम से सृजनशील हो सकें।

५. हिन्दी के प्रमुख कवियों से उनका परिचय हो सके।

६. हिन्दी कविता के विकास और उसकी प्रमुख धाराओं की एक सामान्य झलक उन्हें मिल सके।

आशा है यह पुस्तक इन उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक हो सकेगी ।

काव्य-भारती का संपादन विभाग के श्री अनिल विद्यालंकार एव श्री शशिकुमार शर्मा ने किया है । इस कार्य में विभाग के ही डा० माणिकलाल चतुर्वेदी एवं प्रकाशन विभाग के संपादक श्री प्रभाकर द्विवेदी ने भी सहायता प्रदान की है । समय-समय पर आयोजित कार्यगोष्ठियों में अनेक विद्वान प्राध्यापकों, अध्यापको, अध्यापक-प्रशिक्षकों एवं कवियों और साहित्यकारों से बहुत उपयोगी परामर्श व सहयोग प्राप्त हुआ है । विभाग की तथा अपनी ओर से इन सभी विद्वानों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने में हमें हार्दिक प्रसन्नता है ।

इस पुस्तक को आगामी संस्करणों में और अधिक उपयोगी बनाने के लिए सुझावों का स्वागत करने में हमें प्रसन्नता होगी ।

त्रिभुवनशंकर मेहता
अध्यक्ष
सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी विभाग

जनवरी, १९७३
नई दिल्ली

काव्य-भारती

प्रथम भाग

[नवीं कक्षा के लिए]

विषय-सूची

भूमिका			ग–ट
(क) प्रकृति-सौन्दर्य			
	१. ग्राम-श्री	सुमित्रानंदन पंत	१
	२. पंचवटी	मैथिलीशरण गुप्त	३
	३. सतपुड़ा के घने जंगल	भवानीप्रसाद मिश्र	५
	४. साँझ के बादल	धर्मवीर भारती	६
	५. शरद-वर्णन	तुलसीदास	१०
	प्रश्नावली व टिप्पणियाँ		११
(ख) देश-प्रेम और वीरता			
	१. स्वतंत्रता का दीपक	गोपालसिंह नेपाली	१६
	२. झाँसी की रानी की समाधि	सुभद्राकुमारी चौहान	१८
	३. स्वदेश-प्रेम	रामनरेश त्रिपाठी	२०
	४. कायर मत बन	नरेन्द्र शर्मा	२३
	५. रोटी और स्वाधीनता	रामधारीसिंह 'दिनकर'	२५
	प्रश्नावली व टिप्पणियाँ		२७
(ग) वात्सल्य			
	१. बालिका का परिचय	सुभद्राकुमारी चौहान	३१
	२. बाललीला के पद	सूरदास	३३
	प्रश्नावली व टिप्पणियाँ		३५
(घ) भक्ति			
	१. कृष्ण-भक्ति और ब्रज-प्रेम	रसखान	३६
	२. मीरा-पदावली	मीरा	३८

३. भक्ति-पदावली	नानक, रैदास	४०
प्रश्नावली व टिप्पणियाँ		४१

(ङ) जीवन-दर्शन

१. आः धरती कितना देती है	सुमित्रानन्दन पंत	४३
२. खिलौना	सियारामशरण गुप्त	४७
३. हम दीवानों की क्या हस्ती	भगवतीचरण वर्मा	४६
४. आदमी का अनुपात	गिरिजाकुमार माथुर	५१
५. नीति के दोहे	वृंद, रहीम, तुलसीदास, बिहारी	५३
प्रश्नावली व टिप्पणियाँ		५६

(च) विविध

१. सुदामाचरित	नरोत्तम दास	६२
प्रश्नावली व टिप्पणियाँ		६८

भूमिका

साहित्यिक रचनाओं को मोटे तौर से दो भागों में बाँटा जा सकता है—गद्य और कविता। कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध, जीवनी, यात्रा-वर्णन, डायरी, पत्र आदि गद्य में होते हैं। कविता इन सब विधाओं से अलग छिटकती है। कोई रचना कविता है या नहीं, यह निर्णय करना भी सदा सरल नहीं होता। क्योंकि कोई ऐसी पहचान नहीं दी जा सकती जो सभी कविताओं पर समान रूप से लागू हो सके। पर कुछ ऐसी विशेषताओं की ओर संकेत अवश्य किया जा सकता है, जो प्राय: सभी कविताओं में पाई जाती हैं और जो गद्य की विधाओं में प्राय: नहीं मिलतीं। ये विशेषताएँ कविता के बाह्य और आंतरिक रूप से संबधित हैं। यहाँ पहले हम कविता के बाह्य रूप पर विचार करेंगे।

कविता का बाह्य रूप

लय

कविता में **लय प्रधान** होती है। यह लय भाषा के प्रवाह में नियमित उतार-चढ़ाव और विराम के योग से बनती है। लय हमारे जीवन का आंतरिक अंग है। हमारी श्वास-प्रक्रिया और हमारे हृदय की धड़कन अनायास ही हमारे अस्तित्व को लय में बाँधे रहती है। यद्यपि गद्य की भाषा में भी कुछ लय होती है, पर कविता में लय का कुछ इस प्रकार प्रयोग किया जाता है कि पाठक का मन अनायास ही उसके साथ बहता चला जाता है। इसके लिए कवि सही शब्दों का चुनाव करके उन्हें एक विशेष क्रम में सँजोता है। इस संकलन की पहली कविता की पहली पंक्ति यदि गद्य में लिखी जाती तो उसका रूप कुछ इस प्रकार होता :

खेतों में दूर तक (तलक) मखमल की कोमल हरियाली फैली (है)।

किन्तु कविता में इन्हीं शब्दों को इस प्रकार रखा गया है :

फैली खेतों में दूर तलक मखमल की कोमल हरियाली।

इन दोनों पंक्तियों को पढ़ने से कवि द्वारा लय का प्रयोग स्पष्ट उभर आता है। संकलन की दूसरी कविता की पहली पंक्ति के गद्य और कविता में रूप क्रमश: ये हैं :

(गद्य) **चारु चंद्र की चंचल किरणें जल-थल में खेल रही हैं।**

(कविता) **चारु चंद्र की चंचल किरणें खेल रही हैं जल-थल में।**

कवि ने यहाँ **अल-थल पदबंध** को क्रिया के बाद इसलिए रखा है कि कविता के पढ़ने में वांछित लय आ सके जोकि गद्य में नहीं है। **चंद्रमा** के स्थान पर **चंद्र** शब्द रखने का एक कारण यह भी है कि चंद्रमा शब्द से कविता की लय में बाधा पड़ती है।

आजकल अतुकांत कविताएँ भी लिखी जाने लगी हैं जो काफ़ी प्रभावशाली और लोकप्रिय हैं। इन कविताओं की पंक्तियों की लंबाई समान नहीं होती और उनके अंत में तुक नहीं रहती। किन्तु इन अतुकांत कविताओं में भी कवि लय को ध्यान में रखते हैं।

उदाहरण के लिए इस संकलन के प्रथम भाग की 'आः धरती कितना देती है' कविता की ये पंक्तियाँ देखें :

> **मैंने बचपन में छिपकर पैसे बोए थे,**
> **सोचा था, पैसों के प्यारे पेड़ उगेंगे,**
> **रुपयों की कलदार मधुर फसलें खनकेंगी,**
> **और फूल-फलकर मैं मोटा सेठ बनूँगा।**

यद्यपि ये पंक्तियाँ तुकांत नहीं हैं पर इनमें लय स्पष्ट है। किसी पंक्ति के एक भी शब्द को इधर-उधर कर देने से लय में बाधा पड़ेगी और कविता का प्रभाव कम हो जाएगा।

तुक

हिन्दी में कविताएँ प्रायः तुकांत होती रही हैं और इस कारण वे गेय भी थीं। कविता के तुकांत होने से उसे याद कर जनसाधारण तक पहुँचाना आसान होता है। इसी कारण दोहा, चौपाई, सवैया, कवित्त, कुंडलिया आदि छंद जनता में बहुत लोकप्रिय रहे हैं।

पर कविता का तुकांत होना अनिवार्य नहीं है। संस्कृत के श्लोक प्रायः तुकांत नहीं होते और न उर्दू के शेर ही। हिन्दी-साहित्य की पिछली कई शताब्दियों की काव्य रचनाएँ तुकांत हैं, पर आज के युग में अनेक कारणों से अतुकांत कविताएँ लिखने की प्रवृत्ति बढ़ रही है।

छंद

अधिकतर कविताएँ छंद-बद्ध होती हैं। कविता की पंक्तियों की लंबाई के आधार पर उसके छंद का निर्णय होता है। यह लंबाई कविता की पंक्ति के वर्णों या मात्राओं को गिनकर निश्चित की जाती है। संस्कृत के सभी श्लोक किसी न किसी छंद में निबद्ध हैं, मध्ययुग की सारी हिन्दी

कविता विभिन्न छंदों में लिखी गई जिनमें से दोहा, चौपाई, सवैया, कवित्त, सोरठा और कुंडलिया अधिक प्रयुक्त हुए हैं।

आधुनिक हिन्दी कविता का भी एक बड़ा भाग छंद-बद्ध है, पर अब उसमें पुराने छंदों के नियमों का पालन नहीं किया जाता। कवि अपनी आवश्यकता के अनुसार नया छंद बना लेते हैं। इन नए छंदों के नाम भी नहीं हैं, पर इनमें कविता की पंक्तियाँ लंबाई की दृष्टि से नियमबद्ध होती हैं। इस पुस्तक में नए व पुराने छंदों के अनेक उदाहरण मिल सकेंगे।

शब्द-योजना

कविता में शब्दों का चयन बहुत सावधानी और कुशलता से किया जाता है, ताकि थोड़े ही शब्दों में अधिकतम प्रभाव उत्पन्न हो सके। कवि प्राय: ऐसे शब्दों का प्रयोग करते हैं जो अपने पीछे अनेक गूढ़ या व्यंजित होने वाले अर्थ लिए होते हैं। शब्दों के प्रभावशाली प्रयोग से कविता में नाद सौन्दर्य भी उत्पन्न होता है। अनुप्रास, श्लेष, यमक आदि अलंकार का प्रभाव तो विशिष्ट शब्दों के प्रयोग पर ही निर्भर है।

चित्रात्मक भाषा

कविता की भाषा प्राय: चित्रात्मक होती है। कवि शब्दों के द्वारा ऐसे बिम्ब (मानसिक चित्र) हमारे मन में जगाता है जिनसे कविता का भाव बहुत स्पष्ट हो जाता है। जो बात सामान्य शब्दों में बहुत विस्तार से कहनी पड़ती और फिर भी शायद वांछित प्रभाव उत्पन्न न कर सकती, वही बात चित्रात्मक भाषा के प्रयोग से सीधे हमारे हृदय में उतर जाती है। इस संकलन के प्रथम भाग की कुछ चित्रात्मक पंक्तियों के उदाहरण हैं :

— आहुति-सी गिर चढ़ी चिता पर
चमक उठी ज्वाला-सी।

— मृत्यु एक सरिता है जिसमें
श्रम से कातर जीव नहाकर,
फिर नूतन धारण करता है
कायारूपी वस्त्र बहाकर।

बालू के साँपों से अंकित गंगा की सतरंगी रेती।

— लक्ष्मण-रेखा के दास तटों तक ही जाकर फिर जाते हैं।
वर्जित समुद्र में नाव लिए स्वाधीन वीर ही जाते हैं।

— दीप-शिखा है अंधकार की, घनी घटा की उजियाली।
ऊषा है यह कमल-भृंग की, है पतझड़ की हरियाली।

अलंकार

कविता की भाषा प्रायः अलंकारयुक्त होती है। यद्यपि बोलचाल की भाषा में और गद्य की लिखित भाषा में भी अलंकार प्रयुक्त होते हैं, पर कविता को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए कवि अलंकारों के सामान्य प्रयोग से बहुत आगे बढ़कर प्रायः ऐसे प्रयोग करता है जो गद्य में संभव नहीं होते। अनुप्रास, श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, अन्योक्ति, दृष्टांत आदि अलंकार कवियों को अधिक प्रिय हैं।

इस संकलन से अलंकारों के कुछ सुंदर प्रयोगों के उदाहरण हैं :

— चारु चंद्र की चंचल किरणें (अनुप्रास)

— यहीं कहीं पर बिखर गई वह
भग्न विजय-माला-सी (उपमा)

— अरहर सनई की सोने की किंकिणियाँ हैं शोभाशाली (रूपक)

— मानो झूम रहे हैं तरु भी मंद पवन के झोंकों से (उत्प्रेक्षा)

— जो रहीम उत्तम प्रकृति का करि सकत कुसंग।
चंदन विष व्यापत नहीं लिपटे रहत भुजंग॥ (दृष्टांत)

कुशल कवियों की रचनाओं में अलंकार सहज ही आ जाते हैं। वे अलंकारों का प्रयोग करने के लिए कविता नहीं लिखते। बहुत बार बिना किसी विशेष अलंकार के भी कविता बहुत सुंदर हो सकती है। आधुनिक कविता में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा और अतिशयोक्ति को छोड़कर शेष अलंकारों का प्रयोग कम ही होता है।

कविता का आंतरिक तत्त्व

ऊपर लिखी गई सभी बातें कविता के केवल बाहरी पक्ष या शरीर के बारे में हैं। कविता का यह शरीर गद्य के शरीर से भिन्न है। किन्तु केवल इस बाहरी रूप को अपना लेने से ही कोई

रचना कविता नहीं हो जाती, कविता और गद्य का बाहरी रूप तो भिन्न है ही पर उनका वास्तविक अंतर आत्मा की भिन्नता के कारण होता है। गद्य की तुलना में कविता में अनुभूति अधिक तीव्र होती है और पाठकों मे उस अनुभूति को जगाने की अधिक क्षमता होती है। गद्य मुख्यतया हमारे चिन्तन को प्रभावित करता है, जबकि कविता सीधे हमारे हृदय को छूती है।

अनुभूति की तीव्रता

कविता में अनुभूति और भावनाओं की तीव्रता होती है। कवि संवेदनशील प्राणी होता है। अपने जीवन के और संसार के सुख-दुख, सौन्दर्य और आश्चर्य उसे सामान्य जनों की अपेक्षा कहीं अधिक प्रभावित करते हैं। जिस घटना का प्रभाव और लोगों पर साधारण ही होता है, वही कवि को कभी-कभी अंदर से झकझोर डालती है। अपनी अनुभूति की तीव्रता और गहराई को कवि शब्दों के द्वारा अपने पाठकों और श्रोताओं तक पहुँचाना चाहता है। अच्छी कविता वही है जो पाठकों और श्रोताओं के मन में भी कुछ वैसी ही अनुभूति जगा दे, जैसी कवि के मन में कविता लिखने के समय थी।

तर्क, उपदेश और सूचना का प्रभाव

कवि गद्य-लेखक की तरह न तो तर्क देता है, न उपदेश करता है और न ही अपने पाठकों को अपने कथ्य के बारे में कोई नई जानकारी देना चाहता है। यद्यपि नए विषय पर लिखी गई कविता से कुछ जानकारी अवांतर रूप से मिल सकती है, पर वह उसका मुख्य उद्देश्य नहीं है। सुमित्रानंदन पंत द्वारा लिखी गई 'ग्राम-श्री' कविता को हम ग्राम की वनस्पति और पशु-पक्षियों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए नहीं पढ़ते। इसके लिए हमें गद्य में लिखी गई कोई रचना पढ़नी होगी। यह कविता तो हम उस आनंद की अनुभूति के लिए पढ़ते हैं जो कवि को कविता लिखते समय हुई थी। यदि कवि की अनुभूति हमारे अंदर नहीं जागती तो कविता लिखने और पढ़ने का उद्देश्य पूरा हुआ नहीं माना जा सकता।

मर्मस्पर्शी होना

अच्छी कविता सीधे हृदय को छूती है। उसे पढ़ते ही हमें उसके रस की अनुभूति होने लगती है। कवि की बात को समझने के लिए हमें अपने दिमाग पर ज़ोर नहीं डालना पड़ता। उसकी बात की सचाई हमें स्वतः स्पष्ट होती चली जाती है। उसे लेकर न तो कवि हम से बहस करता है और न हम कवि से या औरों से बहस करते हैं। दूसरे शब्दों में कवि की बात सीधे हमारे

अंदर उतर जाती है, उसे हृदय में बैठाने के लिए परिश्रमपूर्वक रास्ता नहीं बनाना पड़ता। जो कवि जितनी सहजता से अपने हृदय की अनुभूति हमारे हृदय में जगा दे, वह उतना ही अच्छा कवि है।

कविता के विषय

इस संकलन में कविताएँ कुछ विषयों के अंतर्गत दी गई हैं। इससे यह लग सकता है कि कुछ सीमित विषयों पर ही कविता लिखी जा सकती है। वास्तव में ऐसा नहीं है। कविता के विषय अनंत हैं। वस्तुत: सारा जीवन ही कविता का विषय है। एक अच्छा कवि मेंढक से लेकर परमात्मा तक किसी भी विषय पर अच्छी कविता लिख सकता है। पर, फिर भी जीवन के कुछ पहलू ऐसे है जो साधारण मनुष्यों के साथ-साथ कवि को भी अधिक प्रभावित करते हैं। इस संकलन में ऐसे ही विषयों के शीर्षकों से कुछ कविताएँ दी गई हैं। कविताओं का वर्गीकरण इन विषयों की दृष्टि से भी आसान नहीं है। अच्छी कविता किसी विषय से नहीं बँधी होती। पर, यहाँ यह विभाजन सुविधा की दृष्टि से किया गया है, ताकि समान विषयों की कई कविताएँ एक साथ पढ़कर उनके भावों को अधिक गहराई से समझा जा सके।

प्रकृति-सौन्दर्य

प्रकृति की सुंदरता बरबस ही हमारा ध्यान अपनी ओर खींच लेती है। सूर्योदय, सूर्यास्त, चाँदनी, उमड़ती घटाएँ, इंद्रधनुष आदि प्राकृतिक दृश्य सभी को आकर्षित करते हैं। कवि इन दृश्यों की सुंदरता पर तो कविताएँ लिखते ही हैं पर प्राय: वे प्रकृति में ऐसा छिपा सौन्दर्य देख लेते हैं जो साधारण मनुष्य की आँखों से ओझल रहता है। गाँव हम सभी ने देखे हैं, पर उनके सादे सौन्दर्य को सजीव रूप से कवि पंत की 'ग्राम-श्री' कविता ही सामने रख सकी है। यही बात 'सतपुड़ा के घने जंगल' के बारे में कही जा सकती है।

बहुत बार कवि न केवल प्रकृति की सुंदरता का वर्णन करते हैं, अपितु प्रकृति के माध्यम से अपने मन की बातें भी साथ-साथ कहते चलते हैं। 'पंचवटी' कविता प्राकृतिक सौन्दर्य के वर्णन और दार्शनिक विचारों के मेल का अच्छा उदाहरण है। भारत में वैदिक काल से प्राकृतिक सौन्दर्य पर कविताएँ लिखी जा रही हैं। संस्कृत में कालिदास तथा अन्य कवियों ने प्रकृति-सौन्दर्य के बहुत सुंदर चित्र खींचे हैं। मध्ययुग में भी हिन्दी कविता में प्रकृति-वर्णन की परंपरा बहुत समृद्ध रही है। आधुनिक हिन्दी कविता में भी प्रकृति वर्णन का विशेष स्थान है, पर इस विषय पर आजकल की कविताएँ केवल प्राकृतिक सौन्दर्य के वर्णन से संतुष्ट नहीं रहतीं। उनमें विचार-तत्व की प्रबलता होती जा रही है।

देश-प्रेम और वीरता

हमारे मन के भावों में उत्साह का प्रमुख स्थान है। यह उत्साह कठिनाइयों का दृढ़ता से सामना करने में और अन्याय व अत्याचार का विरोध करने में प्रकट होता है। उत्साह का यह भाव वीरता को जन्म देता है। यह वीरता यद्यपि छोटी-मोटी बातों को लेकर भी प्रदर्शित की जा सकती है, पर उसका उदात्त रूप वह है जिसमें वीरता के प्रदर्शन द्वारा अधिकाधिक लोगों का कल्याण होता है। इस प्रकार वीरता प्राय: देश-प्रेम से जुड़ जाती है। कभी कवि का वीरभाव किसी वीर पुरुष की प्रशंसा में व्यक्त होता है, कभी किसी युद्ध के सजीव वर्णन में, तो कभी सामान्य जनों को शौर्यपूर्ण जीवन बिताने की प्रेरणा देने में। वीरतापूर्ण कविता को पढ़कर या सुनकर जो अनुभूति हमें होती है उसे वीर रस कह सकते हैं।

भक्ति

जिस ईश्वर या शक्ति ने हमें बनाया है उसकी उपासना की परंपरा संसार की सभी संस्कृतियों में रही है। भारत धर्मप्रधान देश रहा है इसलिए यहाँ भक्ति संबंधी रचनाएँ बहुत अधिक लिखी गई हैं। मध्ययुग में सारे भारत में ही ऐसे अनेक संत हुए हैं जिनकी रचनाओं में भक्ति के मधुर प्रवाह के साथ साहित्यिक सौन्दर्य भी प्रचुर मात्रा में विद्यमान है। हिन्दी में सूरदास, तुलसीदास, जायसी, कबीर, मीरा, रसखान आदि भक्त कवियों के रूप में अधिक प्रसिद्ध हैं। भक्त कवि प्राय: किसी संप्रदाय से संबद्ध होते हैं। मध्ययुग की हिन्दी-कविता में सगुणमार्गी और निर्गुणमार्गी कवियों के दो वर्ग प्रमुख रहे हैं। सगुणमार्गी कवियों का विश्वास था कि ईश्वर पृथ्वी पर अवतार लेकर मनुष्यों के बीच अपनी लीला करता है। वे कवि ईश्वर की लीला का भक्तिभाव से वर्णन करते हैं। निर्गुणमार्गी कवि ईश्वर के निराकार रूप पर अधिक बल देते हैं। पर किसी संप्रदाय से संबंध रखते हुए भी सच्चा भक्त कवि सांप्रदायिकता से ऊपर होता है। उसकी कविता सभी पाठकों और श्रोताओं के मन में समान रूप से ईश्वर के प्रति सच्ची श्रद्धा के भाव जगाती है। आधुनिक हिन्दी कविता में भी भक्ति की कविताएँ लिखी जाती हैं, पर कम।

वात्सल्य

छोटे बच्चों की सरलता, मधुरता, निश्छल हँसी और उनके कौतुक हम सभी का मन मोह लेते हैं। बाल-लीलाओं का वर्णन बहुत-से कवियों ने किया है। सूरदास तो इस क्षेत्र के अद्वितीय कवि हैं। उन्होंने बालक कृष्ण की विविध लीलाओं का बहुत ही सजीव वर्णन किया है। आधुनिक हिन्दी में सुभद्राकुमारी चौहान ने वात्सल्य भाव की सुंदर कविताएँ लिखी हैं।

जीवन-दर्शन

कवि में अनुभूति की प्रधानता होती है। वह अपनी अनुभूति को प्रभावशाली शब्दों के प्रयोग से सीधा पाठक या श्रोता तक पहुँचाना चाहता है, इसलिए वह गद्य-लेखक की तरह तर्क नहीं करता। पर इसका तात्पर्य यह नहीं है कि कवि विचार नहीं करता। वस्तुतः सभी कवियों की रचनाओं में ऊँचे विचारों की अभिव्यक्ति मिलती है। बहुत-सी कविताएँ तो मानव-जीवन की समस्याओं को समझने और समझाने के लिए ही लिखी जाती हैं। इन कविताओं के विचारों के पीछे भी कवि की तीव्र अनुभूति ही विद्यमान होती है। कवि अन्य विचारकों की तरह तर्क नहीं करता, अपितु रूपक, दृष्टांत, अन्योक्ति या अन्य काव्यात्मक प्रयोगों द्वारा अपने विचार प्रभावशाली और रोचक ढंग से प्रस्तुत करता है। इस पुस्तक में इस प्रकार की अनेक कविताएँ 'जीवन-दर्शन' के शीर्षक से संकलित की गई हैं।

हास्य-व्यंग्य

अच्छी चीज या घटना पर हँसना मनुष्य के लिए बड़ा स्वाभाविक है। चुटकले सुनना-सुनाना हम सभी को अच्छा लगता है। कवि बहुत बार मनोरंजन की दृष्टि से ऐसी कविताएँ लिखते हैं जिनका मुख्य उद्देश्य पाठकों और श्रोताओं को गुदगुदाना या हँसाना होता है। पर आम लोगों को हँसानेवाली बातों में और कवि की विनोदपूर्ण कविता में बहुत अंतर होता है। कवि की भाषा सदा संयत होती है और वह प्रायः मीठी चुटकियाँ लेकर अपनी बात कहता है। कवि बहुत बार व्यंग्य का भी प्रयोग करता है जिसका उद्देश्य मनोरंजन के साथ-साथ समाज को सुधारना भी होता है। आधुनिक हिन्दी में इस प्रकार की कविता काफी लिखी जा रही है। मनोरंजन की दृष्टि से लिखी गई इन रचनाओं को साहित्यिक भाषा में हास्य-रस की रचना कहा जाता है।

सौन्दर्य और प्रेम

पुरुष और नारी का पारस्परिक आकर्षण मनुष्य की बहुत गहरी और स्थायी अनुभूतियों में से है। जिस प्रकार कवि अपनी अन्य अनुभूतियों के संबंध में कविता लिखते हैं, उसी प्रकार इस अनुभूति को लेकर भी उन्होंने काव्य-रचना की है। वस्तुतः सभी भाषाओं और सभी युगों के कविता-साहित्य का एक बड़ा भाग इस अनुभूति से प्रेरित है। नायिका या नायक के सौन्दर्य का, उनके मिलन के सुख का और उनके वियोग की वेदना का वर्णन इन कविताओं का मुख्य विषय है। इन कविताओं के पढ़ने से उत्पन्न होने वाली अनुभूति को साहित्य की भाषा में शृंगार रस कहते हैं। शृंगार रस की रचनाएँ आधुनिक हिन्दी-साहित्य में भी काफी मात्रा में लिखी जा रही है।

रहस्यानुभूति

कभी न कभी मनुष्य के मन में यह जानने की इच्छा प्रबल हो उठती है कि आखिर मैं कौन हूँ, यह दुनिया क्या है, मैं यहाँ क्यों आया हूँ, आदि। इस विषय में चिन्तन करता हुआ कवि उस अंतिम सत्ता को खोज निकालना चाहता है जिसके द्वारा संसार का यह चक्र चलाया जा रहा है। कवि को उस शक्ति की झलक कभी अपने अंदर मिलती है तो कभी संपूर्ण प्रकृति में ही उसे उसके दर्शन होते हैं। ऐसी अवस्था में प्रायः कवि उस शक्ति से अपना तादात्म्य अनुभव करता है। इस अनुभूति को सामान्य शब्दों में बाँधना कठिन है। कवि उसे प्रकट करने के लिए प्रायः रूपकों का सहारा लेता है। मध्ययुग में कबीर और आधुनिक युग में जयशंकर प्रसाद, निराला और महादेवी वर्मा अपनी रहस्यवादी रचनाओं के लिए विख्यात है।

(क) प्रकृति-सौन्दर्य

१. ग्राम-श्री

फैली खेतों में दूर तलक मखमल की कोमल हरियाली,
लिपटीं जिससे रवि की किरणें चाँदी की-सी उजली जाली !
तिनकों के हरे-हरे तन पर हिल हरित रुधिर है रहा झलक,
श्यामल भूतल पर झुका हुआ नभ का चिर निर्मल नील फलक !

रोमांचित-सी लगती वसुधा आई जौ-गेहूँ में बाली,
अरहर सनई की सोने की किंकिणियाँ हैं शोभाशाली !
उड़ती भीनी तैलाक्त गंध, फूली सरसों पीली-पीली,
लो, हरित धरा से झाँक रही नीलम की कलि, तीसी नीली !

रँग-रँग के फूलों में रिलमिल हँस रही संखिया मटर खड़ी,
मखमली पेटियों-सी लटकीं छीमियाँ, छिपाए बीज लड़ी !
फिरती है रँग-रँग की तितली रँग-रँग के फूलों पर सुंदर,
फूले फिरते हों फूल स्वयं उड़-उड़ वृंतों से वृंतों पर।

अब रजत-स्वर्ण मंजरियों से लद गई आम्र-तरु की डाली,
झर रहे ढाक, पीपल के दल, हो उठी कोकिला मतवाली !
महके कटहल, मुकुलित जामुन, जंगल में झरबेरी झूली,
फूले आड़ू, नीबू, दाड़िम, आलू, गोभी, बैंगन, मूली !

बगिया के छोटे पेड़ों पर सुंदर लगते छोटे छाजन,
सुंदर गेहूँ की बालों पर मोती के दानों-से हिमकन।
प्रातः ओझल हो जाता जग, भू पर आता ज्यों उतर गगन,
सुंदर लगते फिर कुहरे से उठते-से खेत, बाग, गृह, वन !

बालू के साँपों से अंकित गंगा की सतरंगी रेती,
सुंदर लगती सरपत छाई तट पर तरबूजों की खेती !
अँगुली की कंघी से बगुले कलँगी सँवारते हैं कोई,
तिरते जल में सुरखाब, पुलिन पर मगरौठी रहती सोई !

हँसमुख हरियाली हिम-आतप सुख से अलसाए-से सोए,
भीगी अँधियाली में निशि की तारक स्वप्नों में-से खोए,
मरकत डिब्बे-सा खुला ग्राम जिस पर नीलम नभ आच्छादन—
[illegible] हिमांत में स्निग्ध शांत निज शोभा से हरता जन-मन।

—सुमित्रानंदन पंत

२. पंचवटी

चारु चंद्र की चंचल किरणें
खेल रही हैं जल-थल में,
स्वच्छ चाँदनी बिछी हुई है
अवनि और अंबर-तल में।
पुलक प्रकट करती है धरती
हरित तृणों की नोकों से,
मानो झूम रहे हैं तरु भी
मंद पवन के झोंकों से।

क्या ही स्वच्छ चाँदनी है यह
है क्या ही निस्तब्ध निशा,
है स्वच्छंद-सुमंद गंधवह
निरानंद है कौन दिशा ?
बंद नहीं, अब भी चलते हैं
नियति-नटी के कार्य-कलाप,
पर कितने एकांत भाव से
कितने शांत और चुपचाप।

है बिखेर देती वसुंधरा
मोती, सब के सोने पर,
रवि बटोर लेता है उनको
सदा सबेरा होने पर।
और विरामदायिनी अपनी
संध्या को दे जाता है,
शून्य श्याम तनु जिससे उसका
नया रूप झलकाता है।

सरल तरल जिन तुहिन-कणों से
हँसती हर्षित होती है,
अति आत्मीया प्रकृति हमारे
साथ उन्हीं से रोती है।
अनजानी भूलों पर भी वह
अदय दंड तो देती है,
पर बूढ़ों को भी बच्चों-सा
सदय भाव से सेती है।

गोदावरी नदी का तट यह
ताल दे रहा है अब भी,
चंचल जल कल-कल कर मानो
तान ले रहा है अब भी।
नाच रहे हैं अब भी पत्ते
मन-से सुमन महकते हैं,
चंद्र और नक्षत्र ललककर
लालच-भरे लहकते हैं।

आँखों के आगे हरियाली
रहती है हर घड़ी यहाँ,
जहाँ-तहाँ झाड़ी में झिरती
है झरनों की झड़ी यहाँ।
वन की एक-एक हिमकणिका
जैसी सरस और शुचि है,
क्या सौ-सौ नागरिक जनों की
वैसी विमल रम्य रुचि है?

—मैथिलीशरण गुप्त

३. सतपुड़ा के घने जंगल

सतपुड़ा के घने जंगल।
नींद में डूबे हुए-से
ऊँघते अनमने जंगल।

झाड़ ऊँचे और नीचे,
चुप खड़े हैं आँख मीचे,
घास चुप है, कास चुप है
मूक शाल, पलाश चुप है।
बन सके तो धँसो इनमें,
धँस न पाती हवा जिनमें
सतपुड़ा के घने जंगल,
ऊँघते अनमने जंगल।

सड़े पत्ते, गले पत्ते,
हरे पत्ते, जले पत्ते,
वन्य पथ को ढँक रहे-से
पंक-दल में पले पत्ते।
चलो इन पर चल सको तो,
दलो इनको दल सको तो,
ये घिनौने घने जंगल
ऊँघते अनमने जंगल।
अटपटी-उलझी लताएँ,
डालियों को खींच खाएँ,
पैर को पकड़ें अचानक,
प्राण को कस लें कपाएँ,

बला की काली लताएँ
लताओं के बने जंगल
ऊँघते अनमने जंगल।
मकड़ियों के जाल मुँह पर,
और सिर के बाल मुँह पर,
मच्छरों के दंश वाले,
दाग काले-लाल मुँह पर,
वात-झंझा वहन करते,
चलो इतना सहन करते,
कष्ट से ये सने जंगल,
ऊँघते अनमने जंगल।

अजगरों से भरे जंगल।
अगम, गति से परे जंगल
सात-सात पहाड़ वाले,
बड़े-छोटे झाड़ वाले,
शेर वाले, बाघ वाले,
गरज और दहाड़ वाले,
कंप से कनकने जंगल,
ऊँघते अनमने जंगल।

इन वनों के खूब भीतर,
चार मुर्गे, चार तीतर
पाल कर निश्चिन्त बैठे,

विजनवन के बीच बैठे
झोपड़ी पर फूस डाले
गोंड तगड़े और काले,

जब कि होली पास आती,
सरसराती घास गाती,
और महुए से लपकती
मत्त करती बास आती,
गूँज उठते ढोल इनके,
गीत इनके गोल इनके
सतपुड़ा के घने जंगल
ऊँघते अनमने जंगल।

जागते अँगड़ाइयों में,
खोह-खड्डों, खाइओं में,
घास पागल, कास पागल,
शाल और पलाश पागल,
लता पागल, वात पागल,
डाल पागल, पात पागल,
मत्त मुर्गे और तीतर,
इन वनों के खूब भीतर,
क्षितिज तक फैला हुआ-सा
मृत्यु तक मैला हुआ-सा
क्षुब्ध, काली लहर वाला

मथित, उत्थित जहर वाला,
मेरु वाला, शेष वाला,
शंभु और सुरेश वाला
एक सागर जानते हो,
उसे कैसा मानते हो?
ठीक वैसे घने जंगल,
ऊँघते अनमने जंगल,
धँसो इनमें डर नहीं है,
मौत का यह घर नहीं है,

उतर कर बहते अनेकों, कल-कथा कहते अनेकों,
नदी, निर्झर और नाले, इन वनों ने गोद पाले।
लाख पंछी सौ हिरन-दल, चाँद के कितने किरन-दल,
झूमते बन-फूल, फलियाँ, खिल रहीं अज्ञात कलियाँ
हरित दूर्वा, रक्त किसलय, पूत, पावन, पूर्ण रसमय
सतपुड़ा के घने जंगल, लताओं के बने जंगल।

—भवानीप्रसाद मिश्र

४. साँझ के बादल

ये अनजान नदी की नावें
जादू के-से पाल
उड़ाती
आतीं
मंथर चाल।
नीलम पर किरनों
की साँझी
एक न डोरी
एक न माँझी,
फिर भी लाद निरंतर लातीं
सेंदुर और प्रवाल !

कुछ समीप की
कुछ सुदूर की
कुछ चंदन की
कुछ कपूर की,
कुछ में गेरू कुछ में रेशम
कुछ में केवल जाल।

ये अनजान नदी की नावें
जादू के-से पाल
उड़ाती
आतीं
मंथर चाल.........

—धर्मवीर भारती

५. शरद-वर्णन

बरषा बिगत सरद रितु आई। लछिमन देखहु परम सुहाई।
फूले कास सकल महि छाई। जनु बरषा कृत प्रगट बुढ़ाई।
उदित अगस्त पंथ जल सोखा। जिमि लोभहि सोखइ संतोषा।
सरिता सर निर्मल जल सोहा। संत हृदय जस गत मद मोहा।
रस रस सूख सरित सर पानी। ममता त्याग करहिं जिमि ज्ञानी।
जानि सरद रितु खंजन आए। पाइ समय जिमि सुकृत सुहाए।
पंक न रेनु सोह असि धरनी। नीति निपुन नृप कै जसि करनी।
जल संकोच बिकल भइँ मीना। अबुध कुटुंबी जिमि धनहीना।
बिनु घन निर्मल सोह अकासा। हरिजन इव परिहरि सब आसा।
कहुँ कहुँ बृष्टि सारदी थोरी। कोउ कोउ पाव भगति जिमि मोरी।

दोहा — चले हरषि तजि नगर नृप तापस बनिक भिखारि।
जिमि हरि भगति पाइ स्रम तजहिं आस्रमी चारि।

सुखी मीन जे नीर अगाधा। जिमि हरि सरन न एकौ बाधा।
फूले कमल सोह सर कैसा। निर्गुन ब्रह्म सगुन भएँ जैसा।
गुंजत मधुकर मुखर अनूपा। सुंदर खग रव नाना रूपा।
चक्रबाक मन दुख निसि पेखी। जिमि दुर्जन पर संपति देखी।
चातक रटत तृषा अति ओही। जिमि सुख लहइ न संकर द्रोही।
सरदातप निसि ससि अपहरई। संत दरस जिमि पातक टरई।
देखि इंदु चकोर समुदाई। चितवहिं जिमि हरिजन हरि पाई।

दोहा — भूमि जीव संकुल रहे गए सरद रितु पाइ।
सदगुर मिले जाहिं जिमि संसय भ्रम समुदाइ।

—गोस्वामी तुलसीदास

प्रश्नावली

१. ग्राम-श्री

१. इस कविता में निम्नलिखित कथनों का सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए :

— मखमल की कोमल हरियाली
— चाँदी की-सी उजली जाली
— रोमांचित-सी लगती वसुधा
— मोती के दानों-से हिमकन
— बालू के साँपों से अंकित गंगा की सतरंगी रेती
— मरकत डिब्बे-सा खुला ग्राम

२. कवि ने अरहर और सनई की फलियों को 'सोने की किंकिणियाँ' क्यों कहा है ?

३. इस कविता की किन पंक्तियों से उभरने वाला बिम्ब आपको सबसे अधिक अच्छा लगता है ? क्यों ?

४. इस कविता के अनुसार तथा अपने अनुभव के आधार पर ग्राम के सौन्दर्य का वर्णन कीजिए।

५. इस कविता में उपमा अलंकार का प्रयोग कहाँ-कहाँ हुआ है ? उन स्थलों के उपमेय और उपमान चुनिए।

२. पंचवटी

१. इस कविता में प्रकृति के किन-किन रूपों का वर्णन हुआ है ? आपकी दृष्टि से सबसे सुंदर वर्णन कौन-सा है ? उपयुक्त पंक्तियाँ उद्धृत करते हुए उत्तर दीजिए।

२. इस कविता में **मानो** कहकर क्या-क्या बातें कही गई हैं ? ऐसा वर्णन कवि ने किस उद्देश्य से किया है ? **मानो** से प्रारंभ होने वाले कथनों में कौन-सा अलंकार होता है ?

३. कवि ने किरणों के सौन्दर्य वर्णन में कौन-सी युक्ति अपनाई है ?

४. कविता में चित्रित चांदनी रात की शोभा का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

५. नीचे लिखी पंक्तियों की व्याख्या कीजिए :

(क) पुलक प्रकट················झोंकों से ।

(ख) है बिखेर··················झलकाता है ।

३. सतपुड़ा के घने जंगल

१. कवि ने सतपुड़ा के जंगलों को 'नींद में डूबे हुए-से' और 'ऊँघते अनमने' क्यों कहा है ?

२. कवि 'धँसो इनमें डर नहीं है' क्यों कहता है ?

३. इस कविता में कवि ने लता के संबंध में क्या-क्या बातें कही हैं और किस उद्देश्य से ?

४. वसंत ऋतु में सतपुड़ा के जंगल में क्या परिवर्तन हो जाता है ?

५. इस कविता की भाषा एवं लय के बारे में टिप्पणी कीजिए ।

४. साँझ के बादल

१. इस कविता में किस ऋतु के बादलों का वर्णन है ? किन विशेषताओं के कारण कवि ने बादलों को नावों का और आकाश को नदी का रूपक दिया है ?

२. सांध्यकालीन किरणें किस प्रकार नीले आकाश में विभिन्न रंगों से अल्पना का निर्माण करती हैं ?

३. इस कविता में बादलों और नावों में समानता और असमानता दोनों का ही सुंदर वर्णन है । कविता से उद्धरण देते हुए इस समानता और असमानता को स्पष्ट कीजिए ।

४. इस कविता से उन स्थलों को चुनिए जिनका संबंध क्रमशः दृष्टि, गंध और स्पर्श से है ।

५. वर्षाकालीन संध्या के सौन्दर्य का वर्णन इस कविता के आधार पर कीजिए ।

५. शरद-वर्णन

१. इस कविता के आधार पर शरद ऋतु के सौन्दर्य का वर्णन कीजिए ।

२. इस कविता में दी गई सीखों को अपने शब्दों में लिखिए ।

३. कविता की किन पंक्तियों में निम्नलिखित भाव व्यक्त हुए हैं ?

(क) संतों के दर्शन से पाप दूर होते हैं ।

(ख) ज्ञानियों के हृदय में ममता नहीं होती ।

(ग) लोभ से संतोष नष्ट हो जाता है।

(घ) दुर्जन लोग पराए धन को देखकर दुखी होते हैं।

(ङ) सुकर्म समय पाकर ही फलीभूत होते हैं।

(च) सच्चा गुरु हृदय की शंकाओं का निवारण करता है।

४. इस कविता की शैली की क्या विशेषता है ?

५. निम्नलिखित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए :

(क) फूले कास सकल महि छाई। जनु बरषा कृत प्रगट बुढ़ाई।

(ख) फूले कमल सोह सर कैसा। निर्गुन ब्रह्म सगुन भएँ जैसा।

सामान्य प्रश्न

१. कवियों का ध्यान अधिकतर प्रकृति की किन वस्तुओं की ओर जाता है ? इस खंड की कविताओं में से उन प्राकृतिक वस्तुओं का चयन कीजिए जिनका वर्णन एक से अधिक कविता में हुआ है (उदाहरणार्थ चंद्रमा)।

२. कवि प्राय: प्राकृतिक वस्तुओं पर मानवीय भावनाओं और कार्यों का आरोप करते हैं। इस खंड की कविताओं से दो ऐसे स्थल चुनिए जहाँ इस प्रकार का मानवीकरण किया गया हो।

३. बताइए इस खंड की कविताओं के अनुसार नीचे लिखे विशेषणों में से कौन-कौन-से प्रकृति के लिए प्रयुक्त किए जा सकते हैं ? प्रत्येक विशेषण के लिए कविताओं में से उपयुक्त स्थल का संकेत कीजिए—

शांत, भयंकर, आनंददायक, सुंदर, क्रोधी, प्रसन्न, आत्मीय, निर्मम, सुरुचिपूर्ण, कोमल, संतापकारी, रहस्यपूर्ण, पोषक, प्रेमी, संहारक, स्वच्छ।

४. आपको इन पाँचों कविताओं में से सबसे अच्छी कौन-सी लगी ? कारण सहित उत्तर दीजिए।

५. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर कविता की कुछ पंक्तियाँ बनाकर कक्षा में सुनाइए

वर्षा, बसंत, पक्षी, नदी, सूर्यास्त।

टिप्पणियाँ

१. ग्राम-श्री

१. **सनई······किंकिणियाँ** — सनई की फलियाँ पक और सूख जाने पर हिलने पर बज उठती हैं। गाँव के बच्चे उनके आभूषण बनाकर खेलते है।

२. **तीसी** — अलसी, तिलहन की एक किस्म, जिस पर नीले रंग के छोटे-छोटे फूल लगते हैं।

३. **संखिया मटर** — मटर की एक किस्म जिसके पत्ते अधिक सुकोमल और फूल रंगीन होते है।

४. **छाजन** — पाले से पौधों की रक्षा करने के लिए फूस का वना आच्छादन।

५. **सरपत** — लम्बी-लम्बी तेज धार वाली घास, सरकंडा, मूंज आदि।

६. **सुरखाब** — चक्रवाक अथवा चकवा, जाड़े के दिनों में नदी-तालाबों के किनारे इनके झुंड दिखाई देते हैं।

७. **मगरौठी** — मुर्गाबी, एक जल-पक्षी।

२. सतपुड़ा के घने जंगल

१. **कनकने** — जानदार, प्राणवान (स्थानीय प्रयोग)

२. **गोंड** — काले रंग एवं छोटे कद की एक भारतीय आदिम जाति जिसका प्रमुख निवास वर्तमान मध्य प्रदेश में है।

३. **एक सागर जानते हो** — देवता और उनके राजा इंद्र ने दैत्यों के साथ मिलकर सागर-मंथन किया था। मथते-मथते सब से पहले विष निकला था जिससे सारा समुद्र काला पड़ गया था। सतपुड़ा का जंगल इसी तरह के समुद्र के समान लगता है। इस विष की आग से जब सब जलने लगे तो शिव ने इसका घूंट भर लिया और गले में रोक लिया।

३. साँझ के बादल

(इस कविता में संध्या के रंग-बिरंगे बादलों का नावों के रूपक के द्वारा सुंदर वर्णन है। कवि को वे बादल आकाश में तैरती हुई नौकाओं के समान लगते हैं)।

साँझी — मंदिर में देव-मूर्ति के सामने की गई फूलों की सजावट। यह सजावट ऐसी होती है मानो चौक पूर दिया गया हो।

प्रवाल — मूँगे की एक किस्म

४. शरद-वर्णन

(ये चौपाइयाँ 'रामचरित मानस' के 'किष्किंधा काण्ड' से ली गई हैं। बालि-वध के पश्चात् सुग्रीव को राज्य देकर रामचंद्र जी वर्षा का समय व्यतीत करने के लिए 'प्रवर्षण' नाम के एक पर्वत पर रहने लगे। वर्षा बीत जाने पर शरद ऋतु आ गई। रामचंद्र जी ने इस शरद ऋतु का वर्णन लक्ष्मण के सम्मुख किया है।)

शरद-ऋतु — छह ऋतुओं में से एक जो आश्विन-कार्तिक महीनों में पड़ती है।

कास — एक प्रकार की घास, जिसका फूल सफेद होता है और उसमें से सींकें निकलती हैं।

अगस्त — एक तारा जो वर्षा ऋतु समाप्त हो जाने पर शरद ऋतु में निकलता है।

रस-रस — धीरे-धीरे।

आश्रमी — आश्रमी, (मनुष्य का जीवन चार आश्रमों में बाँटा गया है: ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास)।

चक्रवाक — चकवा-चकवी, इनके संबंध में काव्य में यह प्रसिद्ध है कि चकवा-चकवी रात में अलग-अलग रहते हैं—एक नदी के एक किनारे पर तो दूसरा दूसरे किनारे पर।

चातक— — पपीहा, काव्य में यह अनन्य प्रेम का प्रतीक माना गया है, क्योंकि प्रसिद्धि यह है कि यह केवल स्वाति-नक्षत्र का ही जल पीता है।

चकोर — तीतर के जैसा एक पक्षी जिसके विषय में यह प्रसिद्धि है कि वह चंद्रमा की ओर टकटकी लगाए देखता है और अंगार को भी चंद्रमा का एक खंड समझ कर खा जाता है।

(ख) देश-प्रेम और वीरता

१. स्वतंत्रता का दीपक

घोर अंधकार हो, चल रही बयार हो,
आज द्वार-द्वार पर यह दिया बुझे नहीं।
यह निशीथ का दिया ला रहा विहान है।

—१—

शक्ति का दिया हुआ, शक्ति को दिया हुआ,
भक्ति से दिया हुआ, यह स्वतंत्रता-दिया,
रुक रही न नाव हो, ज़ोर का बहाव हो,
आज गंग-धार पर यह दिया बुझे नहीं !
यह स्वदेश का दिया प्राण के समान है !

—२—

यह अतीत कल्पना, यह विनीत प्रार्थना,
यह पुनीत भावना, यह अनंत साधना,
शांति हो, अशांति हो, युद्ध, संधि, क्रांति हो,
तीर पर, कछार पर, यह दिया बुझे नहीं।
देश पर, समाज पर, ज्योति का वितान है।

—३—

तीन-चार फूल हैं, आस-पास धूल है,
बाँस हैं, बबूल हैं, घास के दुकूल हैं,
वायु भी हिलोर दे, फूँक दे, झकोर दे,
कब्र पर, मजार पर, यह दिया बुझे नहीं !
यह किसी शहीद का पुण्य प्राण-दान है !

—४—

झूम-झूम बदलियाँ, चूम-चूम बिजलियाँ
आँधियाँ उठा रहीं, हलचलें मचा रहीं !
लड़ रहा स्वदेश हो, शांति का न लेश हो
क्षुद्र जीत-हार पर, यह दिया बुझे नहीं !
यह स्वतंत्र भावना का स्वतंत्र गान है ।

—गोपालसिंह नेपाली

२. झाँसी की रानी की समाधि

इस समाधि में छिपी हुई है,
एक राख की ढेरी।
जल कर जिसने स्वतंत्रता की,
दिव्य आरती फेरी॥
यह समाधि, यह लघु समाधि है,
झाँसी की रानी की।
अंतिम लीलास्थली यही है,
लक्ष्मी मरदानी की॥
यहीं कहीं पर बिखर गई वह,
भग्न विजय-माला-सी।
उसके फूल यहाँ संचित हैं,
है यह स्मृति-शाला-सी॥
सहे वार पर वार अंत तक,
लड़ी वीर बाला-सी।
आहुति-सी गिर चढ़ी चिता पर,
चमक उठी ज्वाला-सी॥
बढ़ जाता है मान वीर का,
रण में बलि होने से।
मूल्यवती होती सोने की,
भस्म यथा सोने से॥

रानी से भी अधिक हमें अब,
यह समाधि है प्यारी।
यहाँ निहित है स्वतंत्रता की,
आशा की चिनगारी ॥
इससे भी सुंदर समाधियाँ,
हम जग में हैं पाते।
उनकी गाथा पर निशीथ में,
क्षुद्र जंतु ही गाते ॥
पर कवियों की अमर गिरा में,
इसकी अमिट कहानी।
स्नेह और श्रद्धा से गाती
है वीरों की बानी ॥
बुंदेले हरबोलों के मुख,
हमने सुनी कहानी।
खूब लड़ी मरदानी वह थी,
झाँसी वाली रानी ॥

यह समाधि यह चिर समाधि,
है झाँसी की रानी की।
अंतिम लीलास्थली यही है,
लक्ष्मी मरदानी की ॥

—सुभद्राकुमारी चौहान

३. स्वदेश-प्रेम

अतुलनीय जिनके प्रताप का,
साक्षी है प्रत्यक्ष दिवाकर।
घूम-घूम कर देख चुका है,
जिनकी निर्मल कीर्ति निशाकर।
देख चुके हैं जिनका वैभव,
ये नभ के अनंत तारागण।
अगणित बार सुन चुका है नभ,
जिनका विजय-घोष रण-गर्जन।
शोभित है सर्वोच्च मुकुट से,
जिनके दिव्य देश का मस्तक।
गूँज रही हैं सकल दिशाएँ,
जिनके जय गीतों से अब तक।
जिनकी महिमा का है अविरल,
साक्षी सत्य-रूप हिमगिरिवर।
उतरा करते थे विमान-दल,
जिसके विस्तृत वक्ष-स्थल पर।
सागर निज छाती पर जिनके,
अगणित अर्णव-पोत उठाकर।
पहुँचाया करता था प्रमुदित,
भूमंडल के सकल तटों पर।

नदियाँ जिनकी यश-धारा-सी,
बहती हैं अब भी निशि-वासर।
ढूँढो, उनके चरण-चिह्न भी,
पाओगे तुम इनके तट पर।
विषुवत्-रेखा का वासी जो,
जीता है नित हाँफ-हाँफ कर।
रखता है अनुराग अलौकिक,
वह भी अपनी मातृ-भूमि पर।
ध्रुव-वासी, जो हिम में तम में,
जी लेता है काँप-काँप कर।
वह भी अपनी मात-भूमि पर,
कर देता है प्राण निछावर।
तुम तो, हे प्रिय बंधु, स्वर्ग सी,
सुखद, सकल विभवों की आकर।
धरा-शिरोमणि मातृ-भूमि में,
धन्य हुए हो जीवन पाकर।
तुम जिसका जल-अन्न ग्रहण कर,
बड़े हुए लेकर जिसकी रज।
तन रहते कैसे तज दोगे,
उसको, हे वीरों के वंशज।
जब तक साथ एक भी दम हो,
हो अवशिष्ट एक भी धड़कन।
रखो आत्म-गौरव से ऊँची,
पलकें, ऊँचा सिर, ऊँचा मन।

एक बूँद भी रक्त शेष हो,
जब तक तन में है शत्रुंजय।
दीन वचन मुख से न उचारो,
मानो नहीं मृत्यु का भी भय।
निर्भय स्वागत करो मृत्यु का,
मृत्यु एक है विश्राम-स्थल।
जीव जहाँ से फिर चलता है,
धारण कर नव जीवन-संबल।
मृत्यु एक सरिता है, जिसमें,
श्रम से कातर जीव नहाकर।
फिर नूतन धारण करता है,
काया-रूपी वस्त्र बहाकर।
सच्चा प्रेम वही है जिसकी
तृप्ति आत्म-बलि पर हो निर्भर।
त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है,
करो प्रेम पर प्राण निछावर।
देश-प्रेम वह पुण्य क्षेत्र है,
अमल असीम त्याग से विलसित।
आत्मा के विकास से जिसमें,
मनुष्यता होती है विकसित।

—रामनरेश त्रिपाठी

४. कायर मत बन

कुछ भी बन, बस कायर मत बन !
ठोकर मार, पटक मत माथा,
तेरी राह रोकते पाहन !
कुछ भी बन, बस कायर मत बन !

ले-दे कर जीना, क्या जीना ?
कब तक गम के आँसू पीना ?
मानवता ने सींचा तुझको
बहा युगों तक खून-पसीना !
कुछ न करेगा ? किया करेगा—
रे मनुष्य—बस कातर क्रंदन ?
कुछ भी बन, बस कायर मत बन !

'युद्धं देहि' कहे जब पामर,
दे न दुहाई पीठ फेर कर !
या तो जीत प्रीति के बल पर,
या तेरा पथ चूमे तस्कर !
प्रतिहिंसा भी दुर्बलता है,
पर कायरता अधिक अपावन !
कुछ भी बन, बस कायर मत बन

तेरी रक्षा का न मोल है,
पर तेरा मानव अमोल है !
यह मिटता है, वह बनता है,
यही सत्य की सही तोल है !

अर्पण कर सर्वस्व मनुज को,
कर न दुष्ट को आत्म-समर्पण।
कुछ भी बन, बस कायर मत बन !

—नरेन्द्र शर्मा

५. रोटी और स्वाधीनता

स्वातंत्र्य गर्व उनका, जो नर फाकों में प्राण गँवाते हैं,
पर, नहीं बेच मन का प्रकाश रोटी का मोल चुकाते हैं।
स्वातंत्र्य गर्व उनका, जिनपर संकट की घात न चलती है,
तूफानों में जिनकी मशाल कुछ और तेज़ हो जलती है।

स्वातंत्र्य उमंगों की तरंग, नर में गौरव की ज्वाला है,
स्वातंत्र्य रूह की ग्रीवा में अनमोल विजय की माला है।
स्वातंत्र्य भाव नर का अदम्य, वह जो चाहे कर सकता है,
शासन की कौन बिसात, पाँव विधि की लिपि पर धर सकता है।

ज़िन्दगी वहीं तक नहीं, ध्वजा जिस जगह विगत युग ने गाड़ी,
मालूम किसी को नहीं अनागत नर की दुविधाएँ सारी।
'सारा जीवन नप चुका,' कहे जो, वह दासता-प्रचारक है,
नर के विवेक का शत्रु, मनुज की मेधा का संहारक है।

जो कहे, सोच मत स्वयं, बात जो कहूँ, मानता चल उसको,
नर की स्वतंत्रता की मणि का तू कह अराति प्रबल उसको।
नर के स्वतंत्र चिन्तन से जो डरता, कदर्य, अविचारी है,
बेड़ियाँ बुद्धि को जो देता, जुल्मी है, अत्याचारी है।

लक्ष्मण-रेखा के दास तटों तक ही जाकर फिर जाते हैं,
वर्जित समुद्र में नाव लिए स्वाधीन वीर ही जाते हैं।
आज़ादी है अधिकार खोज की नई राह पर आने का,
आज़ादी है अधिकार नए द्वीपों का पता लगाने का।

रोटी उसकी, जिसका अनाज, जिसकी ज़मीन, जिसका श्रम है,
अब कौन उलट सकता स्वतंत्रता का सुसिद्ध, सीधा क्रम है।
आज़ादी है अधिकार परिश्रम का पुनीत फल पाने का,
आज़ादी है अधिकार शोषणों की धज्जियाँ उड़ाने का।

गौरव की भाषा नई सीख, भिखमंगों की आवाज़ बदल,
सिमटी बाँहों को खोल गरुड़, उड़ने का अब अंदाज़ बदल।
स्वाधीन मनुज की इच्छा के आगे पहाड़ हिल सकते हैं,
रोटी क्या? ये अंबरवाले सारे सिंगार मिल सकते हैं।

—रामधारी सिंह 'दिनकर

प्रश्नावली

१. स्वतंत्रता का दीपक

१. स्वतंत्रता को कवि ने दीपक की संज्ञा क्यों दी है ?

२. कवि स्वतंत्रता के दीपक को किन-किन परिस्थितियों में भी जलाए रखने की प्रेरणा देता है ?

३. इस कविता में निम्नलिखित शब्द किनकी ओर संकेत करते हैं—

— अंधकार, निशीथ, विहान, बिजलियाँ, आँधियाँ।

४. इस कविता की पंक्तियों के अंत के अलावा और कहाँ तुक का प्रयोग हुआ है ? इससे कविता के प्रवाह में क्या विशेषता आ गई है ?

५. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए :

(क) यह निशीथ का दिया ला रहा विहान है।

(ख) शक्ति का दिया हुआ, शक्ति को दिया हुआ।

(ग) यह अतीत कल्पना, यह विनीत प्रार्थना
यह पुनीत भावना, यह अनंत साधना।

(घ) यह किसी शहीद का पुण्य प्राण-दान है।

(ङ) क्षुद्र जीत-हार पर यह दिया बुझे नहीं।

६. इस कविता का प्रयाण-गीत के रूप में अभ्यास कीजिए।

२. झाँसी की रानी की समाधि

१. कवयित्री ने यह कविता किस उद्देश्य से लिखी है ?

२. इस कविता से झाँसी की रानी की किन विशेषताओं पर प्रकाश पड़ता है ?

३. निम्नलिखित प्रयोगों का सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए :

भग्न विजय-माला-सी, आहुति-सी गिर चढ़ी, स्वतंत्रता की दिव्य आरती, आशा की चिनगारी।

४. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए :

(क) बढ़ जाता है मान वीर का रण में बलि होने से।

(ख) रानी से भी अधिक हमें अब यह समाधि है प्यारी।

३. स्वदेश-प्रेम

१. कवि ने सूर्य, चंद्रमा, तारों और आकाश को प्राचीन भारत की किन-किन विशेषताओं का साक्षी बताया है ? क्यों ?

२. कवि ने हमारे पूर्वजों की विशेषताओं का वर्णन किस उद्देश्य से किया है ?

३. मातृभूमि के प्रति मनुष्य में स्वाभाविक प्रेम होता है, इसके समर्थन में कवि ने क्या-क्या कहा है ?

४. भारत में जन्म लेनेवालों को कवि ने धन्य क्यों माना है ?

५. नीचे लिखी पंक्तियों की व्याख्या कीजिए। साथ ही 'गीता' के उस श्लोक को जानिए जिस पर ये पंक्तियाँ आधृत हैं—

मृत्यु एक सरिता है·········वस्त्र बहाकर।

४. कायर मत बन

१. 'तेरी राह रोकते पाहन' पंक्ति में प्रयुक्त 'पाहन' शब्द किस अर्थ का द्योतक है ?

२. 'युद्धं देहि' की चुनौती मिलने पर हमारा क्या कर्तव्य होना चाहिए ?

३. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए :

(क) मानवता ने सींचा·····खून पसीना।

(ख) प्रतिहिंसा भी ····अधिक अपावन।

(ग) अर्पण कर·····आत्म-समर्पण।

४. इस कविता के संदेश को अपने शब्दों में लिखिए।

५. रोटी और स्वाधीनता

१. कवि के अनुसार स्वतंत्रता का सच्चा स्वरूप क्या है ? ऐसी स्वतंत्रता में रोटी का क्या स्थान है।

२. स्वतंत्रता पर कैसे लोग गर्व कर सकते हैं ?

३. कवि ने किन व्यक्तियों को दासता का प्रचारक कहा है ? उनके लिए और कौन-कौन-से विशेषणों का प्रयोग किया गया है ?

४. निम्नलिखित प्रयोगों को स्पष्ट कीजिए :
विधि की लिपि, लक्ष्मण रेखा के दास, अंबर वाले सिंगार।

५. निम्नलिखित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए :

(क) नर के स्वतंत्र चिंतन·········अत्याचारी है।

(ख) गौरव की भाषा·········उड़ने का अब अंदाज बदल।

सामान्य प्रश्न

१. इस खंड की कविताओं में से आपको सबसे अधिक ओजस्वी कविता कौन-सी लगी ? क्यों ?

२. स्वतंत्रता पर मर मिटने की भावना इन कविताओं में कहाँ-कहाँ वर्णित हुई है ?

३. इन कविताओं से उपयुक्त पंक्तियाँ उद्धृत करते हुए स्वतंत्रता, वीरता और स्वदेश-प्रेम का संबंध स्पष्ट कीजिए।

४. इन कविताओं के आधार पर 'स्वतंत्रता' शीर्षक से कविता की कुछ पंक्तियाँ लिखिए।

५. देश-प्रेम और वीरता संबंधी अन्य किन-किन कवियों की कविताएँ आपने पढ़ी हैं ? उनकी कुछ रचनाएँ कक्षा में सुनाइए।

६. इस खंड की कविताओं से अनुप्रास और उपमा अलंकारों के कुछ उदाहरण दीजिए।

टिप्पणियाँ

१. स्वतंत्रता का दीपक

(इस कविता में स्वतंत्रता को दीपक का रूपक दिया गया है। इस स्वतंत्रता की ज्योति को हम तब भी जलाए हुए थे जब गुलामी का अंधकार अपनी चरम सीमा पर था।)

१. **यह निशीथ······विहान है** — यह निशीथ अर्थात आधी रात के समय इस दीपक की ज्योति जली थी। (१५ अगस्त, १९४७ की आधी रात को स्वतंत्रता मिली थी)।

२. शक्ति का दिया हुआ — शक्ति से प्राप्त ।

३. शक्ति को दिया हुआ — सशक्त हाथों में दिया गया ।

४. शहीद का प्राण-दान — स्वतंत्रता की प्राप्ति शहीदों के प्राणदान का फल है। इस तीसरे पद में शहीद की समाधि का चित्रण हुआ है ।

५. क्षुद्र जीत-हार — आपसी प्रतिस्पर्धा ।

३. स्वदेश-प्रेम

१. फिर नूतन धारण ...वस्त्र बहाकर — इन पंक्तियों की प्रेरणा गीता के निम्नलिखित श्लोक से मिली है—

'वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि संयाति नवानि देही ।

४. कायर मत बन

१. 'युद्धं देहि' — युद्ध की माँग—महाभारत का युद्ध प्रारंभ होने के पहले पांडवों की ओर से संधि का प्रस्ताव ले कर कृष्ण दुर्योधन के पास गए थे। दुर्योधन ने संधि-प्रस्ताव को अस्वीकृत करते हुए युद्ध की माँग की थी ।

२. तस्कर — चोर, दुष्ट ।

३. यह मिटता है, वह बनता है — मृत्यु का भय निकाल देने पर ही मनुष्यत्व की रक्षा हो सकती है ।

(ग) वात्सल्य

१. बालिका का परिचय

यह मेरी गोदी की शोभा
सुख सुहाग की है लाली।
शाही शान भिखारिन की है
मनोकामना मतवाली।।

दीप-शिखा है अंधकार की
बनी घटा की उजियाली।
ऊषा है यह कमल-भृंग की
है पतझड़ की हरियाली।।

सुधा-धार यह नीरस दिल की।
मस्ती मगन तपस्वी की।
जीवन-ज्योति नष्ट नयनों क
सच्ची लगन मनस्वी न

बीते हुए बालपन की यह
क्रीड़ापूर्ण वाटिका है।
वही मचलना वही किलकना
हँसती हुई नाटिका है।।

मेरा मंदिर
काबा-काशी यह मेरी।
पूजा-पाठ, ध्यान-जप-तप है
घट-घट-वासी यह मेरी॥

कृष्णचंद्र की क्रीड़ाओं को
अपने आँगन में देखो।
कौशल्या के मातृमोद को
अपने ही मन में लेखो॥

प्रभु ईसा की क्षमाशीलता
नबी मुहम्मद का विश्वास।
जीव दया जिनवर गौतम की
आओ देखो इसके पास॥

परिचय पूछ रहे हो मुझसे
कैसे परिचय दूँ इसका।
वही जान सकता है इसको,
माता का दिल है जिसका॥

—सुभद्राकुमारी चौहान

२. बाललीला के पद

चंद्र खिलौना लैहों मैया मेरी, चंद्र खिलौना लैहों।
धौरी को पय पान न करिहौं, बैनी सिर न गुथैहौं।
मोतिन माल न धरिहौं उर पर, झँगुली कंठ न लैहौं।
जैहौं लोट अभी धरनी पर, तेरी गोद न ऐहौं
लाल कहैहौं नँद बाबा को, तेरो सुत न कहैहौं।
कान लाय कछु कहत जसोदा दाउहिं नाहिं सुनैहौं।
चंदा हू ते अति सुंदर तोहिं नवल दुलहिया ब्यैहौं।
तेरी सौंह मेरी सुन भैया, अबहीं ब्याहन जैहौं।
'सूरदास' सब सखा बराती नूतन मंगल गैहौं।

खेलन अब मेरी जाइ बलैया।

जबहिं मोहिं देखत लरिकनि सँग तबहिं खिझत बल भैया।
मोसौं कहत लाल वसुदेव को, देवकि तेरी मैया।
मोल लियो कछु दे करि तिनकों, करि करि जतन बढ़ैया।
अब बाबा कहि कहत नंद सों, जसुमति सो कहे मैया।
ऐसे कहि सब मोहिं खिझावत, तब उठि चल्यो खिसैया।
पाछे नंद सुनत हैं ठाढ़े, हँसत हँसत उर लैया।
सूर नंद बलरामहिं धिरयो, तब मन हरष कन्हैया।

संदेसो देवकी सौं कहियो।

हौं तो धाइ तिहारे सुत की, मया करत ही रहियो।
जदपि टेव तुम जानति उनकी, तऊ मोहिं कहि आवे।
प्रात होत मेरे लाल लड़ेतें, माखन रोटी भावे।
तेल उबटनो अरु तातो जल ताहि देखि भजि जाते।
जोइ जोइ माँगत सोइ सोइ देती, क्रम-क्रम करि के न्हाते ।।
सूर पथिक सुनि मोहिं रैनि दिन, बढ़यौ रहत उर सोच।
मेरो अलक लड़ैतो मोहन, ह्वै है करत सँकोच।

—सूरदास

प्रश्नावली

१. बालिका का परिचय

१. इस कविता में बालिका के लिए किन-किन उपमानों का प्रयोग किया गया है ?

२. कवयित्री को बालिका में किन-किन महापुरुषों के व्यक्तित्व की झलक दिखाई देती है ? और क्यों ?

३. निम्नलिखित प्रयोगों का सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए :—

— शाही शान भिखारिन की,
— अंधकार की दीपशिखा,
— नीरस दिल की सुधा-धार,
— नष्ट नयनों की जीवन-ज्योति

२. बाललीला के पद

१. बाललीला के प्रथम पद में बालक कृष्ण क्या हठ करते हैं ? माँ उन्हे किस प्रकार से बहलाती है ?

२. बालकृष्ण माता यशोदा से बलराम भैया की क्या-क्या शिकायतें करते हैं ?

३. यशोदा माता पथिक के द्वारा क्या संदेश भेजती हैं ?

४. उपर्युक्त तीनों पदों के आधार पर बालक कृष्ण के स्वभाव का वर्णन कीजिए ।

सामान्य प्रश्न

१. 'बाललीला के पद' और 'बालिका का परिचय' में भाव की दृष्टि से आप क्या-क्या समानताएँ तथा विषमताएँ पाते हैं ?

२. अपने छोटे भाई या बहन के क्रीड़ा-कौतुकों का वर्णन कीजिए ।

३. वात्सल्य संबंधी कुछ अन्य कविताओं को एकत्रित करके कक्षा में सुनाइए ।

टिप्पणियाँ

१. **घिरयो** — डाँटा

२. **अलक लड़ैतो** — लाड़ला, दुलारा

(घ) भक्ति

१. कृष्णभक्ति और ब्रज-प्रेम

मानुष हौं तौ वही रसखानि बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जौ पसु हौं तौ कहा बस मेरो चरौ नित नंद की धेनु मँझारन।
पाहन हौं तौ वही गिरि को जो धर्यौ कर छत्र पुरंदर-कारन।
जौ खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कालिन्दी-कूल कदंब की डारन।।

वा लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारौं।
आठहु सिद्धि नवौ निधि को सुख नंद की गाइ चराइ बिसारौं।
ए रसखानि जबै इन नैनन तें ब्रज के बन-बाग निहारौं।
कोटिक ये कलधौत के धाम करील की कुंजन ऊपर वारौं।।

सेष गनेस महेस दिनेस, सुरेसहु जाहि निरंतर गावैं।
जाहि अनादि अनंत अखंड, अछेद अभेद सुवेद बतावैं।
नारद से सुक ब्यास रटैं, पचि हारे तऊ पुनि पार न पावैं।
ताहि अहीर की छोहरियाँ, छछिया भरि छाछ पै नाच नचावैं।।

धूरिभरे अति सोभित स्यामजू तैसी बनी सिर सुंदर चोटी।
खेलत-खात फिरैं अँगना पग पैंजनी बाजति पीरी कछोटी।
वा छबि को रसखानि विलोकत वारत काम कला निधि कोटी।
काग के भाग बड़े सजनी हरि-हाथ सों लै गयो माखन-रोटी।

कानन दै अँगुरी रहिबो जबहीं मुरली धुन मंद बजैहै।
मोहनीताननि सों रसखानि अटा चढ़ि गोधन गैहै तो गैहै।
टेरि कहौं सिगरे ब्रज लोगनि काल्हि कोऊ सु कितो समुझैहै।
माइ री वा मुख की मुसकानि सम्हारी न जैहै न जैहै न जैहै॥

मोर-पखा सिर ऊपर राखिहौं गुंज की माल गरे पहिरौंगी।
ओढ़ि पितंबर लै लकुटी बन गोधन ग्वारिन संग फिरौंगी।
भावतो तोहि मेरो रसखानि सो तेरे कहैं सब स्वाँग करौंगी।
या मुरली मुरलीधर की अधरान-धरी अधरा न धरौंगी॥

—रसखान

२. मीरा-पदावली

(१)

पायौ जी, मैंने राम रतन धन पायौ।
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, किरपा कर अपनायौ।
जनम-जनम की पूँजी पाई, जग में सभी खोवायौ।
खरचै नहिं कोई चोर न लेवे, दिन-दिन बढ़त सवायौ।
सत की नाव खेवटिया सतगुरु, भव-सागर तर आयौ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरख हरख जस गायौ।

(२)

हेरी मैं तो प्रेम दीवाणी, मेरो दरद न जाणै कोय।
सूलो ऊपर सेज हमारी, किस विध सोणा होय।
गगन मँडल पै सेज पिया की, किस विध मिलणा होय।
घायल की गति घायल जानै, कै जिन लागी होय।
जौहरी की गति जौहरी जानै, की जिन जौहर होय।
दरद की मारी बन-बन डोलूं, वैद मिल्या नहिं कोय।
मीरा की प्रभु पीर मिटैगी, जब वैद सँवलिया होय।

(३)

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर-मुकुट, मेरो पति सोई।

छाँडि दई कुल की कानि, कहा करै कोई।
संतन ढिंग बैठि-बैठि लोक-लाज खोई।
अँसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम-बेलि बोई।
अब तो बेलि फैल गई, आनंद फल होई।
भगत देखि राजी भई, जगत देखि रोई।
दासी मीरा, लाल गिरधर, तारो अब मोही।

(४)

पग घुँघरू बाँध मीरा नाची रे।
लोग कहै मीरा भई बावरी, सास कहै कुलनासी रे।
जहर का प्याला राणाजी भेज्या, पीवत मीरा हाँसी रे।
मैं तो अपने नारायण की, होगई आपहि दासी रे।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, मिलौ अविनासी रे।

—मीराबाई

३. भक्ति-पदावली

काहे रे बन खोजन जाई।
सर्व निवासी सदा अलेपा तोहि संग समाई ।।
पुहुप मध्य ज्यों बास बसत है मुकुर माँहि जस छाँई।
तैसे ही हरि बसै निरतर घट ही खोजो भाई ।।
बाहर भीतर एकै जानौ यह गुरु ज्ञान बताई।
भन 'नानक' बिन आपा चीन्हे मिटे न भ्रम की काई ।।

जो नर दुख में दुख नहिं मानै।
सुख सनेह अरु भय नहिं जाके कंचन माटी जानै ।।
नहिं निन्दा नहिं अस्तुति जाके लोभ मोह अभिमाना।
हर्ष शोक तें रहे नियारौ नाहिं मान अपमाना ।।
आसा मनसा सकल त्यागि कै जगतैं रहै निरासा।
काम क्रोध नहिं परसैं नाहिन तेहि घट ब्रह्म निवासा ।।
गुरु किरपा जेहि नर पै कीन्ही तिन यह जुगति पिछानी।
'नानक' लीन भयौ गोविंद सौं ज्यौं पानी संग पानी ।।

—नानक

अब कैसे छुटै नाम रट लागी
प्रभुजी तुम चंदन हम पानी। जाकी अंग अंग बास समानी ।।
प्रभुजी तुम घन बन हम भौंरा। जैसे चितवत चंद चकोरा ।।
प्रभुजी तुम दीपक हम बाती। जाकी जोति बरै दिन राती ।।
प्रभुजी तुम मोती हम धागा। जैसे सोनहि मिलत सुहागा ।।
प्रभुजी तुम स्वामी हम दासा। ऐसी भक्ति करै रैदासा ।।

—रैदास

प्रश्नावली

१. कृष्ण-भक्ति और ब्रज प्रेम

१. रसखान को ब्रज की विभिन्न वस्तुओं से अतिशय लगाव का कारण क्या था ? इससे उनके चरित्र की कौन-सी विशेषता ज्ञात होती है ?

२. ईश्वर की प्राप्ति के लिए ज्ञान की अपेक्षा प्रेम श्रेष्ठ है, इस बात को कवि ने किस प्रकार कहा है ?

३. कृष्ण का कौन-सा रूप गोपी के हृदय में बस गया ? पाँचवें और छठे पदों में गोपियों के श्रीकृष्ण के प्रति बढ़ते प्रेम का स्पष्ट वर्णन कीजिए ।

४. पाँचवें और छठे पदों की अंतिम पंक्तियों का कथ्य और अभिव्यक्ति दोनों ही दृष्टियों से अर्थ स्पष्ट कीजिए ।

५. पठित पदों के आधार पर रसखान की कृष्ण-भक्ति पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए ।

२. मीरा-पदावली

१. मीरा ने कौन-सा धन पा लिया है ? उस धन की विशेषताएँ बताइए ।

२. मीरा ने अपनी विरह-वेदना को किस प्रकार व्यक्त किया है ?

३. 'प्रेम-बेलि' के रूपक को स्पष्ट कीजिए ।

४. आपकी दृष्टि से इन चारों पदों में से किस पद में मीरा की भक्ति-भावना विशेष रूप से उभरी है ? उस पद का भाव-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए ।

५. नीचे लिखी पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए :

(क) सत की नाव खेवटिया सतगुरु, भव-सागर तर आयो ।

(ख) सूली ऊपर सेज हमारी, किस विध सोणा होय ।
गगन मँडल पै सेज पिया की, किस विध मिलना होय ।

(ग) भगत देख राजी भई, जगत देखि रोई ।

३. भक्ति-पदावली

१. 'पुहुप मध्य ज्यों बास बसत है, मुकुर माँहि जस छाँई ।'
उपर्युक्त पंक्ति किस बात को स्पष्ट करने के लिए लिखी गई है ?

२. गुरु नानक देव ने कैसे व्यक्ति को धन्य माना है ?

३. महात्मा रैदास ने भक्त और भगवान के संबंधों को किस प्रकार व्यक्त किया है ?

सामान्य प्रश्न

१. इन पदों के आधार पर बताइए कि भक्त के हृदय में भगवान के प्रति क्या-क्या भावनाएं उठती हैं ? अपने उत्तर की पुष्टि में उपयुक्त उदाहरण दीजिए ।

२. पठित पदों के आधार पर भक्त कवि के रूप में रसखान की मीराबाई से और गुरु नानक की रैदास से तुलना कीजिए ।

३. रसखान के पद सवैया छंद में हैं । इस छंद की रचना के नियम ज्ञात कीजिए तथा इसके सस्वर वाचन का अभ्यास कीजिए ।

टिप्पणियाँ

१. कृष्ण-भक्ति और ब्रज-प्रेम

१. **पुरंदर इत्यादि** — श्रीकृष्ण ने जब ब्रज में इंद्र की पूजा बंद कराकर गोवर्धन की पूजा प्रारंभ करा दी तो इंद्र ने कोप करके ब्रज को बहाने के लिए प्रलयंकर वर्षा की, किन्तु कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत उठाकर ब्रज की रक्षा की । इसी कथा की ओर यहाँ संकेत है ।

२. **आठहु सिद्धि** — योगसिद्धि—योग साधना से मिलने वाली आठ सिद्धियाँ या अलौकिक शक्तियाँ : अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व, प्राप्ति ।

३. **नवी निधि** — नवनिधि, कुबेर के नौ रत्न: पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप मुकुंद, कुंद, नील, खर्व ।

४. **सुक** — शुकदेव मुनि, कहते हैं इन्हें जन्म से ही ब्रह्मज्ञान प्राप्त था । ये कृष्ण द्वैपायन के पुत्र थे ।

(ङ) जीवन-दर्शन

१. आः धरती कितना देती है

मैंने छुटपन में छिपकर पैसे बोए थे
सोचा था, पैसों के प्यारे पेड़ उगेंगे
रुपयों की कलदार मधुर फ़सलें खनकेंगी,
और, फूल फलकर, मैं मोटा सेठ बनूँगा !
पर बंजर धरती में एक न अंकुर फूटा,
बंध्या मिट्टी ने न एक भी पैसा उगला ।
सपने जाने कहाँ मिटे, कब धूल हो गए !

मैं हताश हो, बाट जोहता रहा दिनों तक,
बाल कल्पना के अपलक पाँवड़े बिछाकर ।
मैं अबोध था, मैंने गलत बीज बोए थे,
ममता को रोपा था, तृष्णा को सींचा था ।

अर्धशती हहराती निकल गई है तब से !
कितने ही मधु पतझर बीत गए अनजाने,
ग्रीष्म तपे, वर्षा झूलीं, शरदें मुसकाईं,
सी-सी कर हेमंत कँपे, तरु झरे, खिले वन !

औ' जब फिर से गाढ़ी ऊदी लालसा लिए,
गहरे कजरारे बादल बरसे धरती पर।
मैंने, कौतूहलवश, आँगन के कोने की
गीली तह को यों ही उँगली से सहलाकर
बीज सेम के दबा दिए मिट्टी के नीचे!
भू के अंचल में मणि माणिक बाँध दिए हों।

मैं फिर भूल गया इस छोटी-सी घटना को!
और बात भी क्या थी, याद जिसे रखता मन,
किन्तु एक दिन, जब मैं संध्या को आँगन में
टहल रहा था—तब सहसा मैंने जो देखा,
उससे हर्ष-विमूढ़ हो उठा मैं विस्मय से।

देखा, आँगन के कोने में कई नवागत
छोटी-छोटी छाता ताने खड़े हुए हैं।
छाता कहूँ कि विजय पताकाएँ जीवन की,
या हथेलियाँ खोले थे वे नन्हीं, प्यारी,—
जो भी हो, वे हरे-हरे उल्लास से भरे
पंख मारकर उड़ने को उत्सुक लगते थे,
डिम्ब तोड़कर निकले चिड़ियों के बच्चे-से!

निर्निमेष, क्षण भर, मैं उनको रहा देखता—
सहसा मुझे स्मरण हो आया,—कुछ दिन पहिले
बीज सेम के रोपे थे मैंने आँगन में

और उन्हीं से बौने पौधों की यह पलटन
मेरी आँखों के सम्मुख अब खड़ी गर्व से,
नन्हे नाटे पैर पटक, बढ़ती जाती है।
तब से उनको रहा देखता, धीरे-धीरे
अनगिनती पत्तों से लद भर गईं झाड़ियाँ,
हरे भरे टँग गए कई मखमली चँदोवे।

बेलें फैल गईं बल खा, आँगन में लहरा—,
और सहारा ले कर बाड़े की टट्टी का
हरे-हरे सौ झरने फूट पड़े ऊपर को!
मैं अवाक् रह गया वंश कैसे बढ़ता है!
छोटे, तारों-से छितरे, फूलों के छींटे
झागों-से लिपटे लहरी-श्यामल लतरों पर
सुंदर लगते थे, मावस के हँसमुख नभ-से
चोटी के मोती-से, आँचल के बूटों-से,
ओह, समय पर उनमें कितनी फलियाँ टूटीं।

कितनी सारी फलियाँ, कितनी प्यारी फलियाँ,
पतली चौड़ी फलियाँ उफ, उनकी क्या गिनती!
लंबी-लंबी अंगुलियों – सी, नन्हीं-नन्हीं
तलवारों सी, पन्ने के प्यारे हारों – सी,
झूठ न समझें, चंद्र कलाओं-सी नित बढ़ती,
सच्चे मोती की लड़ियों-सी, ढेर-ढेर खिल,
झुंड-झुंड झिलमिलकर कचपचिया तारों – सी!

आ: इतनी फलियाँ टूटीं, जाड़ों भर खाईं,
सुबह शाम घर-घर में पकीं, पड़ोस पास के
जाने अनजाने सब लोगों में बँटवाईं,
बंधु-बांधवों, मित्रों, अभ्यागत, मँगतों ने,
जी भरभर दिन रात मुहल्ले भर ने खाईं !
कितनी सारी फलियाँ, कितनी प्यारी फलियाँ
यह धरती कितना देती है ! धरती माता
कितना देती है अपने प्यारे पुत्रों को !
नहीं समझ पाया था मैं उसके महत्व को !
बचपन में, छि:, स्वार्थ लोभवश पैसे बोकर !

रत्न प्रसविनी है वसुधा, अब समझ सका हूँ ।
इसमें सच्ची समता के दाने बोने हैं,
इसमें जन की क्षमता के दाने बोने हैं,
इसमें मानव ममता के दाने बोने हैं,
जिससे उगल सकें फिर धूल सुनहली फ़सलें
मानवता की—जीवन श्रम से हँसें दिशाएँ !
हम जैसा बोएँगे वैसा ही पाएँगे ।

—सुमित्रानंदन पंत

२. खिलौना

'मैं तो वही खिलौना लूँगा'
मचल गया दीना का लाल,—
'खेल रहा था जिसको लेकर
राजकुमार उछाल-उछाल ।'

व्यथित हो उठी माँ बेचारी—
'था सुवर्ण-निर्मित वह तो !
खेल इसीसे लाल,—नहीं है
राजा के घर भी यह तो !'

'राजा के घर ! नहीं नहीं माँ
तू मुझको बहकाती है,
इस मिट्टी से खेलेगा क्या?
राजपुत्र तू ही कह तो ।'

फेंक दिया मिट्टी में उसने
मिट्टी का गुड्डा तत्काल,
'मैं तो वही खिलौना लूँगा'—
मचल गया दीना का लाल ।

'मैं तो वही खिलौना लूँगा'
मचल गया शिशु राजकुमार,—
'वह बालक पुचकार रहा था
पथ में जिसको बारंबार

'वह तो मिट्टी का ही होगा,
खेलो तुम तो सोने से ।'
दौड़ पड़े सब दास-दासियाँ
राजपुत्र के रोने से ।

मिट्टी का हो या सोने का,
इनमें वैसा एक नहीं,
खेल रहा था उछल-उछल कर
वह तो उसी खिलौने से ।

राजहठी ने फेंक दिए सब
अपने रजत-हेम-उपहार,
'लूँगा वही, वही लूँगा मैं ।'
मचल गया वह राजकुमार ।

—सियारामशरण गुप्त

३. हम दीवानों की क्या हस्ती

हम दीवानों की क्या हस्ती,
हैं आज यहाँ कल वहाँ चले !
मस्ती का आलम साथ चला,
हम धूल उड़ाते जहाँ चले !

आए बनकर उल्लास अभी,
आँसू बनकर बह चले अभी !
सब कहते ही रह गए, अरे !
तुम कैसे आए, कहाँ चले ?

किस ओर चले ? यह मत पूछो
चलना है, बस इसलिए चले,
जग से उसका कुछ लिए चले,
जग को अपना कुछ दिए चले ।

दो बात कही, दो बात सुनी !
कुछ हँसे और फिर कुछ रोए,
छककर सुख-दुख के घूँटों को
हम एक भाव से पिए चले।

हम भिखमंगों की दुनिया में
स्वच्छंद लुटाकर प्यार चले,
हम एक निशानी-सी उर पर
ले असफलता का भार चले।

हम मान-रहित, अपमान-रहित
जी भरकर खुलकर खेल चुके,
हम हँसते-हँसते आज यहाँ
प्राणों की बाजी हार चले।

हम भला-बुरा सब भूल चुके,
नतमस्तक हो मुख मोड़ चले,
अभिशाप उठाकर होठों पर
वरदान दृगों से छोड़ चले।

अब अपना और पराया क्या ?
आबाद रहें रुकनेवाले !
हम स्वयं बँधे थे, और स्वयं
हम अपने बंधन तोड़ चले।

—भगवतीचरण वर्मा

४. आदमी का अनुपात

दो व्यक्ति कमरे में
कमरे से छोटे—
कमरा है घर में
घर है मुहल्ले में
मुहल्ला नगर में
नगर है प्रदेश में
प्रदेश कई देश में
देश कई पृथ्वी पर
अनगिन नक्षत्रों में
पृथ्वी एक छोटी
करोड़ों में एक ही
सबको समेटे हैं
परिधि नभ-गंगा की
लाखों ब्रह्मांडों में
अपना एक ब्रह्मांड
हर ब्रह्मांड में
कितनी ही पृथ्वियाँ
कितनी ही भूमियाँ
कितनी ही सृष्टियाँ
यह है अनुपात
आदमी का विराट से
इस पर भी आदमी

ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ, घृणा, अविश्वास लीन
संख्यातीत शंख सी दीवारें उठाता है
अपने को दूजे का स्वामी बताता है
देशों की कौन कहे
एक कमरे में
दो दुनियां रचाता है।

—गिरिजाकुमार माथुर

५. नीति के दोहे

अपनी पहुँच विचारि कै, करतब करिए दौर।
तेते पाँव पसारिए, जेती लाँबी सौर॥

विद्या धन उद्यम बिना, कहौ जु पावै कौन।
बिना डुलाए ना मिलै, ज्यौं पंखा की पौन॥

भले बुरे सब एक सौं, जौ लौं बोलत नाहिं।
जानि परतु है काक पिक, ऋतु बसंत के माहिं॥

सबै सहायक सबल कै, कोउ न निबल सहाय।
पवन जगावत आग को, दीपहिं देत बुझाय॥

कारज धीरे होतु है, काहे होत अधीर।
समय पाय तरुवर फलै, केतक सींचौ नीर॥

—वृंद

रहिमन पानी राखिए, बिनु पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती मानुष चून॥

कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
विपति-कसौटी जे कसे, सोही साँचे मीत॥

धनि रहीम जल पंक को, लघु जिय पियत अघाय।
उदधि बड़ाई कौन है, जगत पियासौ जाय॥

जिहिं अंचल दीपक दुर्‌यो, हन्यो सो ताही गात।
रहिमन असमय के परे, मित्र-शत्रु ह्वै जात॥

टूटे सुजन मनाइए, जौ टूटे सौ बार।
रहिमन फिर-फिर पोइए टूटे मुकताहार॥

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चंदन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग॥

कदली, सीप, भुजंग-मुख, स्वाति एक गुण तीन।
जैसी संगति बैठिए, तैसोई फल दीन॥

जे गरीब पर हित करें, ते रहीम बड़ लोग।
कहा सुदामा बापुरो, कृष्ण-मिताई जोग॥

देनहार कोउ और है, भेजत सो दिन रैन।
लोग भरम हम पै करैं, ताते नीचे नैन॥

—रहीम

मुखिया मुख सो चाहिए, खान पान को एक।
पालै पोसे सकल अंग तुलसी सहित विवेक॥

जड़ चेतन गुन-दोष मय विस्व कीन्ह करतार।
संत हंस गुन गहहिं पय परिहरि बारि-बिकार॥

चरन चोंच लोचन रंगौ, चलौ मराली चाल।
छीर-नीर विवरन समय बक उघरत तेहि काल॥

मंत्री, गुरु अरु वैद जो प्रिय बोलहिं भय आस।
राज, धरम, तन तीनि कर होई बेगहि नास॥

सम कंचन काँचै गिनत, सत्रु मित्र सम होइ।
तुलसी या संसार में कहत संतजन सोइ॥

—तुलसीदास

बड़े न हूजै गुननु बिनु बिरद बड़ाई पाइ।
कहत धतूरे सौं कनकु, गहनौ गढ़्यौ न जाइ॥

कनक-कनक तै सौ गुनौ मादकता अधिकाइ।
उहिं खाए बौरात जन इहिं पाए बौराइ॥

स्वारथु, सुकृत न, श्रमु वृथा; देखि विहंग, विचारि।
बाज, पराए पानि परि तूं पच्छीनु न मारि॥

जिन दिन देखे वे कुसुम, गई सु बीति बहार।
अब अलि रही गुलाब में, अपत कटीली डार॥

इहि आसा अटक्यो रहतु, अलि गुलाब के मूल।
ह्वै हैं फेरि बसंत ऋतु इन डारन वे फूल॥

—बिहारी

प्रश्नावली

१. आ : धरती कितना देती है

१. पैसे बोने की बात के द्वारा कवि क्या कहना चाहता है ?

२. कवि ने धरती को एक स्थान पर 'बंध्या' और दूसरे स्थान पर 'रत्न-प्रसविनी' क्यों कहा है ?

३. कविता की उन दो पंक्तियों का उल्लेख कीजिए जिनमें कवि ने छहों ऋतुओं का वर्णन किया है। यहाँ बसंत और शिशिर का संकेत किन शब्दों से मिलता है ?

४. कवि ने सेम के बीज के अंकुरित होने से लेकर फलियाँ लगने तक की अवस्था का जो चित्रण इस कविता में किया है उसे अपने शब्दों में लिखिए।

५. सेम के फूलों के लिए कवि ने क्या-क्या उपमान दिए हैं ?

६. इस कविता द्वारा कवि ने क्या संदेश दिया है ? अपने कथन के समर्थन में उपयुक्त पंक्तियों को उद्धृत कीजिए।

७. निम्नांकित पंक्तियों का सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए :—

(१) ममता को रोपा था तृष्णा को सींचा था

(२) छाता कहूँ कि विजय पताकाएँ जीवन की

(३) डिंब तोड़ कर निकले चिड़ियों के बच्चे-से

२. खिलौना

१. इस कविता में किन दो प्रकार के बालकों का वर्णन है ? दोनों की मानसिकता एवं अवस्था में क्या अंतर है ?

उपयुक्त पंक्तियाँ उद्धृत करते हुए अपने उत्तर की पुष्टि कीजिए।

२. बाल-स्वभाव की किन-किन विशेषताओं को कवि ने इस कविता में उद्घाटित किया है और किस युक्ति से ?

३. दीन बालक की माँ और राजकुमार की दास-दासियों की प्रबोधन-विधि में क्या समानता तथा अंतर है ?

४. यह कविता कैसी है ?

(क) वर्णन प्रधान
(ख) विवरण प्रधान
(ग) विचार प्रधान
(घ) भाव प्रधान

५. निम्नांकित पद का भावार्थ लिखिए :—

'मिट्टी का हो.........उसी खिलौने से ।'

६. इस कविता का विस्तार इसी छंद में आगे कीजिए ।

३. हम दीवानों की क्या हस्ती

१. इस कविता में 'दीवाना' शब्द के निम्नलिखित अर्थों में से सर्वोपयुक्त को चिह्नित कीजिए—

(क) पागल
(ख) लगनवाला
(ग) आवारा
(घ) निश्चिन्त
(ङ) मनमौजी ।

२. कवि ने दीवानों की क्या विशेषताएँ बताई हैं ?

३. इस कविता से जीवन के प्रति कवि का क्या दृष्टिकोण झलकता है ?

४. निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए :

(क) आए बन कर उल्लास......आँसू बन कर बह चले अभी
(ख) प्राणों की बाज़ी हार चले ।

(ग) अभिशाप उठा कर होठों पर
वरदान दृगों से छोड़ चले।
(घ) 'हम स्वयं बँधे थे और स्वयं
हम अपने बंधन तोड़ चले।'

५. इस कविता को याद कर लय और स्वर के साथ कक्षा में सुनाइए।

४. आदमी का अनुपात

१. विराट की तुलना में मनुष्य का अस्तित्व बताने के लिए कवि ने किस युक्ति का सहारा लिया है ?

२. इतना छोटा होते हुए भी मनुष्य कैसा व्यवहार करता है ?

३. आकारगत विशालता की दृष्टि से नीचे लिखी वस्तुओं को कवि ने किस क्रम से आयोजित किया है ?

पृथ्वी, मनुष्य, नगर, कमरा, मुहल्ला, नक्षत्र, नभगंगा, प्रदेश, देश।

४. कवि ने मनुष्य में किन-किन अवगुणों का उल्लेख किया है ? इनसे बचने के लिए हमें किन सद्गुणों को अपनाना चाहिए ?

५. इस कविता की उन पंक्तियों का उल्लेख कीजिए जिनमें मनुष्य की महत्वाकांक्षा की ओर संकेत किया गया है ?

५. वृंद के दोहे

१. पहले दोहे के कथन के समर्थन में कोई दृष्टांत दीजिए।

२. विद्या रूपी धन बिना परिश्रम के नहीं आता। इस सत्य के समर्थन में कवि ने क्या उदाहरण दिया है ?

३. अपने किस कथन के समर्थन में कवि ने कौए और कोयल का उदाहरण दिया है ?

४. अपने सभी कामों को धैर्यपूर्वक संपादित करना चाहिए। इस कथन के समर्थन में आप अपनी ओर से कोई उदाहरण दीजिए।

५. आग, पवन और दीप के माध्यम से क्या बात कही गई है ?

६. रहीम के दोहे

१. प्रथम दोहे में 'पानी' किन तीन अर्थों मे प्रयुक्त हुआ है ? ऐसे प्रयोग में कौन-सा अलंकार होता है ?

२. सच्चे मित्र की कसौटी क्या है, इस बात को बताने वाले दोहे का चयन कीजिए। किसी अन्य कवि का इसी भाव से संबंधित कोई दूसरा दोहा सुनाइए।

३. संगति पर यहाँ कौन-कौन दोहे दिए गए हैं ? उनके भावों की तुलना कीजिए।

४. कविवर रहीम ने अपने बारे में क्या कहा है ? उससे उनके चरित्र पर क्या प्रकाश पड़ता है ?

५. रहीम के कुछ और दोहे एकत्र कीजिए और कक्षा में सुनाइए।

७. तुलसी के दोहे

१. तुलसीदास ने मुखिया का क्या गुण बताया है ? एक अच्छे नेता में इस गुण का होना क्यों आवश्यक है ?

२. किस गुण के कारण संत की उपमा हंस से दी जाती है ?

३. 'चरन चोंच······बक उघरत तेहि काल।'
इस दोहे के अलंकार का चमत्कार स्पष्ट कीजिए तथा इस दोहे की बात के समर्थन में एक लघुकथा लिखिए।

४. मंत्री, गुरु और वैद्य को प्रत्येक दशा में सत्य ही क्यों बोलना चाहिए ?

५. तुलसीदास के अनुसार संत की पहचान क्या है ?

६. संतों के संबंध में विभिन्न कवियों की कुछ उक्तियाँ एकत्र कीजिए।

८. बिहारी के दोहे

१. किस अवस्था में मनुष्य यशवान होने पर भी वस्तुतः महान नहीं बन पाता ? कवि ने अपने कथन की पुष्टि में कौन-सा उदाहरण दिया है ?

२. **'कनक' शब्द** किन दो वस्तुओं का द्योतक है ? उनमें से एक दूसरे से अधिक मादक क्यों है ? इस दोहे में कौन-सा अलंकार है ?

'स्वारथु सुकृत·········पच्छीनु न मारि'।

यहाँ बाज किस प्रकार के व्यक्तियों का प्रतीक है ? उनसे कवि क्या अनुरोध करता है ? अंतिम दो दोहों में कवि ने गुलाब, काँटा और भौरे के माध्यम से क्या बात कही है, और इन दोनों दोहों के कथनों में क्या संबंध है ?

सामान्य प्रश्न

इस खंड की कविताओं से आप को जीवन के प्रति कौन-कौन से मुख्य विचार मिले ?

'आः धरती कितना देती है' और 'हम दीवानों की क्या हस्ती' कविताओं की वर्णन शैली में क्या अंतर है ?

निम्नलिखित विषयों से संबद्ध दोहे और उनके अर्थ लिखिए:

परोपकार, धैर्य, स्वाभिमान, बड़प्पन, मित्रता।

अन्योक्ति क्या है ? इस माध्यम से कही गई बात क्यों प्रभावित करती है ? इस संकलन से अन्योक्ति वाले दोहे चुनिए।

नीति काव्य के लिए दोहा छंद क्यों अधिक उपयुक्त है ?

जीवन में 'नीति काव्य' की क्या उपयोगिता है ?

किसी दोहे के चारों चरणों की मात्राएँ गिनिए और उस आधार पर दोहे छंद के लक्षण लिखिए।

टिप्पणियाँ

१. आः धरती कितना देती है

कलदार	— कल से ढला हुआ सिक्का
कजरी	— ललाई लिए हुए काली (यहाँ पर गहरी)
कचपचिया	— तारों का एक घना समूह विशेष।

२. आदमी का अनुपात

दो दुनियां — एक स्वामी की और दूसरी सेवक की।

३. नीति के दोहे

कदली सीप……दीन — कवि-प्रसिद्धि है कि स्वाति-नक्षत्र में वर्षा को बूंदें केले की कोपलों में पड़कर कपूर, सीप में पड़ कर मोती एवं सर्प के मुख में पड़कर विष बन जाती हैं।

बाज — बाज, शिकारी पक्षी। मध्य युग मे पक्षियों का शिकार करने के लिए इसे पाला जाता था। अक्सर हाथ पर बैठा कर लोग बाहर निकलते थे और जब कोई पक्षी देखते तो उसके पीछे इसे छोड़ देते थे। पक्षी को दबोच कर वह मालिक के पास ले आता था। इसी तथ्य को लेकर कवि ने अन्योक्ति कही है। बाज उस व्यक्ति का प्रतीक है जो दूसरों के लिए कमजोरों को सताता है।

(च) विविध

सुदामा-चरित

विप्र सुदामा बसत हो, सदा आपने धाम ।
भीख माँगि भोजन करै, हिये जपत हरि-नाम ।।
ताकी घरनी पतिब्रता, गहे बेद की रीति ।
सलज सुसील सुबुद्धि अति, पति-सेवा सौं प्रीति ।।
कह्यौ सुदामा एक दिन, "क्रुस्न हमारे मित्र" ।
करत रहति उपदेस तिय, ऐसो परम-विचित्र ।।

स्त्री

लोचन-कमल दुख-मोचन तिलक भाल,
स्रबननि कुंडल मुकुट धरे माथ हैं ।
ओढ़े पीत बसन गरे में बैजयंती- माल,
संख चक्र गदा और पद्म लिये हाथ हैं ।।
कहत नरोतम संदीपनि गुरु के पास,
तुम ही कहत हम पढ़े एक साथ हैं ।
द्वारिका के गए हरि दारिद हरैंगे पिय,
द्वारिका के नाथ वै अनाथन के नाथ हैं ।।

सुदामा

सिच्छक हौं सिगरे जग को तिय, ताको कहा अब देति है सिच्छा।
जे तप कै परलोक सुधारत, संपति की तिनके नहिं इच्छा ॥
मेरे हिये हरि के पद-पंकज, बार हजार लै देखु परिच्छा।
औरन को धन चाहिंय बावरि, बाँभन को धन केवल भिच्छा ॥

स्त्री

कोदो सवाँ जुरतो भरि पेट, न चाहति हौं दधि दूध मिठौती।
सीत बितीतत जौ सिसियातहि हौं हठती पै तुम्हैं न हठौती ॥
जो जनती न हितू हरि सों तुम्हें काहे को द्वारिकै पेलि पठौती।
या घर तें न गयो कबहूँ पिय! टूटो तवा अरु फूटी कठौती ॥

सुदामा

छाँड़ि सबै जक तोहि लगी बक, आठहुँ जाम यहै जक ठानी।
जातहिं दैहैं लदाय लढ़ा भरि, लैहौं लदाय यहै जिय जानी ॥
पावैं कहाँ तें अटारी अटा, जिनके विधि दीन्हीं है टूटी-सी छानी।
जो पै दरिद्र लिखो है ललाट तौ, काहू पै मेटि न जात अजानी ॥

स्त्री

बिप्र के भगत हरि जगत-विदित-बंधु,
लेत सब ही की सुधि ऐसे महादानि हैं।

पढ़े एक चटसार कही तुम कैयौ बार,
लोचन-अपार वै तुम्हैं न पहिचानिहैं ?

एक दीनबंधु, कृपासिंधु फेरि गुरुबंधु,
तुम-सम कौन दीन जाकौ जिय जानिहैं ?

नाम लेत चौगुनी, गए तें द्वार सौगुनी सो,
देखत सहस्र गनी प्रीति प्रभु मानिहैं ।।

सुदामा

द्वारिका जाहु जू द्वारिका जाहु जू, आठहु जाम यहै जक तेरे ।
जौ न कहौ करिए तो बड़ो दुख, जैए कहाँ अपनी गति हेरे ।।
द्वार खरे प्रभु के छरिया तहँ भूपति जान न पावत नेरे ।
पाँच सुपारी तैं देखु विचारिकै, भेंट को चारि न चाउर मेरे ।।

यह सुनिकै तब ब्राह्मनी; गई परोसिनि-पास ।
पाद-सेर चाउर लिए, आई सहित-हुलास ।।

सिद्धि करी गनपति सुमिरि, बाँधि दुपटिया-खूंट ।
माँगत खात चले तहाँ, मारग बाली-बूट ।।

दीठि चकचौंधि गई देखत सुबर्नमई,
एक तें सरस एक द्वारिका के भौन हैं ।

पूछे बिन कोऊ कहूँ काहू सों न करै बात,
देवता-से बैठे सब साधि-साधि मौन हैं ॥

देखत सुदामै धाय पौरजन गहे पाय,
"कृपा करि कहौ बिप्र कहाँ कीन्ह गौन हैं ?"

"धीरज अधीर के, हरन पर पीर के,
बताओ बलबीर के महल यहाँ कौन हैं ?"

द्वारपाल

सीस पगा न झँगा तन में, प्रभु, जानै को आहि, बसै केहि ग्रामा ।
धोती फटी-सी लटी-दुपटी, अरु पाँय उपानह कौ नहिं सामा ॥
द्वार खरो द्विज दुर्बल एक, रह्यो चकि सों बसुधा अभिरामा ।
पूछत दीनदयाल को धाम, बतावत आपनो नाम सुदामा ॥

बोल्यौ द्वारपालक 'सुदामा नाम पाँड़े', सुनि,
छाँड़े राज-काज ऐसे जी की गति जानै को ?

द्वारिका के नाथ हाथ जोरि धाय गहे पाँय,
भेंटे लपटाय करि ऐसे दुख-सानै को ?

नैन दोऊ जल भरि पूँछत कुसल हरि,
बिप्र बोल्यौ 'बिपदा में मोहि पहिचानै को ?

जैसी तुम करी तैसी करै को कृपा के सिन्धु !
ऐसी प्रीति दीनबधु ! दीनन सों मानै को' ?

ऐसे बेहाल बेवाइन सों, पग कंटक-जाल लगे पुनि जोए ।
'हाय ! महादुख पायो सखा, तुम आए इतै न कितै दिन खोए' ।।
देखि सुदामा की दीन दसा, करुना करिकै करुनानिधि रोए ।
पानी परात को हाथ छुयौ नहिं नैनन के जल सों पग धोए ।।

श्रीकृष्ण

कछु भाभी हमकौ दियौ, सो तुम काहे न देत ।
चाँपि पोटरी काँख में, रहे कहौ केहि हेत ।।

आगे चना गुरु-मातु दए ते लए तुम चाबि हमें नहिं दीने ।
स्याम कह्यो मुसुकाय सुदामा सों, 'चोरी की बानि में हौ जू प्रबीने ।।
पोटरी काँख में चाँपि रहे तुम, खोलत नाहिं सुधा-रस-भीने ।
पाछिली बानि अजौ न तजी तुम, तैसेइ भाभी के तंदुल कीने' ।।

देनो हुतौ सो दै चुके, बिप्र न जानी गाथ ।
चलती बेर गोपालजू, कछू न दीन्हौ हाथ ।।

सुदामा

वह पुलकनि वह उठि मिलनि, वह आदर की भाँति ।
यह पठवनि गोपाल की, कछू न जानी जाति ।।
घर-घर कर ओड़त फिरे, तनक दही के काज ।
कहा भयौ जौ अब भयौ, हरि को राज-समाज ।।
हौं कब इत आवत हुतौ, वाही पठयौ ठेलि ।
कहिहौं धन सों जाइकै, अब धन धरौ सकेलि ।।

वैसेई राज-समाज बने, गज-बाजि घने मन सम्भ्रम छायौ।
वैसेई कंचन के सब धाम हैं द्वारिकै माहिं नौं फिरि आयौ॥
भौन बिलोकिबे को मन लोचत, सोचत ही सब गाँव मँझायौ।
पूछत पाँड़े फिरे सबसों, पर झोंपरी को कहुँ खोज न पायौ॥

कनक-दंड कर मैं लिए, द्वारपाल हैं द्वार।
जाय दिखायौ सबनि लै, 'या है महल तुम्हार'॥

टूटी-सी मड़ैया मेरी परी हुती याही ठौर,
तामैं परो दुःख काटौं, कहाँ हेम-धाम री।

जेवर-जराऊ तुम साजे प्रति अंग-अंग,
सखी सोहैं संग वह छूछी हुती छाम री॥

तुम तौ पटंबर री! ओढ़े हौ किनारीदार,
सारी जरतारी, वह ओढ़े कारी कामरी।

मेरी वा पँड़ाइन तिहारी अनुहार ही पै,
बिपदा-सताई वह पाई कहाँ पामरी?

कै वह टूटी-सी छानी हुती, कहँ कंचन के सब धाम सुहावत।
कै पग मैं पनहीं न हुती, कहँ लै गजराजहु ठाढ़े महावत॥
भूमि कठोर पै रात कटै, कहँ कोमल सेज पै नींद न आवत।
कै जुरतो नहिं कोदो सवाँ, प्रभु के परताप तें दाख न भावत॥

—नरोत्तमदास

प्रश्नावली

१. सुदामा को श्रीकृष्ण के पास जाने में क्यों संकोच हो रहा था ?

२. सुदामा और उसकी पत्नी के बीच हुए उत्तर-प्रत्युत्तर का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

३. द्वारिका को देखकर सुदामा के मन पर क्या प्रतिक्रिया हुई ?

४. द्वारपाल ने श्रीकृष्ण को सुदामा का परिचय किस रूप में दिया ?

५. श्रीकृष्ण ने सुदामा का किस प्रकार स्वागत किया ? कवि के इस वर्णन में क्या सौन्दर्य है ?

६. श्रीकृष्ण नें क्यों कहा, "पाछिली बानि अजौ न तजी तुम"।

७. श्रीकृष्ण से विदा के बाद सुदामा के मन में निराशा और क्षोभ के भाव क्यों उठे ?

८. इस प्रसंग का अंत किस प्रकार हुआ है ?

९. निम्नांकित पंक्तियों का सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए :

(क) औरन को धन चाहिय बावरि, बाँभन को धन केवल भिच्छा।

(ख) पानी परात को हाथ छुयो नहिं नैनन के जल सौं पग धोए।

टिप्पणियाँ

१. **लढ़ा** — बैलगाड़ी

२. **बूट** — हरा चना

३. **सामा** — सामर्थ्य

४. **कोदो सवाँ** — मोटे किस्म के अन्न

५. **छरिया** — छड़ीदार, द्वारपाल

काव्य-भारती

द्वितीय भाग

(दसवीं कक्षा के लिए)

विषय-सूची

			पृष्ठ
भूमिका			७३–८४
(क) प्रकृति का आह्वान	१. बादल ओ !	केदारनाथ सिंह	८५
	२. पर्वत प्रदेश में पावस	सुमित्रानंदन पंत	८८
	३. ब्रज की संध्या	हरिऔध	९०
	४. चाँदनी	जानकीवल्लभ शास्त्री	९३
	प्रश्नावली एवं टिप्पणियाँ		९५
(ख) देश-प्रेम और वीरता	१. हमारा प्यारा भारतवर्ष	जयशंकर प्रसाद	९८
	२. शौर्य-वर्णन	भूषण	१००
	३. उलाहना	माखनलाल चतुर्वेदी	१०३
	प्रश्नावली एवं टिप्पणियाँ		१०५
(ग) भक्ति	१. सरस्वती-वंदना	सूर्यकांत त्रिपाठी निराला	१०९
	२. भक्ति के दोहे	कबीर	११०
	३. भक्ति के पद	सूरदास	१११
	४. भक्ति-निवेदन	तुलसीदास	११३
	५. क्या पूजा क्या अर्चन रे ?	महादेवी वर्मा	११५
	प्रश्नावली एवं टिप्पणियाँ		११६
(घ) जीवन-दर्शन	१. एक सुनहली किरण उसे भी दे दो	कीर्ति चौधरी	१२०

	२. अँधेरे का दीपक	हरिवंश राय बच्चन	१२२
	३. हम अनिकेतन	बालकृष्ण शर्मा नवीन	१२५
	४. मिट्टी की महिमा	शिवमंगल सिंह सुमन	१२६
	५. मैंने आहुति बनकर देखा	अज्ञेय	१२८
	६. कैकेयी का अनुताप	मैथिलीशरण गुप्त	१३०
	प्रश्नावली एवं टिप्पणियाँ		१३३
(ङ) सौन्दर्य और प्रेम	१. बिहारी-माधुरी	बिहारी	१३७
	२. मतिराम-माधुरी	मतिराम	१३८
	३. घनानंद-वीथी	घनानंद	१३८
	प्रश्नावली एवं टिप्पणियाँ		१३९

भूमिका

हिन्दी कविता का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक हिन्दी कविता में अनेक प्रकार की विचारधारा, भाषा और शैली का प्रयोग हुआ है। इन्हीं के आधार पर हिन्दी कविता का इतिहास निम्नांकित चार युगों में बाँटा गया है :

१. आदिकाल

२. भक्तिकाल

३. रीतिकाल

४. आधुनिक काल

आदिकाल

ईसवी सन् की दसवीं शताब्दी में प्राकृत भाषा की अंतिम अपभ्रंश अवस्था से ही हिन्दी-कविता का प्रारंभ माना जाता है। उस काल की कोई एक विशिष्ट साहित्यिक प्रवृत्ति निर्धारित नहीं की जा सकी है। धर्म, नीति, शृंगार, वीर सभी प्रकार की रचनाएँ इस काल में उपलब्ध होती हैं। सिद्धों और नाथपंथी साधुओं की भी कुछ रचनाएँ मिलती हैं किन्तु वे भाषा की दृष्टि से शुद्ध साहित्य की कोटि में नहीं आतीं। उनमें गुह्य साधन और योगविषयक रहस्यमयी उक्तियाँ हैं। संप्रदाय से इतर व्यक्ति उनके गुह्यार्थ को नहीं समझ सकते। बौद्ध सिद्धों की वाणियाँ भी अपभ्रंश से मिलती-जुलती हैं। जैन आचार्यों की रचनाएँ परिनिष्ठित अपभ्रंश में हैं। इन जैन कवियों में स्वयंभू, पुष्पदंत, हेमचंद्र आदि की रचनाओं में उच्चकोटि का साहित्य मिलता है। कुछ आगे विकसित हुई और स्थानीय बोलियों से प्रभावित भाषाओं की रचनाएँ भी मिली हैं। अपभ्रंश में स्थानीय बोली का सम्मिश्रण करके 'अवहट्ठ' नाम से काव्य रचना करनेवाले मैथिल-कोकिल विद्यापति ठाकुर का नाम इस काल में विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

अपभ्रंश उस समय साहित्यिक भाषा थी, किन्तु इसके साथ ही जनसाधारण की बोली में कविता लिखना भी प्रारंभ हो गया था। भाट और चारणों द्वारा लिखे गए इस काल के प्रशस्ति-पद्य इस बात के प्रमाण हैं कि साहित्यिक अपभ्रंश को छोड़कर बोलचाल की भाषा का प्रयोग व्यापक रूप में स्वीकार होने लगा था। उस काल के भाट-चारण कवि अपने आश्रयदाता राजाओं के शौर्य

और पराक्रम का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन करते थे। रणभूमि में जाकर वीरों के हृदय में उत्साह की उमंग उत्पन्न करने में उनकी कविता सफल हुई है। इस प्रकार की कविता की प्रधानता होने से ही यह काल हिन्दी-साहित्य के इतिहास में 'वीरगाथा काल' भी कहा जाता है।

इस काल की रचनाएँ दो रूपों में मिलती हैं—एक प्रबंध काव्य के साहित्यिक रूप में और दूसरे वीरगीतों के रूप में। साहित्यिक प्रबंध के रूप में उपलब्ध सबसे पुराना काव्यग्रंथ चंद-वरदाई रचित **'पृथ्वीराज रासो'** माना जाता है। जगनिक इस काल के लोकप्रिय गायक कवि हैं जिनका **'परमाल रासो'** तो अब उपलब्ध नहीं है, पर उसी के ऊपर विकसित लोकगीत **'आल्हखंड'** के कई प्रादेशिक रूपांतर मिल जाते हैं जो ग्रामीण जनता का अब भी मनोरंजन करने में समर्थ हैं। इस काल के कवियों का मुख्य वर्ण्य विषय युद्ध है, अतः वीररसात्मक काव्य की प्रधानता स्वाभाविक है किन्तु उनके काव्य में युद्ध के अतिरिक्त विवाह, आखेट, प्रेम, नगर-वर्णन आदि भी यथाप्रसंग मिलते है।

इस काल की कविता की भाषा ओजगुणप्रधान है। इसमें अपभ्रंश से विकसित पुरानी हिन्दी का रूप मिलता है, जिसमें द्वित्व वर्णों का प्राचुर्य है।

इस काल की काव्य-शैली तथा प्रमुख प्रवृत्तियाँ संक्षेप में इस प्रकार हैं:

१. आश्रयदाताओं की प्रशंसा; उनके युद्ध, विवाह और आखेट का वर्णन।
२. विषयानुकूल ओजमयी भाषा का प्रयोग।
३. युद्धों का सुंदर, सजीव एवं वीररसपूर्ण वर्णन।
४. ऐतिहासिक कथाओं का कल्पना के योग से काव्यमय वर्णन।

भक्तिकाल

वीरगाथा काल के पश्चात् हिन्दी काव्य के वर्ण्य विषय एवं भावना में परिवर्तन हुआ। प्रशस्तिपरक वीरकाव्यों की रचना प्रायः समाप्त हो गई और उसके स्थान पर ईश्वरभक्ति का प्रबल प्रवाह दृष्टिगोचर होने लगा। तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों ने भी भक्तिकाव्य के उपयुक्त वातावरण की सृष्टि करने में योग दिया था। भक्ति आंदोलन को जनसाधारण में फैलाने का श्रेय स्वामी रामानंद को दिया जाता है।

भक्तिकाल की रचनाएँ मुख्यतः ईश्वरभक्ति-संबंधी दो प्रकार की विचारधाराओं पर आधारित हैं—निर्गुण भक्ति एवं सगुण भक्ति।

निर्गुण भक्ति की धारा दो रूपों में विभक्त हो गई है—पहली ज्ञानाश्रयी शाखा और दूसरी प्रेममार्गी शाखा।

सगुण भक्ति पर आधारित रचनाएँ भी दो प्रकार की हैं—एक रामभक्ति संबंधी और दूसरी कृष्णभक्ति संबंधी।

निर्गुण संत कवियों में स्वामी रामानंद के शिष्य कबीर का स्थान सर्वोपरि है। इन्होंने निर्गुण एवं निराकार ईश्वर की भक्ति का प्रचार करते हुए बाह्याडंबर एवं व्रत, तीर्थाटन, नमाज, रोजा आदि के बहिष्कार पर बल दिया। ईश्वर के निर्गुण और निराकार रूप को स्वीकार कर भक्तिकाव्य की रचना करने वालों में नानक, दादू, मलूकदास, रैदास आदि उच्चकोटि के संत कवि हैं। ये महापुरुष मुख्य रूप से संत थे और अपनी भक्ति-भावना की अभिव्यक्ति के लिए ही कविता किया करते थे।

प्रेममार्गी शाखा के कवि प्रेम को ही ईश्वर-प्राप्ति का मूलाधार मानते थे। इन कवियों ने इस्लाम की सूफ़ी विचारधारा के अनुसार ईश्वर को निर्गुण मानते हुए लौकिक प्रेमगाथाओं के माध्यम से आध्यात्मिक प्रेम का स्वरूप अपनी कृतियों में व्यक्त किया। इस शाखा के अधिकांश कवि मुसलमान थे। इन्होंने भारतीय प्रेमगाथाओं के माध्यम से अपने अध्यात्मज्ञान का विस्तार किया है। जायसी, कुतबन, मंझन प्रेमाश्रयी शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। मलिक मुहम्मद जायसी ने **'पदमावत'** नामक प्रबंधकाव्य में रत्नसेन और पद्मावती की प्रसिद्ध कथा को आध्यात्मिक धरातल पर प्रतिष्ठित किया है।

इन प्रेममार्गी संतों की रचनाएँ प्रायः अवधी भाषा में हैं और दोहा-चौपाई उनके प्रमुख छंद हैं। इन कवियों की प्रेमगाथाएँ समासोक्ति शैली में लिखी गई हैं जिनमें कहानी के साथ-साथ परोक्ष रूप से इन कवियों के आध्यात्मिक भाव एवं प्रेम का भी चित्रण होता चलता है।

निर्गुण भक्ति की शुष्कता और कठोरता से सामान्य जनता के भीतर ईश्वरभक्ति का प्रवाह उतने वेग से नहीं बहा जितना अपेक्षित था। आडंबरों के विरोध में कबीर आदि की वाणी में कुछ ऐसी प्रखरता और कटुता आ गई थी जिससे निर्गुण भक्ति के प्रति शिक्षित जनता का आकर्षण नहीं हुआ। आम जनता जितनी भक्ति की ओर आकर्षित हो सकती है उतनी ज्ञान की ओर नहीं। भक्ति ईश्वर के सगुण रूप की ही की जाती है, फलतः ईश्वर के सगुण रूप की ओर भक्त कवियों का ध्यान जाना स्वाभाविक था। इन कवियों ने मुख्यतया राम और कृष्ण को आधार बना कर बहुत सुंदर भक्तिकाव्य का सृजन किया है।

रामभक्तिशाखा के सबसे महान कवि गोस्वामी तुलसीदास हैं। तुलसी ने राम को ईश्वर का अवतार मानकर उनके सगुण स्वरूप का प्रतिपादन अपने '**रामचरितमानस**' में बड़े विस्तार से किया। '**विनयपत्रिका**' में उन्होंने विविध देवी-देवताओं की स्तुति की है। गोस्वामी जी लोक-संग्रह की भावना को स्वीकार कर काव्य-रचना में प्रवृत्त हुए थे। फलतः उनका काव्य बहुत शीघ्र ही लोकप्रिय हो गया। रामभक्तिशाखा के अन्य कवियों में अग्रदास, नाभादास, हृदयराम आदि हैं। केशवदास ने भी '**रामचंद्रिका**' लिखकर रामभक्ति का परिचय दिया है।

कृष्णभक्तिशाखा के कवियों ने कृष्ण को अपना आराध्य देव माना था और कृष्ण की ब्रज-लीलाओं का मुख्य रूप से वर्णन किया था। '**भागवत पुराण**' को आधार ग्रंथ मानकर कृष्णभक्ति के प्रमुख कवि कृष्ण-लीला वर्णन में प्रवृत्त हुए थे। ये कवि विभिन्न संप्रदायों के थे और इन्होंने कृष्ण का स्तवन अपने-अपने संप्रदाय की भावना के अनुरूप ही किया है। पुष्टिमार्ग के प्रवर्तक वल्लभाचार्य के शिष्य महाकवि सूरदास इस क्षेत्र के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। सूरदास ने '**भागवत**' के आधार पर '**सूरसागर**' नाम के विशाल काव्य की रचना की है, जिसमें कृष्ण की बाल-लीला तथा गोपियों के प्रेम, संयोग और वियोग का विशद वर्णन है। इस शाखा के कवियों ने ब्रजभाषा और पद-शैली में रचनाएँ की हैं। कृष्णभक्ति शाखा की परंपरा सैकड़ों वर्षों तक चलती रही और आगे चलकर जब शृंगारिक रचनाओं की प्रधानता हो गई तब राधा और कृष्ण भक्ति के साथ प्रेम के भी आलंबन हो गए।

भक्तिकालीन कविता की शैली तथा प्रमुख प्रवृत्तियाँ संक्षेप में इस प्रकार हैं :

१. निर्गुण ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि निराकार ईश्वर के उपासक, गुरु की महत्ता में विश्वास रखनेवाले, रूढ़िवाद और मिथ्याडंबर के विरोधी तथा जातिपाँति के बंधन को अस्वीकार करनेवाले थे। इनके काव्य की भाषा सीधी-सादी, अलंकार-विहीन तथा अनेक भाषाओं एवं बोलियों का मिश्रण होती थी। इसी से इस भाषा को सधुक्कड़ी भाषा कहते हैं। दोहा और पद इनके प्रमुख छंद हैं।

२. निर्गुण प्रेममार्गी शाखा के कवि भारतीय चरितकाव्यों के आधार पर प्रेमगाथाएँ लिखनेवाले कवि हैं। इनकी भाषा अवधी है। दोहा और चौपाई प्रमुख छंद हैं।

३. सगुण भक्त कवि राम और कृष्ण के अवतारी रूप के उपासक थे। अपने इष्ट देव का गुणगान तथा लीला-वर्णन इनकी प्रमुख प्रवृत्ति है। ये कवि कविता को भक्ति का साधन मान कर लिखते थे। ये राज्याश्रय से विमुख थे। तुलसीदास ने अवधी

और ब्रजभाषा दोनों में तथा कृष्णभक्त कवियों ने ब्रजभाषा में कविता की। कृष्ण-भक्ति में वात्सल्य और शृंगार की तथा रामभक्ति में शांत और दास्य भावना की प्रधानता थी। रामभक्ति शाखा के कवियों ने प्रबंध शैली और कृष्ण भक्ति शाखा के कवियों ने मुक्तक शैली अपनाई। इस समय दोहा, चौपाई, कवित्त, सवैया और रागबद्ध पदों में कविता की गई।

रीतिकाल

देश में मुगल साम्राज्य के स्थापित हो जाने पर जब समाज में विलासिता की प्रवृत्ति बढ़ने लगी तब साहित्य पर भी उसका प्रभाव पड़ा। कवि राजदरबारों के आश्रय में रहकर शृंगारिक कविता करने लगे। इस युग की रचनाएँ प्राय: काव्यशास्त्रों के लक्षणों—रस, अलंकार, छंद आदि—को समझाने के लिए लिखी गई। इसीलिए इन्हें रीति-ग्रंथ भी कहते हैं। काव्यांगों के शास्त्रीय विवेचन के साथ शृंगार और प्रेम का वर्णन इस काल के कवियों ने विशेष रूप से किया है। कवित्त, सवैया और दोहा इस काल के मुख्य छंद हैं। रीतिकालीन कवि ब्रजभाषा में सरसता लाने में बड़े सफल रहे। इस युग के कवियों में देव, मतिराम, बिहारी, भिखारीदास और पद्माकर का नाम प्रसिद्ध है। भूषण, सूदन और लाल इसी काल में वीर रस की कविता के लिए प्रसिद्ध हैं।

रीतिकालीन कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ संक्षेप में निम्नलिखित हैं :

१. इस काल के कवियों ने राजाश्रय में रहकर तत्कालीन कलाप्रेम को कविता के माध्यम से व्यक्त किया। इसलिए भावपक्ष की जगह कलापक्ष की प्रधानता रही।

२. इस काल में काव्यशास्त्र के लक्षण और उदाहरण प्रस्तुत करने वाली रचनाएँ लिखी गई। शृंगार को रसराज मानकर उसका विस्तारपूर्वक वर्णन हुआ। नायक नायिका भेद, षड्ऋतु वर्णन, बारहमासा आदि का मुख्यतया वर्णन किया गया।

३. इस काल में मुक्तक काव्य ही मुख्यत: रचे गए। दोहा, कविता तथा सवैया छंद की प्रधानता रही।

४. इस काल में ब्रजभाषा ही काव्य की भाषा थी, जिसमें अधिकाधिक सुकुमारता लाने का प्रयत्न कवियों ने किया। संस्कृत-ग्रंथों के आधार पर काव्य के अंगों का विवेचन किया गया।

५. इस काल के काव्य का मुख्य विषय शृंगार था, किन्तु वीर रस एवं नीति-संबंधी काव्य भी रचे गए।

आधुनिक काल

१९वीं सदी के उत्तरार्ध में सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक आंदोलनों के परिणाम स्वरूप हिन्दी-साहित्य में नई चेतना आई और काव्य के वर्ण्य विषय व्यापक हुए। इस समय की कविता में स्वदेश, स्वधर्म और स्वभाषा के प्रति प्रेम की भावना को अभिव्यक्ति मिली। भारतेन्दु इस नवीन आंदोलन के अग्रणी थे और इसीलिए इस युग को उनके नाम पर भारतेन्दु युग कहते हैं। इस समय खड़ी बोली के गद्य का विकास होने लगा किन्तु कविता की भाषा ब्रजभाषा ही बनी रही।

आधुनिक युग के द्वितीय उत्थान में ब्रजभाषा की जगह खड़ी बोली में ही कविता करने की ओर कवियों का ध्यान गया। महावीरप्रसाद द्विवेदी, श्रीधर पाठक, अयोध्यासिंह उपाध्याय, मैथिलीशरण गुप्त आदि ने खड़ी बोली में कविता की और प्राचीन कथाओं को नए रूप में लिखा। अतीत-गौरव और राष्ट्र-प्रेम इस युग के प्रधान स्वर हैं। **'भारत-भारती'** इस भावना की प्रतिनिधि रचना है।

छायावाद और रहस्यवाद आधुनिक युग के तृतीय उत्थान की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं। यह युग पुरातनता के प्रति विद्रोह और नवीन मान्यताओं के सृजन का युग है। क्या भाव, क्या भाषा और क्या छंद-विधान, सभी में नवीनता का आगमन हुआ। भाषा की दृष्टि से खड़ी बोली में बड़ी शक्ति आई और उसमें लाक्षणिकता, चित्रमयता तथा प्रतीकात्मता का समावेश हुआ। भाव की दृष्टि से प्रेम, प्रकृति-सौन्दर्य, राष्ट्र-प्रेम, नारी के प्रति सम्मान तथा मानवीय भावनाओं की अभिव्यक्ति के साथ-साथ अनंत और अज्ञात प्रियतम को आलंबन मानकर भी कविताएँ हुईं। आत्मपरक अनुभूति, करुणा, वेदना, अतृप्ति, पलायन आदि के स्वर भी इस समय की कविता में मुखरित हुए हैं। प्राचीन छंदों की जगह नए छंदों की भी सृष्टि हुई और अतुकांत कविताएँ भी प्रचुरता से रची गईं। प्रगीत मुक्तकों की रचना विशेष रूप से हुई। हिन्दी-कविता में नए अलंकारों जैसे—मानवीकरण, विशेषण-विपर्यय आदि का भी समावेश हुआ। प्रसाद, पंत, निराला और महादेवी इस धारा के प्रतिनिधि कवि हैं। छंद-बंध-हीन तथा ओजस्वी भाषा के लिए निराला और कोमलकांत पदावली के लिए पंत विशेष प्रसिद्ध हैं। प्रसाद की **'आँसू'** एवं **'कामायनी'**, निराला की **'परिमल'** और **'अनामिका'**, पंत की **'पल्लव'** और **'गुंजन'** तथा महादेवी वर्मा की **'यामा'** और **'दीपशिखा'** छायावाद की प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

छायावाद की कविता जीवन की यथार्थता और वास्तविक संघर्ष से दूर जा पड़ी थी और उसमें सूक्ष्म भावनाओं एवं काल्पनिक विचारों को ही विशेष अभिव्यक्ति मिली थी। सामाजिक जीवन से भी उसका संबंध न था। संभवत: इसी की प्रतिक्रियास्वरूप प्रगतिवाद का आरंभ हुआ।

किसान, मज़दूर, दीन और पददलित लोग तथा सर्वसामान्य का जीवन काव्य के विषय बन गए। प्रगतिवादी कविता मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित है। विषय की भाँति भाषा के क्षेत्र में भी परिवर्तन हुआ और वह जनसामान्य की भाषा के निकट आ गई। पंत की **'युगवाणी'** और **'ग्राम्या'** इस प्रकार की प्रतिनिधि रचनाएँ हैं।

प्रगतिवाद के पश्चात् हिन्दी-कविता ने एक नई दिशा ग्रहण की, जिसे 'प्रयोगवाद' अथवा 'नई कविता' के नाम से अभिहित किया गया है। इसमें कविता के प्राचीन लक्षणों, रूपों और विधानों का सर्वथा तिरस्कार किया गया है। इस कविता में अभिव्यक्ति के लिए उन प्रतीकों, बिम्बों और साधनों का प्रयोग किया जाता है जो यथार्थ जीवन से उत्पन्न होते हैं। इन कविताओं में वैयक्तिक अनुभूति की ही प्रधानता है। अज्ञेय, गिरिजाकुमार माथुर, धर्मवीर भारती आदि प्रयोग-वादी कवि हैं।

दिनकर, बच्चन, अंचल, नरेन्द्र शर्मा, भगवतीचरण वर्मा आदि आधुनिक युग के ऐसे प्रसिद्ध कवि हैं जिन्होंने किसी विशेष वाद का आश्रय नहीं लिया और स्वतंत्र रूप से आधुनिक जीवन की समस्याओं एवं भावनाओं पर कविता की। इन कवियों ने बहुत सुंदर सरस प्रगीत मुक्तकों की सृष्टि की है। राष्ट्रीय भावनाओं को सशक्त रूप से व्यक्त करनेवाले कवियों में दिनकर और सोहनलाल द्विवेदी का विशेष महत्त्व है।

आधुनिक युग की प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं शैलीगत विशेषताएँ संक्षेप में निम्नलिखित हैं :

१. **भारतेन्दु युग**—रीतिकालीन काव्य का आदर्श एकनिष्ठ सत्ता की ओर अभिमुख था तो इस युग का आदर्श लोकनिष्ठ सत्ता की ओर उन्मुख हुआ। जीवन और साहित्य का जो संबंध रीतिकाल में शिथिल पड़ गया था, वह आधुनिक युग में फिर से घनिष्ठ होने लगा। देशोद्धार, राष्ट्रप्रेम, अतीत-गौरव आदि विषयों की ओर ध्यान जाने से जनता में छाई हुई हीनता की भावना दूर होने लगी और अपनी राष्ट्रीयता का कवियों की वाणी में उद्घोष दृष्टिगत हुआ।

२. **द्विवेदी युग**—भारतेन्दु युग के बाद द्विवेदी युग में खड़ीबोली को कविता की भाषा के रूप में स्वीकृति प्राप्त हुई। संस्कृत के छंदों का हिन्दी में प्रयोग होने लगा। तत्सम पदावली का प्राचुर्य लक्षित हुआ। शनैः-शनैः खड़ीबोली में सरलता और सुकुमारता आई। प्रतीकात्मक शैली का काव्य भी खड़ीबोली में लिखा जाने लगा। विषय की दृष्टि से इस काल की कविता सामाजिक या पौराणिक ही है।

३. **छायावाद**—छायावाद युग में काव्य में नूतन प्रवृत्ति और काव्यशैली का प्रादुर्भाव हुआ। मुक्तक गीतात्मक शैली के काव्य की इस युग में प्रधानता हुई। अंतर्वृत्तियों का निरूपण तथा सांकेतिक शैली में मनोवैज्ञानिक विषयों का वर्णन इस युग में विशेष रूप से प्रारंभ हुआ। स्वच्छंदतावाद और अभिव्यंजनावाद के आश्रय में शब्दों और छंदों में नूतन प्रयोग प्रारंभ हुए। रूढ़िग्रस्त काव्य-विषयों और उपमानों का त्याग कर दिया गया।

छायावादी कविता में नूतन प्रतीकों की प्रधानता है। पंत, प्रसाद, निराला और महादेवी के काव्य में प्रतीकों की नूतनता उल्लेखनीय है। भाषा का लाक्षणिक प्रयोग भी वर्तमान काव्य की प्रमुख विशेषता है। रहस्यवादी कविता में अप्रस्तुत योजना भी नई है। प्रकृति के प्रति नवीन दृष्टिकोण का उन्मेष हुआ। सौन्दर्य, प्रेम और शृंगार इस कविता की विशेषताएँ हैं।

४. **प्रगतिवाद**—प्रगतिवादी कविता में राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक शोषण से मुक्ति का स्वर प्रधान है। इस कविता पर मार्क्सवाद का भी प्रभाव है। किसान मजदूर और शोषित वर्ग का पक्ष लेकर बौद्धिक धरातल पर कविता में भाव-योजना की जाती है।

५. **प्रयोगवाद**—प्रयोग के नाम पर भाव, विचार, प्रक्रिया, छंद, प्रतीक, अलंकार सब में परिवर्तन करने की प्रवृत्ति इस शताब्दी के पाँचवें दशक में देखी गई। यह प्रवृत्ति आजकल नई कविता के नाम से व्यवहृत होती है। छंद और अप्रस्तुत योजना सर्वथा नूतन रहती है।

संक्षेप में हिन्दी-कविता का सहस्र वर्ष का इतिहास विषय, भाषा, शैली एवं विधाओं (प्रबंधकाव्य, खंडकाव्य, मुक्तक, गीत, प्रगीत, अतुकांत आदि) में सुसंपन्न है और आज की हिन्दी कविता सामाजिक चेतना के साथ-साथ विकास के पथ पर अग्रसर हो रही है।

काव्यास्वादन और समालोचना

कविता का लक्ष्य उसके सौन्दर्य की अनुभूति द्वारा आनंद की प्राप्ति है। इस आनंद की अभिव्यक्ति तथा कविता के गुण-दोषों का विवेचन और मूल्यांकन ही समालोचना है। दूसरे शब्दों में समालोचना द्वारा यह स्पष्ट किया जाता है कि कवि द्वारा चित्रित प्राकृतिक दृश्यों एवं मानवीय भावों—सुख-दुःख, हर्ष-विषाद आदि—का चित्रण कहाँ तक उपयुक्त, सजीव एवं मर्मस्पर्शी हुआ है। कवि के भाव, अनुभूति और विचार क्या हैं और उनमें कहाँ तक उदात्तता, गहनता, व्यापकता, यथार्थता और कल्पना की सजीवता है, इसे समझने में भी समालोचना सहायक होती है। कवि

किसी विषय का केवल तथ्यात्मक विवरण नहीं प्रस्तुत करता, बल्कि उसे अपनी कल्पना द्वारा एक नया रूप और रंग देकर इस रूप में प्रस्तुत करता है जिससे वह भावुकों के लिए आह्लादकारी बन सके। इस कल्पना-तत्त्व का विश्लेषण भी आस्वादन के लिए आवश्यक है।

सामान्य रूप से तो कविता की व्याख्या करना और उस पर अपने विचार प्रकट करना भी समालोचना ही है, किन्तु इस स्तर पर शास्त्रीय पद्धति से समालोचना करने की प्रवृत्ति विद्यार्थियों में उत्पन्न होनी चाहिए और इसके लिए उन्हें समीक्षाशास्त्र की सामान्य बातें जान लेनी चाहिए—

(१) कविता की समालोचना और उसके आस्वादन के लिए सर्वप्रथम उसके प्रतिपाद्य विषय को हृदयंगम करना आवश्यक है। यह प्रतिपाद्य अथवा वर्ण्य विषय किसी भी भाव, विचार, अनुभूति, प्राकृतिक सौन्दर्य तथा जीवन एवं जगत की समस्याओं के संबंध में हो सकता है।

(२) कवि के विचार एवं दृष्टिकोण तथा उन्हें प्रभावित करनेवाली तत्कालीन सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों, साहित्यिक परंपराओं का अध्ययन भी आवश्यक है। कवि की विचारधारा इसी पृष्ठभूमि पर बनती है, अतः उसकी कृतियों का अध्ययन और मूल्यांकन इसी के आलोक में होना चाहिए।

(३) कविता के आस्वादन और उचित समालोचना के लिए यह आवश्यक है कि आलोचक के हृदय में कवि के साथ सहानुभूति हो अर्थात् वह कवि के विचारों तथा उसके युग की मान्यताओं को पूरी तरह समझ सके। अपने युग की तथा अपनी मान्यताओं एवं पूर्वाग्रहों के ही संदर्भ में कवि की कृतियों की समीक्षा उचित नहीं होगी। तुलसी के आदर्शों के आधार पर **'साकेत'** का और **'साकेत'** के आदर्शों के आधार पर **'रामचरितमानस'** का मूल्यांकन उचित नहीं कहा जा सकता।

(४) कवि की किसी एक कविता के आस्वादन के लिए उसके पूरे ग्रंथ का अनुशीलन सहायक होता है। इसी प्रकार कवि के किसी ग्रंथ के आस्वादन के लिए उसकी अन्य कृतियों का भी अध्ययन समयानुक्रम एवं तुलनात्मक विधि से उपयोगी होता है। यदि हम उस कवि की समग्र रूप से आलोचना करना चाहते हैं तो उसके पूर्ववर्ती एवं समकालीन कवियों का भी अध्ययन आवश्यक होगा। अर्थात् जितनी ही अधिक विस्तृत एवं व्यापक पृष्ठभूमि में हम किसी रचना का अध्ययन करेंगे उतना ही अधिक हम उसका आस्वादन कर सकेंगे और उसकी समालोचना अधिक उपयुक्त हो सकेगी।

(५) कविता के आस्वादन के लिए उसके वर्ण्य विषय अर्थात् भाव एवं विचार पक्ष का ही अध्ययन पर्याप्त नहीं है बल्कि उसकी अभिव्यंजना अर्थात् शैलीपक्ष से भी अभिज्ञ होना आवश्यक है। रस, अलंकार, छंद, गुण, वर्णविन्यास शब्द शक्ति, गति, यति आदि साहित्यिक सौन्दर्य-तत्त्वों के अनुशीलन के बिना किसी कविता का आस्वादन नहीं किया जा सकता। कवि की शब्द-योजना, कल्पना, चित्रमयता एवं रूप-विधान से भी परिचित होना आवश्यक है।

(६) साहित्यिक समालोचना स्वयं एक सृजनात्मक क्रिया है और अन्य सृजनात्मक क्रियाओं की भाँति इसे सीखने के लिए भी अच्छे नमूनों की आवश्यकता पड़ती है। अत: अच्छी समालोचनाओं का अध्ययन करना चाहिए। वे कविता के रसास्वादन में भी सहायक होती हैं।

काव्य के रूप

हिन्दी-कविता का विकास मुख्यत: दो रूपों में मिलता है :

(क) प्रबंध, (ख) मुक्तक।

प्रबंध के अंतर्गत तीन रूप मिलते हैं—

(क) महाकाव्य, (ख) खंडकाव्य, और (ग) आख्यानक गीतियाँ।

मुक्तक रचनाओं के भी दो रूप मिलते हैं—

(१) पाठ्य मुक्तक, और (२) गेय मुक्तक

संक्षेप में इनके लक्षण निम्नलिखित हैं :

महाकाव्य—महाकाव्य में जीवन का समग्र रूप में चित्रण होता है। उसमें प्राय: जातीय जीवन को उसकी अनेकानेक विशेषताओं के साथ चित्रित किया जाता है। इसकी कथा इतिहास सिद्ध होती है। इसका नायक उदात्त एवं महत्चरितवाला होता है और इसमें महत्-कार्यों का वर्णन किया जाता है। महाकाव्य में कथा की धारावाहिकता तो रहती है, पर वह नायक के जीवन की दैनंदिनी नहीं है। हृदय को रमानेवाले मर्मिक स्थलों का ही उसमें वर्णन होता है (जैसे—'**रामचरितमानस**' में सीता-स्वयंवर, रामवनगमन, चित्रकूट सभा, सीताहरण, लक्ष्मणशक्ति आदि) पर इनके विकास में सुसंबद्धता और एकसूत्रता

बनी रहती है। आचार्यों के अनुसार महाकाव्य में शृंगार, वीर और शांत रसों में से कोई एक रस अंगी रूप में रहता है।

आधुनिक युग में महाकाव्य की उपर्युक्त मान्यताओं में परिवर्तन हुआ है। इतिहास-सिद्ध कथा की जगह मानव-जीवन-संबंधी कोई भी समस्या या घटना कथावस्तु बन सकती है। इसी प्रकार चरित्र की दृष्टि से कोई भी सामान्य जन, किसान, श्रमिक महाकाव्य का नायक हो सकता है। शैली संबंधी रूढ़ियों का भी परित्याग कर दिया गया है, पर उसका गरिमामयी होना आवश्यक है। जीवन के आदर्शों की स्थापना के स्थान पर अब यथार्थ जीवन की अभिव्यक्ति और बाह्य एवं अंतर्द्वन्द्वों के चित्रण पर बल दिया जाने लगा है। **'पदमावत'**, **'रामचरितमानस'**, **'साकेत'** और **'कामायनी'** हिन्दी के प्रसिद्ध महाकाव्य हैं।

खंडकाव्य—इसमें जीवन के एक पक्ष अथवा एक रूप का ही वर्णन किया जाता है, पर यह पक्ष अपने आप में पूर्ण होता है। इसमें किसी एक ही घटना की प्रधानता होती है और मानव जीवन के एक ही अंग पर प्रकाश डाला जाता है। पूरी रचना में प्राय: एक ही छंद प्रयुक्त होता है। **'पंचवटी'**, **'जयद्रथ-वध'**, **'नहुष'**, **'सुदामा-चरित'**, **'स्वप्न'**, **'मिलन'**, **'पथिक'** आदि खंडकाव्य के उदाहरण हैं।

आख्यानक गीतियाँ—काव्यरूप की दृष्टि से आख्यानक गीतियाँ महाकाव्य एवं खंडकाव्य से सर्वथा भिन्न हैं। उन्हें पद्यबद्ध कहानी ही समझना चाहिए। उनमें युद्ध, शौर्य, पराक्रम, त्याग, बलिदान, प्रेम, करुणा आदि भावों के प्रेरक एवं उद्बोधक घटना-चित्रों का विकास होता है। इनकी शैली भी सरल और स्पष्ट होती है। वर्णन-प्रवाह स्वच्छंद होता है। विस्तृत वर्णन-स्थल कम होते हैं। इनमें गीतिमत्ता और नाटकीय तत्त्व मुख्य रूप से पाए जाते हैं। **'झाँसी की रानी'**, **'रंग में भंग'**, **'विकट भट'** आदि इसके उदाहरण हैं।

मुक्तक काव्य—प्रबंध काव्य में जहाँ जीवन की अनेकरूपता अभिव्यक्त होती है और खंडकाव्य में जीवन के विविध रूपों में से किसी एक रूप या अंश का वर्णन रहता है, वहाँ मुक्तक काव्य में किसी एक अनुभूति, भाव या कल्पना का चित्रण किया जाता है। इसमें प्रबंध काव्य का-सा तारतम्य नहीं रहता, बल्कि इसका प्रत्येक छंद अपने आप में पूर्ण और स्वतंत्र रूप से रसानुभूति कराने में समर्थ होता है।

मुक्तक काव्य के निम्नलिखित दो भेद हैं :

(१) **पाठ्य मुक्तक** में विषय की प्रधानता रहती है। भाव की अपेक्षा इसमें प्राय: विचार,

लोकव्यवहार अथवा नैतिक भावनाओं का प्रतिपादन होता है। **'बिहारी-सतसई'** तथा देव और मतिराम की रचनाएँ पाठ्य मुक्तकों के सुंदर उदाहरण हैं। कबीर, तुलसी, रहीम के नीति तथा भक्ति-विषयक दोहे और सवैये भी इसके अंतर्गत आते हैं।

(२) **गेय मुक्तक** प्रगीत काव्य कहलाते हैं। अंग्रेज़ी के लिरिक का इसे समानार्थी माना जाता है। इस प्रकार के मुक्तकों में कवि का निजत्व एवं आत्मपरकता रहती है। भावनाओं की प्रधानता होती है और इसी कारण इनमें रागात्मकता आ जाती है। ये स्वर, लय और ताल में बँधे हुए होते हैं और गेय होते हैं। कबीर, सूर, तुलसी, मीरा, प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी और बच्चन के गीत प्रगीत मुक्तक के अंतर्गत गृहीत किए जाते हैं।

(क) प्रकृति का आह्वान

१. बादल ओ !

हम नए-नए धानों के बच्चे तुम्हें पुकार रहे हैं—
बादल ओ ! बादल ओ ! बादल ओ !
हम बच्चे हैं,
(चिड़ियों की परछाईं पकड़ रहे हैं उड़-उड़।)
हम बच्चे हैं,
हमें याद आई है जाने किन जनमों की—
आज हो गया है जी उन्मन !
तुम कि पिता हो—
इंद्रधनुष बरसो !
कि फूल बरसो,
कि नींद बरसो—
बादल ओ !
हम कि नदी को नहीं जानते,
हम कि दूर सागर की लहरें नहीं माँगते !
हमने सिर्फ़ तुम्हें जाना है,
तुम्हें माँगते हैं।
आर्द्रा के पहले झोंके में तुम को सूँघा है—

पहला पत्ता बढ़ा दिया है ।
लिए हाथ में हाथ हवा का—
खेतों की मेड़ों पर घिरते तुम को देखा है,
ओठों से विवश छू लिया है !
ओ सुनो, बीज-वर्षी बादल,
ओ सुनो, अन्न-वर्षी बादल,
हम पंख माँगते हैं,
हम नए फेन के उजले-उजले
शंख माँगते हैं,
हम बस कि माँगते हैं
बादल ! बादल !
घर बादल, आँगन बादल,
सारे दरवाज़े बादल !
तन बादल, मन बादल,
ये नन्हें हाथ-पाँव बादल—
हम बस कि माँगते हैं बादल, बादल !
तुम गरजो—
पेड़ चुरा लेंगे गर्जन,
तुम कड़को—
चट्टानों में बिखर जाएगी वह कड़कन !
तुम बरसो—
फूट पड़ेगी प्राणों की उमड़न-कसकन !
फिर हम अबाध भीजेंगे, झूमेंगे—

ये हरी भुजाएँ
नील दिशाओं को छू आएँगी—
फिर तुम्हें वनों में पाखी गाएँगे,
फिर नए जुते खेतों से हवा-हवा बस जाएगी !
फिर नयन तुम्हें जोहेंगे जूही के जादू-वन में,
आमों के पार
साँझ के सूने टीलों पर!
फिर पवन उँगलियाँ तुम्हें चीन्ह लेंगी—
पौधों में, पत्तों में, कत्थई कोंपलों में !
तुम कि पिता हो—
कहीं तुम्हारे संवेदन में भी तो वही कंप होगा—
जो हमें हिलाता है !
ओ सुनो रंग-वर्षी बादल,
ओ सुनो गंध-वर्षी बादल,
हम अधजनमे धानों के बच्चे
तुम्हें माँगते हैं !

—केदारनाथ सिंह

२. पर्वत प्रदेश में पावस

पावस ऋतु थी, पर्वत प्रदेश,
पल-पल परिवर्तित प्रकृति-वेश।
मेखलाकार पर्वत अपार
अपने सहस्र दृग-सुमन फाड़,
अवलोक रहा है बार-बार
नीचे जल में निज महाकार,
—जिसके चरणों में पला ताल
दर्पण-सा फैला है विशाल !

गिरि का गौरव गाकर झर-झर
मद में नस-नस उत्तेजित कर
मोती की लड़ियों-से सुंदर
झरते हैं झाग भरे निर्झर !
गिरिवर के उर से उठ-उठ कर
उच्चाकांक्षाओं-से तरुवर
हैं झाँक रहे नीरव नभ पर,
अनिमेष, अटल, कुछ चिन्ता पर !

उड़ गया, अचानक लो, भूधर
फड़का अपार वारिद के पर !
रव-शेष रह गए हैं निर्झर !
है टूट पड़ा भू पर अंबर !
धँस गए धरा में सभय शाल !
उठ रहा धुँआ, जल गया ताल !
—यों जलद-यान में विचर-विचर
था इंद्र खेलता इंद्रजाल !

—सुमित्रानंदन पंत

३. ब्रज की संध्या

दिवस का अवसान समीप था।
गगन था कुछ लोहित हो चला।
तरु-शिखा पर थी अब राजती
कमलिनी-कुल-वल्लभ की प्रभा।

विपिन-बीच विहंगम-वृंद का
कलनिनाद विवर्द्धित था हुआ।
ध्वनिमयी विविधा विहगावली
उड़ रही नभ-मंडल मध्य थी।

अधिक और हुई नभ-लालिमा।
दश दिशा अनुरंजित हो गई।
सकल पादप-पुंज हरीतिमा
अरुणिमा विनिमज्जित-सी हुई।

झलकने पुलिनों पर भी लगी
गगन के तल की यह लालिमा।
सरि-सरोवर के जल में पड़ी
अरुणता अति ही रमणीय थी।

अचल के शिखरों पर जा चढ़ी
किरण पादप-शीश-विहारिणी।

तरणि-बिम्ब तिरोहित हो चला
गगन-मंडल मध्य शनैः शनैः।

निमिष में वन-व्यापित-वीथिका
विविध धेनु-विभूषित हो गई।
धवल धूसर वत्स-समूह भी
विलसता जिनके दल साथ था।

जब हुए समवेत शनैः शनैः
सकल गोप सधेनु समंडली।
तब चले ब्रज-भूषण को लिए
अति अलंकृत गोकुल ग्राम को।

गगन-मंडल में रज छा गई।
दश दिशा बहु शब्दमयी हुई।
विशद गोकुल के प्रति गेह में
बह चला बहु स्रोत विनोद का।

सुन पड़ा स्वर ज्यों कल-वेणु का,
सकल ग्राम समुत्सुक हो उठा।
हृदय-यंत्र निनादित हो गया
तुरत ही अनियंत्रित भाव से।

इधर गोकुल से जनता कढ़ी,
उमगती पगती अति मोद में।
उधर आ पहुँची बलवीर की
विपुल-धेनु-विमंडित-मंडली ।

इधर था इस भाँति समा बँधा,
उधर व्योम हुआ कुछ और ही।
अब न था उसमें रवि राजता
किरण भी न सुशोभित थी कहीं।

खग-समूह न था अब बोलता।
विटप थे बहु नीरव हो गए।
मधुर मंजुल मत्त अलाप के
अब न यंत्र बने तरु-वृंद थे।

विहग-नीरवता-उपरांत ही
रुक गया स्वर शृंगविषाण का
कल-अलाप समापित हो गया,
पर रही बजती वर-वंशिका।

—अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

४. चाँदनी

नयन-मन-उन्मादिनी
आज निकली चाँदनी
आज केवल शून्य नीचे, शून्य ऊपर,
स्वर्ग की संपूर्ण सुषमा आज भू पर
सब कहाँ, हैं आज जो दो-चार तारे,
हेर वसुधा के हृदय का हार, हारे !
उमड़ता ज्यों क्षीर-सागर फेन-निर्मल
चाँद उस में है खिला ज्यों शुभ्र शतदल ।

देखना हो, रूप यह अनमोल देखो,
झूमती, झुकती, थिरकती, काँपती-सी,
पवन बहती प्रति-चरण कुछ भाँपती-सी ।
मुग्ध लतिकाएँ, कुसुम-परिपूर्ण अंचल,
बेवजह रह-रह टहनियाँ मुसकुरातीं,
होश होता ही नहीं, सब मस्त, मातीं ।
चेतना प्रत्येक जड़ में आज आई,
आज रज में स्वच्छ सात्विकता समाई ।
फूल की पहचान सरस, सुबास केवल,
आज मुख दिखता नहीं, विश्वास केवल !

ज्योति का प्लावन, प्रकाश, प्रकाश केवल,
आज चिन्ताएँ नहीं, उल्लास केवल,
स्थिर न कोई, नृत्य केवल, लास केवल,
तृप्ति होती ही नहीं, है प्यास केवल,
टकटकी बँधती, जिधर है दृष्टि जाती,
आज सब दिन से अधिक है सृष्टि भाती,
किस तरह इससे भला मुँह मोड़ जाऊँ?
अब कहाँ ऐसी धरणि को छोड़ जाऊँ?
काश मैं इस चाँदनी-सा व्याप्त होता,
स्वच्छ, निर्मल, विश्व भर का आप्त होता,
फैलता सम-भाव से जल और थल पर
एक-सा—टूटी कुटी, ऊँचे महल पर,
डोलता मैं सिन्धु की चंचल लहर पर,
बोलता गिरिराज के उन्नत शिखर पर,
सब किसी का प्यार पाता, जी जुड़ाता,
लोक में मैं स्वर्ग का आलोक लाता,
वह ललित आलोक करता लोल लोचन,
वह शिशिर-आलोक होता ताप-मोचन,
वह मधुर आलोक जिससे प्राण हुलसे,
वह रुचिर आलोक जिसमें विश्व विहँसे,
सब किसी से जोड़ता मैं स्निग्ध नाता,
और आजीवन उसे हँस-हँस निभाता!

—जानकीवल्लभ शास्त्री

प्रश्नावली

१. बादल ओ !

१. 'नए-नए धानों के बच्चे' और 'अधजनमे धानों के बच्चे' से यहाँ क्या तात्पर्य है ? वे बादल से क्या माँगते हैं ?

२. बादल को बीज-वर्षी, अन्न-वर्षी, गंध-वर्षी और रंग-वर्षी क्यों कहा गया है ?

३. इस कविता की उन पंक्तियों को चुनिए, जिनमें वर्षा के अभाव के कारण व्याकुल और उत्कंठित होकर वर्षा का आवाहन किया गया है।

४. पठित कविता के आधार पर धान के पौधों की ओर से बादल को एक पत्र लिखिए जिसमें अति शीघ्र वर्षा कराने के लिए याचना हो।

५. मानवीकरण से आप क्या समझते हैं ? इस कविता में मानवीकरण का प्रयोग कहाँ-कहाँ हुआ है ? उन्हें स्पष्ट कीजिए।

६. पठित कविता के आधार पर नई कविता की कुछ विशेषताएँ बताइए।

७. निम्नांकित पंक्तियों के भाव-सौन्दर्य को स्पष्ट कीजिए—

(१) इंद्रधनुष बरसो·········बादल ओ !

(२) आर्द्रा के पहले·········बढ़ा दिया है।

(३) हम पंख माँगते हैं ·········माँगते हैं।

(४) ये हरी भुजाएँ·········छू आएँगी।

(५) फिर पवन उँगलियाँ·········कोंपलों में।

२. पर्वत प्रदेश में पावस

१. 'पल-पल परिवर्तित प्रकृति-वेश' से कवि का क्या तात्पर्य है ? इस कविता के आधार पर वर्षा ऋतु में प्रकृति के निरंतर परिवर्तनशील रूप का वर्णन कीजिए।

२. पर्वत की विशालता को कवि ने किस प्रकार चित्रित किया है ?

३. पर्वत, ताल, निर्झर, वृक्ष और बादल के सौन्दर्य का चित्रण कवि ने किस प्रकार किया है ?

४. 'पल-पल परिवर्तित प्रकृति-वेश' में कौन-सा अलंकार है ? यह अलंकार कविता में अन्यत्र कहाँ-कहाँ है ?

५. छायावादी कविता की किन्हीं दो विशेषताओं को इस कविता से चुनिए ।

६. इस कविता के उन स्थलों को चुनिए जहाँ ध्वन्यात्मक सौन्दर्य अधिक उभरा है ।

७. इस कविता की शैली बहुत चित्रात्मक है । इससे उभरने वाले चित्रों में आपको कौन-सा चित्र सबसे अच्छा लगा ?

३. ब्रज की संध्या

१. कवि ने संध्याकालीन किन दृश्यों का चित्रण किया है ?

२. कवि ने संध्या के दृश्यों में किस प्रकार परिवर्तन दिखाया है ?

३. किरण, पक्षी और गायों के विषय में कवि ने क्या कहा है ?

४. श्रीकृष्ण की वंशी का गोकुलवासियों पर क्या प्रभाव पड़ा ?

५. कवि द्वारा वर्णित ब्रज की संध्या का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए ।

६. इस कविता के प्रारंभिक एवं अंतिम छंदों में चित्रित संध्या के रूपों का अंतर स्पष्ट कीजिए ।

७. निम्नलिखित समस्त पदों का अर्थ लिखिए—

कमलिनी-कुल-वल्लभ, विपुल-धेनु-विमंडित-मंडली, वन-व्यापित-वीथिका ।

८. इस कविता की भाषा और छंद पर एक टिप्पणी लिखिए ।

४. चाँदनी

१. चाँदनी को देखकर कवि के हृदय में क्या-क्या शंकाएँ जागती हैं ?

२. प्रस्तुत कविता के आधार पर चाँदनी रात में प्रकृति की शोभा का वर्णन कीजिए ।

३. अर्थ स्पष्ट कीजिए—

(क) आज केवल शून्य नीचे, शून्य ऊपर,
स्वर्ग की संपूर्ण सुषमा आज भू पर ।

(ख) काश मैं इस चाँदनी-सा.........ऊँचे महल पर।

४. निम्नलिखित उक्ति में निहित अलंकार को स्पष्ट कीजिए—

चाँद उसमें है खिला ज्यों शुभ्र शतदल।

५. 'स्वर्ग के आलोक' की विशिष्टताओं को बतलाइए।

६. इस कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है ?

७. कवि चाँदनी के समान व्याप्त होने की लालसा क्यों करता है ?

८. कविता की अंतिम पंक्तियों में कवि किस प्रकार के प्रकाश को लाने का संकेत करता है ?

सामान्य

१. भाव, भाषा और छंद की दृष्टि से इस खंड की चारों कविताओं पर तुलनात्मक टिप्पणी लिखिए।

२. इन कविताओं से मानवीकरण के कुछ सुंदर उदाहरण चुनिए।

३. इन कविताओं में कुछ ऐसे स्थलों का संकेत कीजिए जहाँ प्रकृति का बहुत चित्रात्मक वर्णन हो।

४. इन कविताओं में सबसे अच्छी कविता आप को कौन-सी लगी ? सकारण उत्तर दीजिए।

टिप्पणियाँ

बादल ओ !

चिड़ियों की परछाईं — छोटे बच्चे चिड़ियों को न पकड़ पाने की स्थिति में उनकी परछाईं पकड़ने की चेष्टा करते हैं। यहाँ इसी ओर संकेत है।

आर्द्रा — सत्ताइस नक्षत्रों में से एक।

पर्वत प्रदेश में पावस

शाल — सीधा ऊँचा उगनेवाला एक वृक्ष, साखू

इंद्रजाल — जादू

चाँदनी

लास — कोमल भाव वाला एक नृत्य

(ख) देश-प्रेम और वीरता

१. हमारा प्यारा भारतवर्ष

हिमालय के आँगन में उसे प्रथम किरणों का दे उपहार,
उषा ने हँस अभिनंदन किया और पहनाया हीरक हार।
जगे हम, लगे जगाने विश्व, लोक में फैला फिर आलोक।
व्योम-तम-पुंज हुआ तब नष्ट, अखिल संसृति हो उठी अशोक।
विमल वाणी ने वीणा ली कमल कोमल कर में सप्रीत।
सप्तस्वर सप्तसिन्धु में उठे, छिड़ा तब मधुर साम-संगीत।
बचाकर बीज रूप से सृष्टि, नाव पर झेल प्रलय का शीत,
अरुण केतन लेकर निज हाथ, वरुण पथ में हम बढ़े अभीत।
सुना है दधीचि का वह त्याग, हमारा जातीयता विकास।
पुरंदर ने पवि से है लिखा, अस्थि-युग का मेरे इतिहास।
सिन्धु-सा विस्तृत और अथाह एक निर्वासित का उत्साह।
दे रही अभी दिखाई भग्न मग्न रत्नाकर में वह राह।
धर्म का ले लेकर जो नाम हुआ करती बलि, कर दी बंद।
हमीं ने दिया शांति-संदेश, सुखी होते देकर आनंद।
विजय केवल लोहे की नहीं, धर्म की रही धरा पर धूम।
भिक्षु हो कर रहते सम्राट, दया दिखलाते घर-घर घूम।

यवन को दिया दया का दान, चीन को मिली धर्म की दृष्टि,
मिला था स्वर्ण-भूमि को रत्न, शील की सिंहल को भी सृष्टि।
किसी का हमने छीना नहीं, प्रकृति का रहा पालना यहीं।
हमारी जन्मभूमि थी यहीं, कहीं से हम आए थे नहीं।
जातियों का उत्थान-पतन, आँधियाँ, झड़ी, प्रचंड समीर।
खड़े देखा, झेला हँसते, प्रलय में पले हुए हम वीर।
चरित थे पूत, भुजा में शक्ति, नम्रता रही सदा संपन्न।
हृदय के गौरव में था गर्व, किसी को देख न सके विपन्न।
हमारे संचय में था दान, अतिथि थे सदा हमारे देव।
वचन में सत्य, हृदय में तेज, प्रतिज्ञा में रहती थी टेव।
वही है रक्त, वही है देश, वही साहस, है वैसा ज्ञान।
वही है शांति, वही है शक्ति, वही हम दिव्य आर्य-संतान।
जिएँ तो सदा उसी के लिए, यही अभिमान रहे, यह हर्ष,
निछावर कर दें हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारतवर्ष।

—जयशंकर प्रसाद

२. शौर्य-वर्णन

साजि चतुरंग-सैन अंग में उमंग धारि,
सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है।
भूषन भनत नाद-बिहद नगारन के,
नदी-नद मद गैबरन के रलत है।
ऐल-फैल खैल-भैल खलक में गैल-गैल,
गजन की ठैल-पैल सैल उसलत है।
तारा सो तरनि धूरि-धारा में लगत जिमि,
थारा पर पारा पारावार यों हलत है।

छूटत कमान बान बंदूकरू कोकबान,
मुसकिल होत मुरचानहू की ओट में।
ताही समै सिवराज हुकुम कै हल्ला कियो,
दावा बाँधि द्वेषिन पै बीरन लै जोट में।
भूषन भनत तेरी हिम्मति कहाँ लौं कहौं,
किम्मति इहाँ लगि है जाकी भट-झोट में।
ताव दै-दै मूँछन कँगूरन पै पाँव दै-दै,
घाव दै-दै अरि-मुख कूद परें कोट में।

बासव-से बिलसत बिक्रम की कहा चली,
बिक्रम लखत बीर बखत-बलंद के।
जागे तेज-बृंद सिवाजी नरिन्द मसनंद,
माल-मकरंद कुलचंद साहिनंद के।
भूषन भनत देस-देस बैरि-नारिन मैं,
होत अचरज घर-घर दुख-दंद के।
कनक लतानि इंदु, इंदु माहिं अरबिन्द,
झरैं अरबिन्दन तें बुंद मकरंद के।

भुज-भुजगेस की बै संगिनी भुजंगिनी-सी,
खेदि खेदि खाती दीह दारुन दलन के।
बखतर पाखरन बीच धँसि जाति, मीन
पैरि पार जात परबाह ज्यों जलन के।
रैया राव चंपति के छत्रसाल महाराज,
भूषन सकै करि बखान को बलन के।
पच्छी परछीने ऐसे परे पर छीने बीर,
तेरी बरछी ने बर छीने हैं खलन के।

निकसत म्यान तें मयूखैं प्रलै-भानु कैसी,
फारैं तम तोम-से गयंदन के जाल को।
लागति लपकि कंठ बैरिन के नागिन-सी,
रुद्रहिं रिझावै दै दै मुंडन की माल को।
लाल छितिपाल छत्रसाल महाबाहु बली,
कहाँ लौं बखान करौं तेरी करवाल को।
प्रतिभट-कटक कटीले केते काटि काटि,
कालिका-सी किलकि कलेऊ देति काल को।

३. उलाहना

तुम्हीं जब याद की डोलें भुलाते हो
भला फिर प्यार का अभिमान क्यों जीए ?
तुम्हीं बलिदान के मंदिर गिराते हो
भला अभिसार का मेहमान क्यों जीए ?

भुला दीं सूलियाँ, जैसे जमाने में।
सभी कुछ तालियों से पा लिया तुमने।
न तुम बहले, न युग बहला, भले साथी,
बताओ तो किसे बहला लिया तुमने ?

बड़े रस्ते, बड़े पुल, बाँध क्या कहने !
बड़े ही कारखाने हैं, इमारत है।
जरा पोछूँ इन्हें, आँसू उभर आए,
बड़प्पन यह न छोटों की इबारत है।

जरा छोटों से घुल मिलकर रहो जीवन !
बड़े सब मिट गए, छोटे सलामत हैं,
बड़ों से डर, जरा छोटों पे मर गाफिल।
बड़ी स्वादिष्ट छोटों की अमानत है।

तुम्हारी चरण-रेखा देखते हैं वे
उन्हें भी देखने का तुम समय पाओ।
तुम्हारी आन पर कुरबान जाते हैं
अमीरी से जरा नीचे उतर आओ।

तुम्हारी बाँह में बल है जमाने का
तुम्हारे शब्द में जादू जगत का है।
कभी कुटिया-निवासी बन जरा देखो
कि दलिया न्योतता रमजू भगत का है।

गई सदियाँ कि यह बहती रही गंगा
गनीमत है कि तुमने मोड़ दी धारा।
बड़ी बाढ़ोमयी उद्दंड नदियों की
बना दी पत्थरोंवाली नई कारा!

उठो, कारा बनाओ इस गरीबी की
रहो मत दूर, अपनों के निकट आओ
बड़े गहरे लगे हैं घाव सदियों के
मसीहा, इनको ममता भरके सहलाओ।

—माखनलाल चतुर्वेदी

प्रश्नावली

१. हमारा प्यारा भारतवर्ष

१. निम्नलिखित पंक्तियों में संकलित अंतर्कथाओं को स्पष्ट कीजिए—

(क) बचाकर बीज रूप से सृष्टि·········शीत ।

(ख) सुना है दधीचि का·········मेरे इतिहास ।

२. कवि ने प्राचीन भारतीयों की किन-किन जातीय एवं चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख किया है ?

३. कवि ने इस कविता में किन-किन ऐतिहासिक घटनाओं की ओर संकेत किया है ?

४. कवि इस कविता के द्वारा हमें क्या संदेश दे रहा है ?

५. निम्नलिखित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए—

(क) विमल वाणी ने·········संगीत ।

(ख) विजय केवल लोहे की नहीं·········धूम ।

२. शौर्य-वर्णन

१. इन छंदों में से प्रत्येक छंद का एक-एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए ।

२. इन छंदों के आधार पर शिवाजी के पराक्रम का वर्णन कीजिए ।

३. अंतिम कवित्त के आधार पर छत्रसाल के युद्ध-कौशल का वर्णन कीजिए ।

४. अंतिम कवित्त के आधार पर छत्रसाल की तलवार के चमत्कार का वर्णन कीजिए ।

५. निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार बताइए :—

(अ) गजन की ठैल-पैल सैल उसलत है ।

(आ) तारा सो तरनि·········हलत है ।

(इ) भुज-भुजगेस·········दलन के ।

(ई) पच्छी परछीने·········खलन पै ।

६. निम्नलिखित [illegible] में निहित काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए :

(क) [illegible] इंदु, इंदु माहि [illegible],
[illegible] ते बुंद [illegible]मकरंद के ।

(ग) [illegible] बीच [illegible], [illegible]
[illegible] परवाह ज्यों जलन के ।

७. [illegible] की कविता से भूषण की कविता किस प्रकार भिन्न है ?

३. [illegible]

१. यह [illegible] को लक्ष्य करके लिखी गई है ?

२. कवि ने 'छोटे' [illegible] बताया है ?

३. निम्नलिखित [illegible] आशय स्पष्ट करो—

(क) [illegible] मंदिर गिराते हो ।

(ख) [illegible]……सजाते हैं ।

(ग) तुम्हारी [illegible]…… जगत का है ।

(घ) [illegible] जाओ ।

४. [illegible]

[illegible]

१. [illegible] का साहित्यिक परिचय दीजिए—
[illegible]कर प्रसाद, भूषण ।

२. (क) [illegible] खंड में [illegible] कविताओं में [illegible] ओजपूर्ण शब्दों और पदों को चुनिए ।

(ख) [illegible] रस का स्थायी भाव क्या है ? वह कैसे अभिव्यक्त होता है ?

(ग) [illegible] प्रमुख [illegible] के दो-दो [illegible] ।

३. इस खंड की तीनों कविताओं के आधार पर भारतीय संस्कृति की विशेषता अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए ।

४. इस खंड की तीनों कविताओं के समान भाव स्पष्ट कीजिए।

५. भूषण और दिनकर की कविताओं के ओजगुण की तुलना कीजिए।

६. पठित कविताओं के आधार पर बताइए कि अलग-अलग कवियों ने किस-किस रूप में अपने देश-प्रेम की भावना को व्यक्त किया है ?

टिप्पणियाँ

हमारा प्यारा भारतवर्ष

सप्त सिन्धु — पंजाब की पाँच नदियों और गंगा-यमुना से घिरा प्रदेश

साम-संगीत — सामवेद का गायन

अरुण केतन — सूर्य की लाल रंग की पताका

वरुण-पथ — जलमार्ग

पुरंदर — इंद्र

पवि — वज्र

एक निर्वासित — राम

वह राह — रामेश्वरम् और श्रीलंका के बीच श्रीरामचंद्र जी द्वारा बनाया गया पुल

स्वर्ण-भूमि — स्वर्णद्वीप अर्थात् सुमात्रा

शील — शुद्धाचरण, बौद्धमत के आचरण संबंधी पाँच सिद्धांत (सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य)

शौर्य-वर्णन

चतुरंग-सैन — हाथी, घोड़े, रथ और पैदल इन चार अंगों से युक्त सेना

गैबर — गयवर, गजवर, उत्तम हाथी

ऐल-फैल — सैन्य-समूह का फैलाव

कमान — धनुष

कोकबान — एक प्रकार का तीर, जिसके चलने से एक विशेष ध्वनि निकलती है

मुरचा — मोर्चाबंदी, युद्ध में सेना की रक्षार्थ खोदी हुई खाई

दावा — धावा, धकेलना

बासव — इंद्र

मसनंद — (मसनद) सहारा, आश्रय

बखत-बलंद — सौभाग्यशाली

माल मकरंद कुलचंद — मालोजी के कुल को प्रकाशित करनेवाला चंद्रमा, शिवाजी

कनक लता — स्वर्णलता सी सुंदर शत्रु-स्त्रियाँ

पाखर — लड़ाई में हाथी या घोड़े की रक्षार्थ पहनाई जाने वाली लोहे की झूल

रैया राव चंपत — रावराज चंपत राय

परछीने बीर — जिनके पर कट गए हैं ऐसे (पक्षी) तथा प्रच्छिन्न (जिनके अंग कट गए हैं ऐसे शत्रु योद्धा)

३. उलाहना

अभिसार — प्रेमी से मिलने के लिये छिपकर जाना

इबारत — लेख, [illegible]

गाफिल — गफलत करने वाला, लापरवाह

(ग) भक्ति

१. सरस्वती-वंदना

वर दे, वीणावादिनी वर दे।
प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव
भारत में भर दे।

काट अंध-उर के बंधन-स्तर
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर,
कलुष-भेद तम हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे।

नव गति, नव लय, ताल-छंद नव,
नवल कंठ, नव जलद-मंद्ररव,
नव नभ के नव विहग-वृंद को
नव पर नव स्वर दे।

—सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

२. भक्ति के दोहे

सात समँद की मसि करौं, लेखनि सब बनराइ ।
धरती सब कागद करौं, हरि गुन लिखा न जाइ ।।

कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढै बन माहिं ।
ऐसै घटि-घटि राम है, दुनियाँ देखै नाहिं ।।

कबिरा यह घर प्रेम का, खाला का घर नाहिं ।
सीस उतारै भुइँ धरै, सो पैठे घर माहिं ।।

माला फेरत जुग गया, मिटा न मन का फेर ।
कर का मनका डारि कै, मन का मनका फेर ।।

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि है मैं नाहिं ।
प्रेम गली अति साँकरी, जामें दो न समाहिं ।।

विरह-कमंडलु कर लिए, बैरागी दो नैन ।
माँगे दरस-मधूकरी, छके रहें दिन-रैन ।।

—कबीर

३. भक्ति के पद

मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै ।
जैसे उड़ि जहाज को पंछी, फिरि जहाज पर आवै ।
कमल-नैन को छाँड़ि महातम, और देव को ध्यावै ।
परम गंग को छाँड़ि पियासौ, दुरमति कूप खनावै ।
जिहिं मधुकर अंबुज-रस चाख्यौ, क्यों करील-फल भावै ।
सूरदास प्रभु कामधेनु तजि, छेरी कौन दुहावै ।

अविगत-गति कछु कहत न आवै ।
ज्यौं गूँगो मीठे फल को रस अंतरगत ही भाव ।
परम स्वाद सबही सु निरंतर अमित तोष उपजावै ।
मन-बानी कौं अगम-अगोचर, सो जाने जो पावै ।
रूप-रेख-गुन-जाति जुगति बिनु निरालंब कित धावै ।
सब विधि अगम विचारहिं तातैं सूर सगुन-पद गावै ।

रे मन, आपु को पहिचानि ।
सब जनम तें भ्रमत खोयौ, अजहुँ तौ कछु जानि ।
ज्यौं मृगा कस्तूरि भूलै, सु तौ ताकैं पास ।
भ्रमत ही वह दौरि ढूंढ़े, जबहिं पावै बास ।
भरम ही बलवंत सब में, ईसहू कैं भाइ ।
जब भगत भगवंत चीह्नै, भरम मन तें जाइ ।
सलिल सबकौ रंग तिज कै, एक रंग मिलाइ ।
सूर जो द्वै रंग त्यागे, यहै भक्त सुभाइ ।

अब मैं नाच्यो बहुत गुपाल।
काम-क्रोध कौ पहिरि चोलनो, कंठ विषय की माल।
महामोह के नूपुर बाजत, निंदा-सब्द-रसाल।
भरम-भरयो मन भयौ पखावज, चलत असंगत चाल।
तृष्णा नाद करति घट भीतर, नाना विधि दै ताल।
माया को कटि फेंटा बाँध्यौ, लोभ-तिलक दियौ भाल।
कोटिक कला काछि दिखराई, जल-थल सुधि नहिं काल।
सूरदास की सबै अविद्या दूरि करौ नँदलाल।

—सूरदास

४. भक्ति-निवेदन

(१)

अब लौं नसानी अब न नसैहौं !
रामकृपा भवनिसा सिरानी, जागे फिर न डसैहौं।
पायो नाम-चारुचिंतामनि, उर-कर तें न खसैहौं।
स्याम रूप सुचि रुचिर कसौटी, चित-कंचनहिं कसैहौं।
परबस जानि हँस्यो इन इंद्रिन, निज बस ह्वै न हँसैहौं।
मन-मधुकर पन करि तुलसी रघुपति-पद कमल बसैहौं।

(२)

कबहुँक हौं यहि रहनि रहौंगो।
श्री रघुनाथ-कृपालु-कृपा तें संत सुभाव गहौंगो।
यथालाभ संतोष सदा, काहू सों कछु न चहौंगो।
परहित-निरत-निरंतर, मन क्रम बचन नेम निबहौंगो।
परुष वचन अतिदुसह श्रवन सुनि तेहि पावक न दहौंगो।
विगत मान, सम सीतल मन ; पर-गुन, नहिं दोष कहौंगो।
परिहरि देह जनित चिंता, दुख-सुख समबुद्धि सहौंगो।
तुलसीदास प्रभु यहि पथ रहि अविचल हरिभक्ति लहौंगो।

(३)

मन पछितैहै अवसर बीते।
दुर्लभ देह पाइ हरिपद भजु करम बचन अरु ही ते।
सहसबाहु दसबदन आदि नृप बचे न काल बली ते।
हम-हम करि धन-धाम सँवारे, अंत चले उठि रीते।
सुत-बनितादि जानि स्वारथ रत न करु नेह सबहीं ते।
अंतहुँ तोहिं तजैंगे, पामर ! तू न तजै अबहीं ते।
अब नाथहिं अनुरागु जागु जड़ त्यागु दुराशा जी ते।
बुझै कि काम-अगिनि तुलसी कहुँ विषय-भोग बहु घी ते।

(४)

जाउँ कहाँ तजि चरन तिहारे ?
काको नाम पतितपावन जग ? केहि अति दीन पियारे ?
कौने देव बराय बिरद-हित हठि-हठि अधम उधारे ?
खग, मृग, व्याध, पषान, बिटप जड़, जवन कवन सुर तारे ?
देव, दनुज, मुनि, नाग, मनुज सब माया-बिबस विचारे।
तिनके हाथ दासतुलसी प्रभु कहा अपनपौ हारे ?

५. क्या पूजा क्या अर्चन रे ?

क्या पूजा क्या अर्चन रे ?

उस असीम का सुंदर मंदिर मेरा लघुतम जीवन रे।
मेरी श्वासें करती रहतीं नित प्रिय का अभिनंदन रे।
पदरज को धोने उमड़े आते लोचन में जल-कण रे!
अक्षत पुलकित रोम, मधुर मेरी पीड़ा का चंदन रे।

स्नेह-भरा जलता है झिलमिल मेरा यह दीपक मन रे।
मेरे दृग के तारक में नव उत्पल का उन्मीलन रे।
धूप बने उड़ते जाते हैं प्रतिपल मेरे स्पंदन रे।
प्रिय-प्रिय जपते अधर, ताल देता पलकों का नर्तन रे।

क्या पूजा क्या अर्चन रे ?

—महादेवी वर्मा

प्रश्नावली

१. सरस्वती-वंदना

१. कवि ने किस प्रकार भारत के लिए सरस्वती से प्रार्थना की है ?

२. कवि ने किस-किस प्रकार के बंधनों से मुक्ति के लिए प्रार्थना की है ?

३. कविता के अंतिम छंद में 'नव' शब्द की आवृत्ति इतनी बार क्यों की गई है ?

४. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए—

नव गति.........नव स्वर दे ।

५. इस कविता को स्वरबद्ध करके गाने का अभ्यास कीजिए ।

२. भक्ति के दोहे

१. कबीर ने निम्नलिखित भावों को किस प्रकार व्यक्त किया है ?

(क) आडंबर से भगवान नहीं मिलते ।

(ख) ईश्वर सर्वत्र व्याप्त है ।

(ग) भगवान के गुणों का वर्णन असंभव है ।

(घ) ईश्वर-भक्ति का मार्ग सरल नहीं है ।

२. इन दोहों से कबीरदास की भक्ति की कौन-कौन-सी विशेषताएँ प्रकट होती हैं ?

३. भक्ति के पद

१. मन को जहाज का पंछी बताकर सूरदास क्या भाव व्यक्त करना चाहते हैं ?

२. कवि ने लौकिक सुख और आध्यात्मिक सुख में अंतर किस प्रकार स्पष्ट किया है ?

३. सूरदास ने निर्गुण भक्ति की अपेक्षा सगुण भक्ति को क्यों श्रेष्ठ कहा है ?

४. सूरदास ने मन की तुलना कस्तूरी-मृग से क्यों की है ?

५. सूरदास के अनुसार अविद्या मनुष्य को किस प्रकार नचा देती है ?

६. निम्नलिखित पद की व्याख्या कीजिए—
अविगत-गति कछु कहत न आवै ।

७. 'अब मैं नाच्यो बहुत गुपाल' पद का रूपक स्पष्ट कीजिए ।

४. तुलसी के पद

१. कवि किस प्रकार का जीवन बिताने का संकल्प करता है? प्रथम दो पदों के आधार पर उत्तर दीजिए ।

२. 'स्याम रूप सुचि रुचिर कसौटी, चित-कंचनहिं कसैहौं ।' इस पंक्ति के रूपक को स्पष्ट कीजिए ।

३. सांसारिक मनुष्य की वे कौन-सी आशाएँ हैं जिन्हें तुलसी ने दुराशा कहा है?

४. 'जाउँ कहाँ तजि चरन तिहारे' पद के आधार पर सिद्ध कीजिए कि 'राम ही' तुलसी के एक-मात्र आशा और विश्वास हैं ।

५. व्याख्या कीजिए:—
(क) परुष बचन ······नहिं दोष कहौंगो ।
(ख) सुत बनितादि जानि······तू न तजै अबहीं ते ।
(ग) परबस जानि हँस्यो इन इंद्रिन, निज बस ह्वै न हँसैहौं ।

६. इन पदों में आई हुई अंतर्कथाओं में से किन्हीं पाँच का उल्लेख कीजिए ।

५. क्या पूजा क्या अर्चन रे?

१. इस कविता की शीर्षक-पंक्ति का मुख्य भाव क्या है?

२. इस आधार पर कवयित्री के ईश्वर के प्रति समर्पण-भाव को स्पष्ट कीजिए ।

३. इस कविता में निम्नलिखित का सादृश्य किस-किस से दिखाया गया है:
रोम, पीड़ा, मन, दृग, स्पंदन ।

४. इस कविता के सांग रूपक की व्याख्या कीजिए ।

सामान्य

१. निर्गुण और सगुण भक्ति की प्रमुख विशेषताएँ बताते हुए उनका अंतर स्पष्ट कीजिए।

२. सूर और तुलसी के पदों का भाव-साम्य स्पष्ट कीजिए।

३. भक्तिकालीन कवियों ने सामान्यतया वैयक्तिक कल्याण के लिए प्रार्थना की है जबकि निराला ने अपने आराध्य से राष्ट्रीय एवं मानवीय उन्नति की याचना की है। इससे इन कवियों के समय और परिस्थिति के विषय में क्या संकेत मिलता है ?

४. महादेवी वर्मा की कविता भक्ति की अन्य कविताओं से किस प्रकार भिन्न है ?

टिप्पणियाँ

१. सरस्वती-वंदना

जलद-मंद्र रव — बादल के गर्जन-सा शक्तिशाली और गंभीर स्वर

२. भक्ति के दोहे

खाला का घर— सरल कार्य, खाला=मौसी

मधूकरी — भिक्षा

३. भक्ति के पद

करील-फल — टेंटी, डेले, करील=एक काँटेदार झाड़ी

४. भक्ति-निवेदन

भवनिसा — सांसारिक संघर्ष रूपी रात्रि

सिरानी — बीत गई

बराय — बड़ाई

जवन — यवन (कसाई जिसे मोक्ष प्राप्त हो गया था)

खग — पक्षी (जटायु)

मृग — हरिण (मारीच)

व्याध — शिकारी (बाल्मीकि)

पषान — पाषाण (अहल्या)

बिटप जड़ — वृक्ष (यमलार्जुन, दो वृक्ष जिससे कृष्ण बँधे थे। उन्होंने इन्हें उखाड़कर शाप से मुक्त किया था।

(घ) जीवन-दर्शन

१. एक सुनहली किरण उसे भी दे दो

एक सुनहली किरण उसे भी दे दो।
भटक गया जो अँधियारे के वन में।
लेकिन जिसके मन में,
अभी शेष है चलने की अभिलाषा।
एक सुनहली किरण उसे भी दे दो।

मौन कर्म में निरत
बद्ध पिंजर में व्याकुल
भूल गया जो
दुख जतलाने वाली भाषा
उसको भी वाणी के कुछ क्षण दे दो।

तुम जो सजा रहे हो
ऊँची फुनगी पर के ऊर्ध्वमुखी
नव पल्लव पर आभा की किरनें,

तुम जो जगा रहे हो
दल के दल कमलों की आँखों के
सब सोए सपने,
तुम जो बिखराते हो भू पर
राशि-राशि सोना
पथ को उद्भासित करने,
एक किरण से
उसका भी माथा आलोकित कर दो।
एक स्वप्न
उसके भी सोए मन में
जागृत कर दो।

—कीर्ति चौधरी

२. अँधेरे का दीपक

है अँधेरी रात पर दीवा जलाना कब मना है ?

(१)

कल्पना के हाथ से कमनीय जो मंदिर बना था,
भावना के हाथ ने जिसमें वितानों को तना था,
स्वप्न ने अपने करों से था जिसे रुचि से सँवारा,
स्वर्ग के दुष्प्राप्य रंगों से, रसों से जो सना था,
ढह गया वह तो जुटाकर ईंट, पत्थर, कंकड़ों को
एक अपनी शांति की कुटिया बनाना कब मना है ?
है अँधेरी रात पर दीवा जलाना कब मना है ?

(२)

बादलों के अश्रु से धोया गया, नभ-नील नीलम
का बनाया था गया मधु-पात्र मनमोहक, मनोरम,
प्रथम ऊषा की किरण की लालिमा-सी लाल मदिरा
थी उसी में चमचमाती नव घनों में चंचला सम,
वह अगर टूटा, मिलाकर हाथ की दोनों हथेली
एक निर्मल स्रोत से तृष्णा बुझाना कब मना है ?
है अँधेरी रात पर दीवा जलाना कब मना है ?

(३)

क्या घड़ी थी एक भी चिन्ता नहीं थी पास आई,
कालिमा तो दूर, छाया भी पलक पर थी न छाई,
आँख से मस्ती झलकती, बात से मस्ती टपकती,
थी हँसी ऐसी जिसे सुन बादलों ने शर्म खाई,
वह गई तो ले गई उल्लास के आधार, माना,
पर अथिरता पर समय की मुसकराना कब मना है ?
है अँधेरी रात पर दीवा जलाना कब मना है ?

(४)

हाय, वे उन्माद के झोंके कि जिसमें राग जागा,
वैभवों से फेर आँखें गान का वरदान माँगा,
एक अंतर से ध्वनित हों दूसरे में जो निरंतर,
भर दिया अंबर-अवनि को मत्तता के गीत गा-गा,
अंत उनका हो गया तो मन बहलने के लिए ही,
ले अधूरी पंक्ति कोई गुनगुनाना कब मना है ?
है अँधेरी रात पर दीवा जलाना कब मना है ?

(५)

हाय, वे साथी कि चुंबक-लोह-से जो पास आए,
पास क्या आए, हृदय के बीच ही गोया समाए,
दिन कटे ऐसे कि कोई तार वीणा के मिलाकर
एक मीठा और प्यारा जिन्दगी का गीत गाए,
वे गए तो सोचकर यह लौटने वाले नहीं वे,
खोज मन का मीत कोई लौ लगाना कब मना है ?
है अँधेरी रात पर दीवा जलाना कब मना है ?

(६)

क्या हवाएँ थीं कि उजड़ा प्यार का वह आशियाना,
कुछ न आया काम तेरा शोर करना, गुल मचाना,
नाश की उन शक्तियों के साथ चलता जोर किसका
किन्तु ऐ निर्माण के प्रतिनिधि, तुझे होगा बताना,
जो बसे हैं वे उजड़ते हैं प्रकृति के जड़ नियम से,
पर किसी उजड़े हुए को फिर बसाना कब मना है ?
है अँधेरी रात पर दीवा जलाना कब मना है ?

—हरिवंश राय बच्चन

३. हम अनिकेतन

हम अनिकेतन, हम अनिकेतन !
हम तो रमते राम, हमारा क्या घर, क्या दर, कैसा वेतन ?

अब तक इतनी योंही काटी, अब क्या सीखें नव परिपाटी
कौन बनाए आज घरौंदा हाथों चुन-चुन कंकड़-माटी
ठाठ फकीराना है अपना, बाघंबर सोहे अपने तन।

देखे महल, झोंपड़े देखे, देखे हास-विलास मज़े के
संग्रह के सब विग्रह देखे, जँचे नहीं कुछ अपने लेखे
लालच लगा कभी पर हिय में मच न सका शोणित-उद्वेलन ।

हम जो भटके अब तक दर-दर, अब क्या खाक बनाएँगे घर
हमने देखा सदन बने हैं लोगों का अपनापन लेकर
हम क्यों सनें ईंट-गारे में ? हम क्यों बनें व्यर्थ में बेमन ?

ठहरे अगर किसी के दर पर, कुछ शरमाकर कुछ सकुचाकर
तो दरबान कह उठा, बाबा, आगे जा देखो कोई घर
हम रमता बनकर बिचरे पर हमें भिक्षु समझे जग के जन।

—बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

४. मिट्टी की महिमा

निर्मम कुम्हार की थापी से
कितने रूपों में कुटी-पिटी
हर बार बिखेरी गई किन्तु
मिट्टी फिर भी तो नहीं मिटी
आशा में निश्छल पल जाए, छलना में पड़ कर छल जाए
सूरज दमके तो तप जाए, रजनी ठुमके तो ढल जाए,
यों तो बच्चों की गुड़िया-सी भोली मिट्टी की हस्ती क्या
आँधी आए तो उड़ जाए, पानी बरसे तो गल जाए

फ़सलें उगतीं, फ़सलें कटतीं लेकिन धरती चिर उर्वर है
सौ बार बने सौ बार मिटे लेकिन मिट्टी अविनश्वर है।
मिट्टी गल जाती पर उसका विश्वास अमर हो जाता है।
बिरचे शिव, विष्णु, विरंचि विपुल
अगणित ब्रह्मांड हिलाए हैं
पलने में प्रलय झुलाया है
गोदी में कल्प खिलाए हैं

रो दे तो पतझर आ जाए, हँस दे तो मधुऋतु छा जाए
झूमे तो नंदन झूम उठे, थिरके तो तांडव शरमाए
यों मदिरालय के प्याले-सी मिट्टी की मोहक मस्ती क्या
अधरों को छूकर सकुचाए, ठोकर लग जाए छहराए

उनचास मेघ, उनचास पवन, अंबर अवनी कर देते सम
वर्षा थमती, आँधी रुकती, मिट्टी हँसती रहती हरदम
कोयल उड़ जाती पर उसका निश्वास अमर हो जाता है।
मिट्टी गल जाती पर उसका विश्वास अमर हो जाता है।

मिट्टी की महिमा मिटने में
मिट-मिट हर बार सँवरती है
मिट्टी मिट्टी पर मिटती है
मिट्टी मिट्टी को रचती है

मिट्टी में स्वर है, संयम है, होनी-अनहोनी कह जाए
हँसकर हालाहल पी जाए, छाती पर सब-कुछ सह जाए
यों तो ताशों के महलों-सी मिट्टी की वैभव-बस्ती क्या
भूकंप उठे तो ढह जाए, बूड़ा आए तो, बह जाए
लेकिन मानव का फूल खिला, जब से पाकर वाणी का वर
विधि का विधान लुट गया स्वर्ग अपवर्ग हो गए न्यौछावर
कवि मिट जाता है लेकिन उसका उच्छ्वास अमर हो जाता है।
मिट्टी गल जाती पर उसका विश्वास अमर हो जाता है।

—शिवमंगलसिंह 'सुमन'

५. मैंने आहुति बनकर देखा

मैं कब कहता हूँ जग मेरी दुर्धर गति के अनुकूल बने ?
मैं कब कहता हूँ जीवन-मरु नंदन-कानन का फूल बने ?

काँटा कठोर है, तीखा है, उसमें उस की मर्यादा है,
मैं कब कहता हूँ वह घटकर प्रांतर का ओछा फूल बने ?

मैं कब कहता हूँ मुझे युद्ध में कहीं न तीखी चोट मिले ?
मैं कब कहता हूँ प्यार करूँ तो मुझे प्राप्ति की ओट मिले ?

मैं कब कहता हूँ विजय करूँ—मेरा ऊँचा प्रासाद बने ?
या पात्र जगत की श्रद्धा की मेरी धुँधली-सी याद बने ?

पथ मेरा रहे प्रशस्त सदा क्यों विकल करे यह चाह मुझे ?
नेतृत्व न मेरा छिन जाए क्यों इसकी हो परवाह मुझे ?

मैं प्रस्तुत हूँ चाहे मेरी मिट्टी जनपद की धूल बने—
फिर उस धूली का कण-कण भी मेरा गति-रोधक शूल बने !

अपने जीवन का रस दे कर जिसको यत्नों से पाला है—
क्या वह केवल अवसाद-मलिन झरते आँसू की माला है ?

वे रोगी होंगे प्रेम जिन्हें अनुभव-रस का कटु प्याला है—
वे मुर्दे होंगे प्रेम जिन्हें सम्मोहन-कारी हाला है !

मैंने विदग्ध हो जान लिया, अंतिम रहस्य पहचान लिया—
मैंने आहुति बन कर देखा यह प्रेम यज्ञ की ज्वाला है !

मैं कहता हूँ मैं बढ़ता हूँ, मैं नभ की चोटी चढ़ता हूँ,
कुचला जा कर भी धूली-सा, आँधी-सा और उमड़ता हूँ

मेरा जीवन ललकार बने, असफलता ही असि-धार बने
इस निर्मम रण में पग-पग का रुकना ही मेरा वार बने !

भव सारा तुझको है स्वाहा सब कुछ तप कर अंगार बने—
तेरी पुकार-सा दुर्निवार मेरा यह नीरव प्यार बने !

—अज्ञेय

६. कैकेयी का अनुताप

"यह सच है तो अब लौट चलो तुम घर को।"
चौंके सब सुनकर अटल केकयी-स्वर को।
सबने रानी की ओर अचानक देखा,
बैधव्य-तुषारावृता यथा विधु-लेखा।
बैठी थी अचल तथापि असंख्यतरंगा,
वह सिंही अब थी हहा! गौमुखी गंगा—
"हाँ, जनकर भी मैंने न भरत को जाना,
सब सुन लें, तुमने स्वयं अभी यह माना।
यह सच है तो फिर लौट चलो घर भैया,
अपराधिन मैं हूँ तात, तुम्हारी मैया।
दुर्बलता का ही चिह्न विशेष शपथ है,
पर, अबलाजन के लिए कौन सा पथ है?
यदि मैं उकसाई गई भरत से होऊँ,
तो पति-समान ही स्वयं पुत्र भी खोऊँ!
ठहरो, मत रोको मुझे, कहूँ सो सुन लो,
पाओ यदि उसमें सार उसे सब चुन लो।
करके पहाड़-सा पाप मौन रह जाऊँ?
राई भर भी अनुताप न करने पाऊँ?"
थी सनक्षत्र शशि-निशा ओस टपकाती,
रोती थी नीरव सभा हृदय थपकाती।

उल्का सी रानी दिशा दीप्त करती थी,
सबमें भय, विस्मय और खेद भरती थी।
"क्या कर सकती थी मरी मंथरा दासी,
मेरा ही मन रह सका न निज विश्वासी।
जल पंजर-गत अब अरे अधीर, अभागे,
वे ज्वलित भाव थे स्वयं तुझी में जागे।
पर था केवल क्या ज्वलित भाव ही मन में?
क्या शेष बचा था कुछ न और इस जन में?
कुछ मूल्य नहीं वात्सल्य-मात्र, क्या तेरा?
पर आज अन्य-सा हुआ वत्स भी मेरा।
थूके, मुझ पर त्रैलोक्य भले ही थूके,
जो कोई जो कह सके, कहे, क्यों चूके?
छीने न मातृपद किन्तु भरत का मुझसे,
हे राम, दुहाई करूँ और क्या तुझसे?
कहते आते थे यही अभी नरदेही,
'माता न कुमाता, पुत्र कुपुत्र भले ही।'
अब कहें सभी यह हाय! विरुद्ध विधाता,—
'है पुत्र पुत्र ही, रहे कुमाता माता।'
बस मैंने इसका बाह्य-मात्र ही देखा
दृढ़ हृदय न देखा, मृदुल गात्र ही देखा।
परमार्थ न देखा, पूर्ण स्वार्थ ही साधा,
इस कारण ही तो हाय आज यह बाधा!

युग युग तक चलती रहे कठोर कहानी—
'रघुकुल में भी थी एक अभागिन रानी।'
निज जन्म जन्म में सुने जीव यह मेरा—
'धिक्कार! उसे था महा स्वार्थ ने घेरा।'—"
"सौ बार धन्य वह एक लाल की माई,
जिस जननी ने है जना भरत-सा भाई।"
पागल-सी प्रभु के साथ सभी चिल्लाई—
"सौ बार धन्य वह एक लाल की माई।"

—मैथिलीशरण गुप्त

१. एक सुनहली किरण उसे भी दे दो

१. इस कविता में 'सुनहली किरण' से क्या तात्पर्य है ?

२. कवयित्री ने एक सुनहली किरण देने के लिए किससे आग्रह किया है ?

३. कवयित्री ने 'सोए मन में' से किन लोगों की ओर संकेत किया है ? उनके मन में कैसा स्वप्न जगाने की कामना की गई है ?

४. इस कविता के आधार पर बताइए कि कवयित्री ने किन लोगों के प्रति सहानुभूति एवं संवेदना प्रकट की है ?

५. 'वाणी के क्षण देने' का क्या तात्पर्य है ? कवयित्री ने कैसे व्यक्ति को वाणी प्रदान करने की याचना की है ?

६. इस कविता का मुख्य संदेश क्या है और आपको इससे क्या प्रेरणा मिलती है ?

७. निम्नांकित के अर्थ स्पष्ट कीजिए—

अँधियारे के वन, मौन कर्म में निरत, चलने की अभिलाषा, बद्ध पिंजर, सोए सपने, माथा आलोकित, सोए मन ।

२. अँधेरे का दीपक

१. इस कविता में 'अँधेरी रात' किसका प्रतीक है ?

२. इस कविता में किन बड़ी वस्तुओं के स्थान पर उनसे छोटी वस्तुओं को स्वीकार करने का परामर्श दिया गया है ? क्यों ?

३. कवि ने श्रेष्ठ वस्तुओं का वर्णन तो बड़े विस्तार से किया है, किन्तु छोटी वस्तुओं का उल्लेख भर करके वह क्यों रह जाता है ?

४. 'कल्पना के हाथ' आदि अभिव्यक्तियों में अमूर्त भावों को मूर्त बनाने के लिए कवि ने किस युक्ति का सहारा लिया है ? कविता में अमूर्त को मूर्त और मूर्त को अमूर्त बनाकर कवि अपनी अभिव्यक्ति में विशेष सौंदर्य भर देता है। इस कविता से तथा कुछ अन्य कविताओं से इसके उदाहरण दीजिए ।

५. इस कविता से उपमा अलंकार के दो उदाहरण दीजिए।

६. यह कविता अपने किन गुणों के कारण पाठकों के हृदय को छूती है ?

७. यह कविता बच्चन जी के कविता-संग्रह 'सतरंगिणी' से ली गई है। इस पुस्तक की कुछ अन्य कविताएँ कक्षा में सुनाइए और बच्चन जी की कविताओं की विशेषताओं के बारे में चर्चा कीजिए।

३. हम अनिकेतन

१. इस कविता का मूल भाव क्या है—

(क) दर-दर भटकना (ख) मनमौजीपन

(ग) भिक्षा माँगना (घ) लापरवाही (ङ) वैराग्य।

२. इस कविता और 'हम दीवानों की क्या हस्ती' के मूल भावों की तुलना कीजिए।

३. इस कविता में प्रस्तुत कवि के दृष्टिकोण से आप कहाँ तक सहमत हैं ? यह दृष्टिकोण दीनता से किस प्रकार भिन्न है ?

४. निम्नलिखित पंक्तियों पर टिप्पणी कीजिए—

(क) संग्रह के सब विग्रह देखे, जँचे नहीं कुछ अपने लेखे

(ख) हम रमता बनकर बिचरे पर हमें भिक्षु समझे जग के जन

४. मिट्टी की महिमा

१. इस कविता में कवि मिट्टी के माध्यम से क्या कहना चाहता है ?

२. मिट्टी के मिटने, बनने और निर्माण करने के क्या-क्या उदाहरण कवि ने दिए हैं ?

३. इस कविता से उपमा और अनुप्रास के उदाहरण चुनिए।

४. इस कविता की भाषा, विशेषतः क्रियाओं के प्रयोग पर टिप्पणी कीजिए।

५. निम्नांकित पंक्तियों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए—

(क) पलने में प्रलय झुलाया है
गोदी में कल्प खिलाए हैं

(ख) मिट्टी मिट्टी पर मिटती है,
मिट्टी मिट्टी को रचती है।

५. मैंने आहुति बनकर देखा

१. निम्नलिखित भावों में से कौन-कौन से भाव इस कविता में उभरे हैं ? अपने उत्तर की पुष्टि में उपयुक्त पंक्तियाँ भी उद्धृत कीजिए—

निराशा, लालसा, क्षोभ, उत्साह, भक्ति, प्रेम, संकल्प, परोपकार, क्रोध, दीनता, आत्मसम्मान।

२. संपूर्ण कविता को पढ़कर बताइए कि कवि क्या चाहता है और क्या नहीं चाहता ?

३. कवि ने 'मैं कब कहता हूँ' की आवृत्ति इतनी बार क्यों की है ? कविता पर इसका क्या प्रभाव पड़ा है ?

४. इस कविता में कवि ने अभिव्यक्ति की दो भिन्न शैलियों को अपनाया है। कविता के किस स्थल पर शैली बदल जाती है ?

५. निम्नलिखित पंक्तियों के भावों की व्याख्या कीजिए—

(क) काँटा कठोर है.........फूल बने ?

(ख) मैंने विदग्ध हो.........की ज्वाला है।

६. कैकेयी का अनुताप

१. इस कविता के आधार पर कैकेयी के चरित्र की कुछ विशेषताएँ बताइए।

२. निम्नलिखित पंक्तियों का भावार्थ लिखिए—

(क) सबने रानी की ओर.........गोमुखी गंगा।

(ख) थी सनक्षत्र शशि.........खेद भरती थी।

(ग) कहते आते थे यही.........रहे कुमाता माता।

३. कैकेयी के संबंध में आम धारणा क्या है ? कवि ने कैकेयी को उससे मुक्त कराने में कहाँ तक सफलता पाई है ?

४. कक्षा में इस कविता का अभिनय के साथ वाचन कीजिए।

५. उपयुक्त उद्धरण देते हुए कविता की नाटकीयता पर टिप्पणी लिखिए।

६. मैथिलीशरण गुप्त की भाषा, शैली और कविता के विषयों के संबंध में टिप्पणी लिखिए।

टिप्पणियाँ

२. अँधेरे का दीपक

वितान — चँदोवा

४. मिट्टी की महिमा

कल्प — एक हजार महायुग अथवा चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष के बराबर का एक दिन

तांडव — शिव का विनाशकारी नृत्य

बूड़ा — बाढ़ (बूड़ना=डूबना)

उनचास पवन— वायु के उन्चास प्रकार

५. मैंने आहुति बनकर देखा

प्रांतर — वन, निर्जन मार्ग

विदग्ध — जीवन के अनुभवों से चतुर बना हुआ।

६. कैकेयी का अनुताप

गोमुखी-गंगा — गौ के मुँह के समान गुहा से निकलने वाली गंगा, निर्मल

(ङ) सौन्दर्य और प्रेम

१. बिहारी-माधुरी

कीनै हू कोटिक जतन अब कहि काढ़ै कौनु ।
भौ मन मोहन-रूप मिलि पानी में कौ लौनु ।।

नेहिन नैननु कौं कछु उपजी बड़ी बलाइ ।
नीर-भरे नितप्रति रहैं, तऊ न प्यास बुझाइ ।।

अंग-अंग नग जगमगत दीपसिखा-सी देह ।
दिया बढ़ाये हू रहे बड़ौ उज्यारौ गेह ।।

बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाइ ।
सौंह करै, भौंहनि हँसै, दैन कहै, नटि जाइ ।।

इन दुखिया अँखियानु कौं सुख सिरज्यौई नाहिं ।
देखै बनै न देखते, अनदेखे अकुलाहिं ।।

या अनुरागी चित्त की गति समुझै नहिं कोइ ।
ज्यौं-ज्यौं बूड़ै स्याम रँग, त्यौं-त्यौं उज्जल होइ ।।

—बिहारी

२. मतिराम-माधुरी

मोरपखा 'मतिराम' किरीट में, कंठ बनी बनमाल सुहाई,
मोहन की मुसकानि मनोहर, कुंडल डोलनि में छवि छाई ।
लोचन लोल, बिसाल बिलोकनि, को न बिलोकि भयो बस माई
वा मुख की मधुराई कहा कहौं, मीठी लगे अँखियान लुनाई

कुंदन कौ रँगु फीको लगै, झलकै अति अंगन चारु गुराई,
आँखिन में अलसानि, चितौनि में मंजु बिलासन की सरसाई ।
को बिन मोल बिकात नहीं 'मतिराम' लहै मुसकानि-मिठाई ।
ज्यौं-ज्यौं निहारिए नेरे ह्वै नैननि, त्यौं-त्यौं खरी निकसै-री निकाई ।

—मतिराम

३. घनानंद-वीथी

झलकै अति सुंदर आनन गौर, छके दृग राजत काननि छ्वै ।
हँसि बोलन में छवि फूलन की बरखा, उर ऊपर जाति है ह्वै ।
लट लोल कपोल कलोल करै, कल कंठ बनी जलजावलि द्वै ।
अंग तरंग उठै दुति की, परिहै मनौ रूप अबै धर च्वै ॥

भोर तें साँझ लौं कानन ओर निहारति बावरी नेकु न हारति ।
साँझ तें भोर लौं तारनि ताकिबो तारनि सौं इकतार न टारति ।
जो कहुँ भावतो दीठि परे 'घन आनंद' आँसुनि औसर गारति ।
मोहन सोहन जोहन की लगियै रहै आँखिन के उर आरति ॥

—घनानंद

प्रश्नावली

१. बिहारी-माधुरी

१. पहले दोहे में कवि ने मन में और लवण में क्या समानता दिखाई है ?

२. दूसरे दोहे में कवि ने क्या विरोधाभास दिखाया है ?

३. तीसरे दोहे में कवि ने नायिका के सौन्दर्य को कैसे चित्रित किया है ?

४. गोपियाँ श्रीकृष्ण की बाँसुरी किस उद्देश्य से छिपाती हैं और उन्हें रिझाने के लिए क्या-क्या करती हैं ?

५. कवि ने गोपियों की विह्वलता का चित्रण किस प्रकार किया है ?

६. क्या कारण है कि श्याम रंग में डूबने पर भी चित्त अधिकाधिक उज्ज्वल होता जाता है ?

७ दूसरे और छठे दोहों की शैली में क्या समानता है ?

२. मतिराम-माधुरी

१. श्रीकृष्ण के मुख-सौन्दर्य का कवि ने किस रूप में वर्णन किया है ?

२. श्रीकृष्ण के मुख का सौन्दर्य कवि को क्यों वर्णनातीत लगता है ?

३. 'ज्यौं-ज्यौं निहारिए नेरे ह्वै नैननि, त्यौं-त्यौं खरी निकसै-री निकाई' का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

३. घनानंद-वीथी

१. भावार्थ स्पष्ट कीजिए—

(क) अंग तरंग उठै दुति की, परिहै मनौ रूप अबै धर च्वै।

(ख) सांझ तें भोर लौं तारनि ताकिबो तारनि सौं इकतार न टारति।

२. उपर्युक्त छंदों में से ध्वनि-साम्य वाले अंशों का चयन कीजिए तथा उन पर टिप्पणी कीजिए।

३. प्रेम विह्वला नायिका के नैन इतने आतुर क्यों रहते हैं ? पठित छंद के आधार पर उत्तर दीजिए।

सामान्य

१. 'बिहारी ने अपने दोहों में गागर में सागर भरा है,' इस कथन की पुष्टि कीजिए ।

२. पठित अंश के आधार पर श्रीकृष्ण के रूप-सौन्दर्य का संक्षिप्त चित्रण कीजिए ।

३. पठित अंशों में से प्रेम-सौन्दर्य के कौन-से अंश आपको अच्छे लगते हैं और क्यों ?

४. चरण के अंत में आनेवाले तुकांत पद की अपेक्षा मध्यवर्ती तुकांत पद अधिक संगीतात्मकता प्रदान करते हैं । बिहारी तथा घनानंद की रचनाओं में से मध्यवर्ती तुकांतों को छाँटकर इस कथन की सार्थकता सिद्ध कीजिए ।

टिप्पणियाँ

औसर गारति— अवसर हाथ से निकाल देती है

आरति — लालसा

जलजावलि — जलज + अवलि = कमलों की माला

इकतार — टकटकी

काव्य-भारती

तृतीय भाग

[ग्यारहवीं कक्षा के लिए]

विषय-सूची

(क) प्रकृति का आह्वान	१. इंद्र-धनुष	रमा सिंह	१४५
	२. षड् ऋतु-वर्णन	सेनापति, देव, पद्माकर	१४६
	३. संध्या-सुंदरी	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	१४६
	४. बीती विभावरी, जाग री	जयशंकर प्रसाद	१५१
	५. मेघ आए	सर्वेश्वरदयाल सक्सेना	१५२
	प्रश्नावली एवं टिप्पणियाँ		१५३
(ख) देश-प्रेम और वीरता	१. शौर्य का आह्वान	रामधारी सिंह 'दिनकर'	१५८
	२. जवानी	माखनलाल चतुर्वेदी	१६१
	प्रश्नावली एवं टिप्पणियाँ		१६४
(ग) भक्ति	१. भक्ति के दोहे	तुलसीदास	१६६
	२. भगवान बुद्ध के प्रति	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	१६८
	३. नवप्रकाश बन आओ	सुमित्रानंदन पंत	१७०
	प्रश्नावली एवं टिप्पणियाँ		१७२
(घ) जीवन-दर्शन	१. यदि फूल नहीं बो सकते तो	रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'	१७४
	२. सावधान, जन-नायक	बालकृष्ण राव	१७६
	३. दे मन का उपहार सभी को	हरिवंशराय 'बच्चन'	१७७
	४. थके हुए कलाकार से	धर्मवीर भारती	१७९
	प्रश्नावली एवं टिप्पणियाँ		१८१

(ङ) सौन्दर्य और प्रेम	१. प्रेम-माधुरी	भारतेन्दु हरिश्चंद्र	१८४
	२. श्रद्धा का सौंदर्य	जयशंकर प्रसाद	१८६
	३. मानसरोदक खंड	मलिक मुहम्मद जायसी	१८९
	प्रश्नावली एवं टिप्पणियाँ		१९२
(च) रहस्यानुभूति	१. तुम मुझमें प्रिय	महादेवी वर्मा	१९५
	२. पद	कबीर	१९७
	प्रश्नावली एवं टिप्पणियाँ		१९९
(छ) विविध	१. भ्रमर-गीत-प्रसंग	सूरदास	२०१
	२. उद्धव की विदाई	जगन्नाथदास 'रत्नाकर'	२०३
	प्रश्नावली एवं टिप्पणियाँ		२०६

(क) प्रकृति का आह्वान

१. इंद्र-धनुष

नभ में उग आई लो
रंग-भरी रेखा एक टेढ़ी-सी
जिसको हम इंद्र-धनुष कहते हैं।

उमड़-घुमड़ कर अभी
बादल ये बरसे हैं,
महक उठी धरती
और फूल-पत्ती-पौधे
सब सरसे हैं।

जीवन में इसी तरह
दुख की घटाओं का अँधेरा है,
इसके भी पीछे शायद
रंगों का घेरा है।

एक इसी आशा के तर्क पर
दुख और दाह हम सहते हैं,
जीवन में इसी आकर्षण को
इंद्र-धनुप कहते हैं।

—रमा सिह

२. षड् ऋतु-वर्णन

वसंत

कूकि उठीं कोकिलान, गूँजि उठी भौंर-भीर,
डोलि उठे सौरभ समीर सरसावने।
फूलि उठीं लतिका लवंगन की लोनी-लोनी
झूलि उठीं डालियाँ कदंब सुख पावने॥
चहकि चकोर उठे, करि-करि सोर उठे,
टेर उठीं सारिका विनोद उपजावने।
चटकि गुलाब उठे, लटकि सरोज-पुंज
खटकि मराल रितुराज सुनि आवने।

—पद्‌माकर

ग्रीष्म

वृष कौं तरनि तेज सहसौ किरन करि,
ज्वालन के जाल विकराल बरसत हैं।
तचति धरनि, जग जरत झरनि, सीरी
छाँह कौं पकरि पंथी-पंछी बिरमत हैं।
'सेनापति' नैंकु दुपहरी के ढरत, होत
धमका विषम, ज्यों न पात खरकत हैं।
मेरे जान पौनौं सीरी ठौर कौं पकरि कौनौं
घरी एक बैठि कहूँ घामै बितवत हैं।

—सेनापति

पावस

सुनि कै धुनि चातक-मोरन की, चहुँ ओरन कोकिल-कूकन सों।
अनुराग भरे वन-बागन में, हरि रागत राग अचूकन सों।
कवि देव घटा उनई जु नई, वन-भूमि भई दल-दूकन सों।
रँगराती हरी हहराती लता, झुकि जाति समीर के झूकन सों।

—देव

शरद

कातिक की राति थोरी-थोरी सियराति,
सेनापति है सुहाति सुखी जीवन के गन हैं।
फूले हैं कुमुद, फूली मालती सघन वन,
फूलि रहे तारे मानौ मोती अनगन हैं।
उदित बिमल चंद, चाँदनी छिटकि रही,
राम कैसौ जस अध-ऊरध गगन है।
तिमिर हरन भयौ, सेत है बरन सब,
मानहु जगत छीर-सागर मगन है॥

—सेनापति

हेमंत

सीत कौ प्रबल सेनापति कोपि चढ़्यो दल,
निबल अनत, गयौ सूर सियराय कै।
हिम के समीर, तेई बरसैं विषम तीर,
रही है गरम भौन कोनन में जाय कै।
धूम नैन बहैं, लोग आग पै गिरे-से रहैं,
हिम सौं लगाय रहैं, नैक सुलगाय कै।
मानो भीत जानि, महासीत तें पसारि पानि,
छतियाँ की छाँह राख्यौ पावक छिपाय कै।

—सेनापति

शिशिर

सिसिर में ससि को सरूप पावै सविताऊ,
घाम हूँ मैं चाँदनो की दुति दमकति है।
सेनापति होत सीतलता है सहस गुनी,
रजनी की झाईं बासर में झलकति है।
चाहत चकोर सूर ओर दृग छोर करि,
चकवा की छाती तजि धीर धसकति है।
चंद के भरम होत मोद है कमोदिनी को,
ससि संक पंकजनि फूली न सकति है॥

—सेनापति

३. संध्या-सुंदरी

दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह संध्या-सुंदरी परी-सी
धीरे-धीरे-धीरे,
तिमिरांचल में चंचलता का नहीं कहीं आभास,
मधर मधुर हैं दोनों उसके अधर,
किन्तु गंभीर,—नहीं है उनमें हास-विलास ।
हँसता है तो केवल तारा एक
गुँथा हुआ उन घुँघराले काले-काले बालों से,
हृदय-राज्य की रानी का वह करता है अभिषेक ।
अलसता की-सी लता
किन्तु कोमलता की वह कली,
सखी नीरवता के कंधे पर डाले बाँह,
छाँह-सी अंबर-पथ से चली ।
नहीं बजती उसके हाथों में कोई वीणा,
नहीं होता कोई अनुराग-राग आलाप,
नूपुरों में भी रुनझुन-रुनझुन नहीं,
सिर्फ एक अव्यक्त शब्द-सा "चुप चुप चुप"
  है गूँज रहा सब कहीं—
व्योममंडल में—जगतीतल में—
सोती शांत सरोवर पर उस अमल कमलिनी-दल में—
सौन्दर्य-गर्विता सरिता के अतिविस्तृत वक्षः स्थल में—

धीर वीर गंभीर शिखर पर हिमगिरि-अटल-अचल में—
उत्ताल-तरंगाघात-प्रलय-घन-गर्जन-जलधि-प्रबल में—
क्षिति में—जल में—नभ—में अनिल अनल में—
सिर्फ एक अव्यक्त शब्द-सा "चुप चुप चुप"
है गूँज रहा सब कहीं,—
और क्या है ? कुछ नहीं ।
मदिरा की वह नदी बहाती आती,
थके हुए जीवों को वह सस्नेह
प्याला एक पिलाती
सुलाती उन्हें अंक पर अपने,
दिखलाती फिर विस्मृति के वह कितने मीठे सपने ।
अर्द्धरात्रि की निश्चलता में हो जाती जब लीन,
कवि का बढ़ जाता अनुराग,
विरहाकुल कमनीय कंठ से
आप निकल पड़ता तब एक बिहाग ।

—सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

४. बीती विभावरी, जाग री

बीती विभावरी, जाग री !
अंबर पनघट में डुबो रही—
तारा-घट ऊषा नागरी ।

खग-कुल कुल-कुल सा बोल रहा,
किसलय का अंचल डोल रहा,
लो यह लतिका भी भर लाई—
मधु मुकुल नवल रस गागरी ।

अधरों में राग अमंद पिए,
अलकों में मलयज बंद किए—
तू अब तक सोई है आली !
आँखों में भरे बिहाग री !

—जयशंकर प्रसाद

५. मेघ आए

मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के ।
आगे-आगे नाचती-गाती बयार चली,
दरवाजे-खिड़कियाँ खुलने लगीं गली-गली,
पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के ।
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के ।

पेड़ झुक झाँकने लगे गरदन उचकाए,
आँधी चली, धूल भागी घाँघरा उठाए,
बाँकी चितवन उठा नदी ठिठकी, घूँघट सरके ।
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के ।

बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की ।
'बरस बाद सुधि लीन्हीं' —
बोली अकुलाई लता ओट हो किंवार की,
हरसाया ताल लाया पानी परात भर के ।
मेघ आए बड़े बड़-ठन के सँवर के ।

क्षितिज-अटारी गहराई दामिनि दमकी,
'क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की',
बाँध टूटा झर-झर मिलन के अश्रु ढरके
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के ।

—सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

प्रश्नावली

१. इंद्र-धनुष

१. "जीवन के इंद्र-धनुष" से क्या तात्पर्य है ? इसका संबंध प्राकृतिक इंद्र-धनुष से किस प्रकार स्थापित किया गया है ?

२. इस कविता का मुख्य संदेश क्या है ?

३. भावाभिव्यक्ति में कविता की भाषा कहाँ तक समर्थ है ? उपयुक्त उदाहरण देकर अपना कथन प्रस्तुत कीजिए ।

२. षड् ऋतु-वर्णन

१. प्रथम कविता में कवि ने बसंत ऋतु के सौन्दर्य का वर्णन किस युक्ति से किया है ?

२. सेनापति के अनुसार ग्रीष्म की दोपहरी का चमत्कारपूर्ण वर्णन कीजिए ।

३. सेनापति की इस ग्रीष्म संबंधी कविता की कौन-सी उक्ति आपको सर्वाधिक चमत्कारपूर्ण लगी ?

४. देव कवि ने वर्षा ऋतु के किन दृश्यों का वर्णन किया है ?

५. सेनापति के अनुसार शरद ऋतु के सौन्दर्य का वर्णन कीजिए ।

६. हेमंत ऋतु में शीत के प्रबल प्रकोप का वर्णन कीजिए ।

७. शिशिर के सूर्य को देखकर क्या भ्रम होता है ? इस भ्रम के शिकार कौन-कौन होते हैं ?

८. इन पदों से उत्प्रेक्षा अलंकार के स्थल चुनकर उनका सौन्दर्य उद्घाटित कीजिए ।

९. निम्नांकित पंक्तियों के सौन्दर्य को स्पष्ट कीजिए :

(क) छाँह को पकरि पंथी पंछी बिरमत हैं

(ख) रँगराती हरी हहराती लता

(ग) राम कैसो जस अध ऊरध गगन है

(घ) रही है गरम भौन कोनन में जाय कै

(ङ) चकवा की छाती तजि धीर धसकति है

१०. मध्ययुगीन कविता में ऋतु-वर्णन की समृद्ध परंपरा रही है। ऋतु-वर्णन के कुछ अन्य पद पढ़िए और कक्षा में सुनाइए।

३. संध्या-सुंदरी

१. 'धीरे-धीरे-धीरे' प्रयोग से संध्या के आगमन की क्या विशेषता प्रकट होती है ?

२. इस कविता के उन शब्दों को चुनिए जो संध्या और सुंदरी दोनों के सौन्दर्य-वर्णन के लिए समान रूप से उपयुक्त हैं ?

३. संध्या की सखी नीरवता के व्यापक प्रभाव का वर्णन कवि ने किस प्रकार किया है ?

४. 'है गूँज रहा सब कहीं' की आवृत्ति कवि ने क्यों की है ? इन आवृत्तियों के बीच कवि ने किनका वर्णन किया है ?

५. प्राणि-जगत एवं कवि पर संध्या का क्या प्रभाव परिलक्षित होता है ?

६. प्रस्तुत कविता भिन्न तुकांत है, पर कवि ने भावों के अनुसार छंद में गति एवं तुक का सफल प्रयोग किया है। इस कथन की सार्थकता सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

७. निम्नांकित काव्यात्मक प्रयोगों के सौन्दर्य को स्पष्ट कीजिए—

(क) संध्या-सुंदरी परी-सी
(ख) तिमिरांचल में चंचलता का कहीं नहीं आभास
(ग) सौन्दर्य-गर्विता सरिता
(घ) उत्ताल-तरंगाघात-प्रलय-घन-गर्जन-जलधि-प्रबल में
(ङ) मदिरा की नदी
(च) विस्मृति के मीठे सपने

८. निम्नांकित पंक्तियों की व्याख्या करते हुए बताइए कि इस अंश से संध्या का कौन-सा रूपात्मक गुण व्यक्त होता है—

"अलसता की-सीअंबर-पथ से चली।"

९. इस कविता का प्रभावपूर्ण ढंग से कई बार मुखर और मौन वाचन कीजिए।

४. बीती विभावरी, जाग री

१. "प्रकृति-चित्रण के साथ-साथ यह कविता उद्बोधन-गीत भी है"। इस कथन की विवेचना कीजिए।

२. "अंबर पनघट में डुबो रही तारा घट ऊषा नागरी" में निहित रूपक के सौन्दर्य को स्पष्ट कीजिए।

३. लतिका के मानवीकरण को स्पष्ट कीजिए।

४. अंतिम पंक्तियों में कवि ने किस प्रकार जागरण की प्रेरणा दी है?

५. मेघ आए

१. मेघों के आने का सजीव वर्णन कीजिए।

२. कवि ने बादलों के स्वागत में बयार, पेड़, फूल, नदी, पीपल, लता और ताल पर किन-किन मानवीय भावनाओं और कार्यों का आरोप किया है?

३. कविता की किन पंक्तियों में बादल के प्रति आदर का और किन पंक्तियों में प्यार का भाव वर्णित है?

४. निम्नांकित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए—
"क्षितिज-अटारी ···भरम की।"

५. इस कविता में निम्नलिखित प्रयोगों का सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए :
बन-ठन के सँवर के, नाचती-गाती, घाँघरा उठाए, जुहार की, मिलन के अश्रु ढरके।

सामान्य

१. इन कविताओं में कौन सी कविता आपको सबसे अच्छी लगी? सकारण उत्तर दीजिए।

२. इन कविताओं में से मानवीकरण के कुछ सुंदर स्थल चुनिए।

३. इन कविताओं के आधार पर बताइए कि मध्ययुगीन प्रकृति-वर्णन और आधुनिक प्रकृति-वर्णन में क्या प्रमुख अंतर है?

४. इन कविताओं से प्रकृति के कुछ बहुत सुंदर बिम्ब हमारे मन में उभरते हैं। ऐसे तीन-चार बिम्बों का संकेत कीजिए।

टिप्पणियाँ

२. षड् ऋतु-वर्णन

(हिन्दी-साहित्य में ऋतु-वर्णन की दो परिपाटियाँ प्रचलित है। प्रथम षड् ऋतु-वर्णन है जिस में छहों ऋतुओं और उनके प्रभावों का वर्णन किया जाता है। षड् ऋतु-वर्णन अधिकतर संयोग शृंगार के प्रसंग में किया जाता रहा है। द्वितीय है बारहमासा। इसमें वर्ष के बारहों मासों को एक-एक कर लिया जाता है और उनमें प्रकृति के प्रभाव का वर्णन किया जाता है। इसका उपयोग सामान्यत: वियोग शृंगार में उद्दीपन के रूप में किया जाता है। आलंबन रूप में प्रकृति का वर्णन करने वाले कवियों में सेनापति सर्वप्रथम और प्रमुख हैं।)

तचति — तपती है

झरनि — तपिश

सीरी — ठंडी

धमका — धूप की अधिक गर्मी जिससे वायुमंडल काँपता सा दीखता है, उमस

पौनौं — पवन भी

अचूकन सों — बिना किसी चूक के, अर्थात् निर्दोष रूप में, कुशलतापूर्वक

उनई — उमड़ी

तूकन — तृण

सियराति — ठंडी

अध-ऊरध — नीचे-ऊपर, सर्वत्र।

३. संध्या-सुंदरी

(**मानवीकरण :** साहित्य में कभी-कभी कविगण प्रकृति का वर्णन करते समय उनमें मानवीय गुणों का आरोप कर देते हैं। इस क्रिया को मानवीकरण कहते हैं। इस प्रक्रिया के द्वारा न केवल प्रकृति का मूर्त रूप स्पष्ट होता है बल्कि मानवीय भावों के आरोप से वह सजीव भी हो उठती है।

आधुनिक कवियों ने प्रकृति-वर्णन में इस युक्ति का काफी व्यवहार किया है। प्रस्तुत कविता में संध्या को सुंदरी नायिका तथा परी के रूप में चित्रित किया गया है। जिस प्रकार परी आकाश से धीरे-धीरे चुपचाप पृथ्वी पर उतर आतीहै, उस का आँचल लहराता रहता है, बालों में पुष्पादि गूँथे रहते हैं, उसी प्रकार संध्या भी धीरे-धीरे आती है, अंधकार ही उसके बाल हैं जिनमें सांध्य-तारे के रूप में पुष्प गुँथे है। इस प्रकार की कल्पनाएँ न केवल संध्या के बाह्य रूप को लेकर की गई हैं बल्कि उसमें नायिका एवं परी के मनोभावों का भी इसी प्रकार आरोपण किया गया है।

४. बीती विभावरी, जाग री

इस कविता में रूपक अलंकार है।

५. मेघ आए

पाहुन — दामाद, मेहमान

(ख) देश-प्रेम और वीरता

शौर्य का आह्वान

छोड़ो मत अपनी आन, सीस कट जाए,
मत झुको अनय पर, भले व्योम फट जाए।
दो बार नहीं यमराज कंठ धरता है,
मरता है जो, एक बार ही मरता है।

तुम स्वयं मरण के मुख पर चरण धरो रे।
जीना हो तो मरने से नहीं डरो रे!

स्वातंत्र्य जाति की लगन, व्यक्ति की धुन है,
बाहरी वस्तु यह नहीं, भीतरी गुण है।
नत हुए बिना जो अशनि-घात सहती है,
स्वाधीन जगत में वही जाति रहती है।
वीरत्व छोड़ मत पर का चरण गहो रे।
जो पड़े आन, खुद ही सब आग सहो रे!

दासत्व जहाँ है, वहीं स्तब्ध जीवन है,
स्वातंत्र्य निरंतर समर, सनातन रण है।
जागृति तीव्र वह घड़ी-घड़ी पल-पल।

पहरे पर चारों ओर सतर्क लगो रे।
धर धनुष-बाण उद्यत दिन-रात जगो रे।

आँधियाँ नहीं जिसमें उमंग भरती हैं,
छातियाँ जहाँ संगीनों से डरती हैं,
शोणित के बदले जहाँ अश्रु बहता है,
वह देश कभी स्वाधीन नहीं रहता है।

पकड़ो अयाल, अंधड़ पर उछल चढ़ो रे।
किरिचों पर अपने तन का चाम मढ़ो रे।

हैं खड़े हिंस्र वृक व्याघ्र, खड़ा पशुबल है,
ऊँची मनुष्यता का पथ नहीं सरल है।
ये हिंस्र साधु पर भी न तरस खाते हैं,
कंठी-माला के सहित चबा जाते हैं।

जो वीर काट कर उन्हें पार जाएगा।
उत्तुंग शृंग पर वही पहुँच पाएगा।

जब कभी अहं पर नियति चोट देती है,
कुछ चीज अहं से बड़ी जन्म लेती है।
नर पर जब भी भीषण विपत्ति आती है,
वह उसे और दुर्धर्ष बना जाती है।

चोटें खा कर विफरो, कुछ अधिक तनो रे।
धधको, स्फुलिंग से बढ़ अंगार बनो रे।

धन-धाम, ज्ञान-विज्ञान मात्र संबल है,
बस, एक मात्र बलिदान जाति का बल है।
सिर देने में जो लोग नहीं डरते हैं,
वे ही प्रभंजनों पर शासन करते हैं।

जब पड़े विपद, अपनी उमंग जाँचो रे।
विकराल काल के फण पर चढ़ नाचो रे।

उद्देश्य जन्म का नहीं कीर्ति या धन है,
सुख नहीं, धर्म भी नहीं, न तो दर्शन है,
विज्ञान, ज्ञान-वश नहीं, न तो चिंतन है,
जीवन का अंतिम ध्येय स्वयं जीवन है।

सबसे स्वतंत्र यह रस जो अनघ पिएगा।
पूरा जीवन केवल वह वीर जिएगा।

—रामधारी सिंह 'दिनकर'

२. जवानी

प्राण अंतर में लिए, पागल जवानी !
कौन कहता है कि तू
विधवा हुई, खो आज पानी ?

चल रहीं घड़ियाँ
चले नभ के सितारे,
चल रहीं नदियाँ
चले हिमखड प्यारे,
चल रही है साँस
फिर तू ठहर जाए ?
दो सदी पीछे कि
तेरी लहर जाए ?
पहन ले नरमुंड-माला,
उठ, स्वमुंड सुमेरु कर ले,

भूमि-सा तू पहन बाना आज धानी
प्राण तेरे साथ है, उठती जवानी !

द्वार बलि का खोल
चल, भूडोल कर दें,
एक हिमगिरि एक सिर
का मोल कर दें,
मसलकर, अपने

इरादों-सी, उठाकर
दो हथेली हैं कि
पृथ्वी गोल कर दें।

रक्त है? या है नसों में क्षुद्र पानी?
जाँच कर तू सीस दे-देकर, जवानी!

वह कली के गर्भ से फल-
रूप में अरमान आया!
देख तो मीठा इरादा, किस
तरह, सिर तान आया!
डालियों ने भूमि-रुख लटका
दिए फल, देख आली!
मस्तकों को दे रही
संकेत कैसे वृक्ष-डाली!

फल दिए? या सिर दिए? तरु की कहानी
गूँथकर युग में बताती चल जवानी!

लाल चेहरा है नहीं—
फिर लाल किसके?
लाल खूँ तो नहीं—
अरे कंकाल किसके?
प्रेरणा सोई कि
आटा-दाल किसके?
सिर न चढ़ पाया
कि छापा-माल किसके?

वेद की वाणी कि हो आकाश-वाणी,
धूल है जो जग नहीं पाई जवानी !

विश्व है असि मरण का—
नहीं संकल्प का है,
हर प्रलय का कोण
कायाकल्प का है,
फूल गिरते, शूल
शिर ऊँचा लिए हैं,
रसों के अभिमान
को नीरस किए हैं।

खून हो जाए न तेरा, देख, पानी,
मरण का त्योहार, जीवन की जवानी !

—माखनलाल चतुर्वेदी

प्रश्नावली

१. शौर्य का आह्वान

१. इस कविता का मुख्य संदेश क्या है ?

२. जीवन के उद्देश्य के संबंध में कवि ने किन-किन मान्यताओं को नकारा है ? उसने इस संबंध में कौन-सी मान्यता प्रस्तुत की है ?

३. स्वतंत्रता की रक्षा करने के लिए कवि ने क्या-क्या प्रेरणाएँ दी है ?

४. कवि की दृष्टि सें संसार में कैसी जातियाँ स्वाधीन रह पाती हैं ?

५. क्या ऊँची मनुष्यता को भी पशुबल से खतरा रहता है ?

६. इस कविता की कुछ प्रभावशाली और प्रेरणादायक उक्तियाँ चुनिए ।

७. दिनकर की ही स्वतंत्रता विषयक एक अन्य कविता आप पहले इसी पुस्तक में पढ़ चुके हैं। भाव और शैली की दृष्टि से दोनों कविताओं की तुलना कीजिए ।

८. निम्नांकित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए—
"दासत्व जहाँ है············सनातन रण है ।"

९. राष्ट्रीय जीवन में स्वतंत्रता का क्या महत्व कवि ने बताया है ?

२. जवानी

१. कवि ने जवानी को पागल क्यों कहा है ?

२. कवि ने किस उद्देश्य से सृष्टि के गतिशील तत्वों का उदाहरण दिया है ? उन तत्वों का उल्लेख करते हुए अपने कथन की पुष्टि कीजिए ।

३. जवानी के प्रति आह्वान एवं चुनौती वाले अंशों का चयन कीजिए ।

४. कवि 'जवानी' से क्या अपेक्षाएँ रखता है और उनकी पूर्ति के लिए क्या प्रेरणाएँ दे रहा है ?

५. 'तरु की कहानी' किस प्रकार उत्सर्ग और बलिदान का संदेश दे रही है ?

६. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए—

(क) 'कौन कहता है कि तू विधवा हुई खो आज पानी' ।

(ख) 'वह कली के गर्भ से फल-रूप में अरमान आया' ।

(ग) 'विश्व है असि मरण का·········कायाकल्प का है ।'

टिप्पणियाँ

१. शौर्य का आह्वान

अयाल — गर्दन के बाल

किरिच — नोक की ओर से भोंकी जाने वाली सीधी और पतली सी तलवार

बिफरो — विद्रोह करो, भड़को

२. जवानी

(यह कविता स्वतंत्रता के पूर्व लिखी गई थी। इसमें नवयुवकों को देश के लिए बलिदान होने की प्रेरणा दी गई है। उनकी जवानी को ललकारा गया है।)

सुमेरु — जयमाला के बीच का बड़ा दाना

धानी — धान के जैसा हल्का हरा रंग

आटा-दाल किसके — जीविका किस काम की

हर प्रलय का······ — प्रलय जवानी का प्रतीक है जिसकी सार्थकता परिवर्तन में है।

(ग) भक्ति

१. भक्ति के दोहे

रामनाम-मनि-दीप धरु जीह-देहरी द्वार ।
तुलसी भीतर बाहिरौ जौ चाहसि उजियार ।।

रामनाम को अंक है सब साधन है सून ।
अंक गए कछु हाथ नहिं अंक रहे दसगून ।।

ज्यों जग बैरी मीन को, आपु सहित, बिन बारि ।
त्यों तुलसी रघुबीर बिनु गति आपनी विचारि ।।

तुलसी ममता राम सों, समता सब संसार ।
राग न रोष न दोष दुख, दास भए भवपार ।।

सूधे मन, सूधे बचन, सूधी सब करतूति ।
तुलसी सूधी सकल विधि रघुबर-प्रेम-प्रसूति ।।

वेष बिसद, बोलनि मधुर, मन कटु, करम मलीन ।
तुलसी राम न पाइए भए विषय-जल-मीन ।।

एक भरोसो, एक बल, एक आस बिस्वास ।
एक राम-घनस्याम हित चातक तुलसीदास ।।

बिनु सत्संग न हरिकथा, तेहि बिनु मोह न भाग।
मोह गए बिनु रामपद होय न दृढ़ अनुराग॥

बिनु गुरु होइ कि ज्ञान, ज्ञान कि होइ विराग बिनु।
गावहिं वेद पुरान, सुख कि लहिय हरिभगति विनु॥

कुलिसहु चाहि कठोर, अति, कोमल कुसुमहु चाहि।
चित खगेस अस रामकर, समुझि परै कहुकाहि॥

— तुलसीदास

२. भगवान बुद्ध के प्रति

आज सभ्यता के वैज्ञानिक जड़ विकास पर
गर्वित विश्व नष्ट होने की ओर अग्रसर
स्पष्ट दिख रहा, सुख के लिए खिलौना जैसे
बने हुए वैज्ञानिक साधन, केवल पैसे
आज लक्ष्य में हैं मानव के, स्थल-जल-अंबर
रेल तार-बिजली-जहाज नभयानों से भर
दर्प कर रहे हैं मानव, वर्ग से वर्गगण,
भिड़े राष्ट्र से राष्ट्र, स्वार्थ से स्वार्थ विचक्षण।
हँसते हैं जड़वादग्रस्त, प्रेत ज्यों परस्पर
विकृत नयन मुख, कहते हुए, अतीत भयंकर
था मानव के लिए, पतित था वहाँ विश्वमन,
अपटु अशिक्षित वन्य हमारे रहे बंधुगण,
नहीं वहाँ था कहीं आज का मुक्त प्राण यह,
तर्कसिद्ध है, स्वप्न एक है विनिर्वाण यह।
वहाँ बिना कुछ कहे, सत्य-वाणी के मंदिर,
जैसे उतरे थे, तुम उतर रहे हो फिर-फिर
मानव के मन में,—जैसे जीवन में निश्चित
विमुख भोग से, राजकुँअर, त्यागकर सर्वस्थित
एक मात्र सत्य के लिए, रूढ़ि से विमुख, रत
कठिन तपस्या में, पहुँचे लक्ष्य को, तथागत।

फूटी ज्योति विश्व में, मानव हुए सम्मिलित,
धीरे-धीरे हुए विरोधी भाव तिरोहित,
भिन्न रूप से भिन्न-भिन्न धर्मों में संचित
हुए भाव, मानव न रहे करुणा से वंचित,
फूटे शत-शत उत्स सहज मानवता-जल के
यहाँ-वहाँ पृथ्वी के सब देशों में छलके,
छल के, बल के पंकिल भौतिक रूप अदर्शित
हुए तुम्हीं से, हुई तुम्हीं से ज्योति प्रदर्शित।

—सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

३. नव प्रकाश बन आओ !

नव प्रकाश बन आओ !

नव प्रकाश बन आओ ।
जीवन के घन अंधकार को
ज्योति द्रवित कर जाओ ।

अंतः स्थित हो मानव का मन
शांत विश्व-जीवन-संघर्षण
नव स्वर लहरी में जन-भू का
क्रंदन करुण डुबाओ !

छाया मृत आदर्शों का तम
छाया जड़ भौतिकता का भ्रम
अंध बीथियों में जन-मन की
नव किरणें बरसाओ !

घृणा द्वेष को प्रीति-ग्रथित कर
महा-नाश में अमृत स्रवित कर
अविश्वास को चिर प्रतीति में।
परिणत कर मुसकाओ ।

विश्व-ग्लानि में नव्य रूप धर
श्री-शोभा, स्वर्णिम समत्व भर
जन-धरणी में, नवजीवन में
मन का स्वर्ग बसाओ

शून्य वेणु उर में नव स्वर भर
मूक व्यथा हर, नव मुरली धर
अभिनव श्री, सुषमा, गरिमा में
धरणी को लिपटाओ !
नव प्रकाश बन आओ !

सुमित्रानंदन पंत

प्रश्नावली

१. भक्ति के दोहे

१. कवि ने रामनाम को 'मणि-दीप' और जिह्वा को 'देहरी' क्यों कहा है ? इससे इस दोहे में क्या सौन्दर्य आ गया है ?

२. 'अंक' शब्द के प्रयोग से इस कविता में कैसा चमत्कार उत्पन्न होता है ?

३. संकलित दोहों के आधार पर बताइए कि कवि ने राम में किन-किन गुणों का आरोप करते हुए उनके प्रति अनन्य भक्ति का निवेदन किया है ?

४. आठवें और नवें दोहों के भावों की तुलना करते हुए बताइए कि राम-भक्ति का सर्वोत्तम साधन क्या है ?

५. चातक में वे कौन-से गुण हैं जिनके कारण उसे आदर्श भक्त का प्रतीक माना जाता है ?

६. सत्संग एवं गुरु को किस प्रकार कवि ने रामभक्ति का उपकारक बताया है ?

२. भगवान बुद्ध के प्रति

१. इस कविता की प्रेरणा कवि को कैसे मिली होगी ?

२. कवि ने वैज्ञानिक उपलब्धियों को जड़ क्यों कहा है ? विज्ञान के किन कुप्रभावों का कवि ने इस कविता में उल्लेख किया है ?

३. राष्ट्रों की तुलना प्रेत से क्यों की गई है ?

४. अतीत के संबंध में कुछ वैज्ञानिकों का क्या मत है ? इस संबंध में निराला जी की क्या धारणा है ? आपका मत क्या है ?

५. भगवान बुद्ध की किन विशेषताओं की ओर कवि ने संकेत किया है ? उनके सत्प्रयासों से क्या-क्या लाभ हुए हैं ?

६. वर्तमान भौतिकवादी सभ्यता में परिवर्तन आपकी दृष्टि से कैसे संभव है ?

७. इस कविता में तुक और विरामचिन्हों के प्रयोग में क्या विशेषता है ? इससे कविता को पढ़ने एवं इसका अर्थ समझने में आपको क्या सहायता मिलती है ?

८. निम्नांकित का आशय स्पष्ट कीजिए :

स्वार्थ से स्वार्थ विचक्षण, विश्वमन, सत्य-वाणी के मंदिर, रूढ़ि से विमुख, फूटे शत-शत उत्स सहज मानवता-जल के, बल के पंकिल भौतिक रूप अदर्शित हुए तुम्हीं से ।

३. नव प्रकाश बन आओ

१. कवि नव प्रकाश के लिए क्यों प्रार्थना करता है ?

२ कवि ने वर्तमान जीवन की किन विसंगतियों का वर्णन किया है और उनका निवारण किस रूप में चाहा है ?

३. अंधकार, घृणा, द्वेष, महानाश, अविश्वास आदि के स्थान पर कवि किन भावों की प्रतिष्ठा चाहता है ?

४. निम्नांकित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए—

"छाया मृत...............नव किरणें बरसाओ"

५. भाव, भाषा और छंद की दृष्टि से प्रस्तुत कविता की तुलना निराला की कविता 'सरस्वती-वंदना' से कीजिए ।

टिप्पणियाँ

१. भक्ति के दोहे

जीह — जिह्वा, जीभ

खगेस — गरुड़ जिन्हें कागभुसुंडि जी राम की कथा सुना रहे है

२. भगवान बुद्ध के प्रति

स्वार्थ से स्वार्थ विचक्षण — एक से एक बढ़कर स्वार्थ

उत्स — स्रोत

(घ) जीवन-दर्शन

१. यदि फूल नहीं बो सकते तो

यदि फूल नहीं बो सकते, तो काँटे कम से कम मत बोओ ।

—१—

है अगम चेतना की घाटी, कमजोर बड़ा मानव का मन,
ममता की शीतल छाया में होता कटुता का स्वयं शमन ।
ज्वालाएँ जब घुल जाती हैं, खुल-खुल जाते हैं मुँदे नयन,
होकर निर्मलता में प्रशांत बहता प्राणों का क्षुब्ध पवन ।
संकट में यदि मुसका न सको, भय से कातर हो मत रोओ ।
यदि फूल नहीं बो सकते, तो काँटे कम से कम मत बोओ ।

—२—

हर सपने पर विश्वास करो, लो लगा चाँदनी का चंदन,
मत याद करो, मत सोचो—ज्वाला में कैसे बीता जीवन,
इस दुनिया की है रीति यही—सहता है तन, बहता है मन,
सुख की अभिमानी मदिरा में जो जाग सका, वह है चेतन,
इसमें तुम जाग नहीं सकते, तो सेज बिछाकर मत सोओ ।
यदि फूल नहीं बो सकते, तो काँटे कम से कम मत बोओ ।

—२—

पग-पग पर शोर मचाने से मन में संकल्प नहीं जमता,
अनसुना-अचीन्हा करने से संकट का वेग नहीं कमता,
संशय के सूक्ष्म कुहासों में विश्वास नहीं क्षण-भर रमता,
बादल के घेरों में भी तो जय-घोष न मारुत का थमता,
यदि बढ़ न सको विश्वासों पर, साँसों के मुरदे मत ढोओ,
यदि फूल नहीं बो सकते, तो काँटे कम से कम मत बोओ ।

—रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'

२. सावधान, जन-नायक

सावधान, जन-नायक सावधान !
यह स्तुति का साँप तुम्हें डस न ले ।
बचो इन बढ़ी हुई बाँहों से
धृतराष्ट्र-मोहपाश
कहीं तुम्हें कस न ले ।

सुनते हैं कभी, किसी युग में
पाते ही राम का चरण-स्पर्श
शिला प्राणवती हुई,

देखते हैं किन्तु आज
अपने उपास्य के चरणों को छू-छूकर
भक्त उन्हें पत्थर की मूर्ति बना देते हैं ।

सावधान, भक्तों की टोली आ रही है
पूजा-द्रव्य लिए !
बचो अर्चना से, फूलमाला से,
अंधी अनुशंसा की हाला से,
बचो वंदना की वंचना से, आत्म रति से,
बचो आत्मपोषण से, आत्मा की क्षति से ।

—बालकृष्ण राव

३. दे मन का उपहार सभी को

दे मन का उपहार सभी को, ले चल मन का भार अकेले ।
लहराया है दिल तो ललका
जा मधुबन में, मैदानों में
बहुत बड़े वरदान छिपे हैं
तान, तरानों, मुसकानों में,
        घबराया है जो तो मुड़ जा
        सूने मरु, नीरव घाटी में,
दे मन का उपहार सभी को, ले चल मन का भार अकेले ।

किसके सिर का बोझा कम है
जो औरों का बोझ बँटाए,
होठों के सतही शब्दों से
दो तिनके भी कब हट पाए,
        लाख जीभ में एक, हृदय की
        गहराई को छू पाती है,

कटती है हरएक मुसीबत एक तरह बस-मेले-झेले ।
दे मन का उपहार सभी को, ले चल मन का भार अकेले ।

छुटकारा तुमने पाया है,
पूछूँ तो, क्या कीमत देकर,
कर्ज़ चुका आए तुम अपना,
लेकिन मुझको ज्ञात कि लेकर

दया किसी की, कृपा किसी की,
भीख किसी की, दान किसी का ।
तुमसे सौ दर्जे अच्छे वे जो अपने बंधन से खेले ।
दे मन का उपहार सभी को, ले चल मन का भार अकेले ।

जंजीरों की झनकारों से
हैं वीणा के तार लजाते,
जीवन के गंभीर स्वरों को
केवल भागी हैं सुन पाते,
मान उन्हीं का भान जिन्हें है
मानव के दुखदर्द-दहन का,
गीत वही बाँटेगा सबको, जो दुनिया की पीर सकेले ।
दे मन का उपहार सभी को, ले चल मन का भार अकेले ।

—हरिवंशराय 'बच्चन'

४. थके हुए कलाकार से

सृजन की थकन भूल जा देवता !

अभी तो पड़ी है धरा अधबनी,
अभी तो पलक में नहीं खिल सकी
नवल कल्पना की मृदुल चाँदनी,
अभी अधखिली ज्योत्स्ना की कली
नहीं ज़िन्दगी की सुरभि में सनी !
अभी तो पड़ी है धरा अधबनी,
अधूरी धरा पर नहीं है कहीं
अभी स्वर्ग की नींव का भी पता !
सृजन की थकन भूल जा देवता !

रुका तू, गया रुक जगत का सृजन,
तिमिरमय नयन में डगर भूलकर
कहीं खो गई रोशनी की किरन
अलस बादलों में कहीं सो गया
नई सृष्टि का सातरंगी सपन
रुका तू, गया रुक जगत का सृजन,
अधूरे सृजन से निराशा भला
किसलिए जब अधूरी स्वयं पूर्णता ?
सृजन की थकन भूल जा देवता !

प्रलय से निराशा तुझे हो गई ?
सिसकती हुई साँस की जालियों में
सबल प्राण की अर्चना खो गई
थके बाहुओं में अधूरी प्रलय
औ' अधूरी सृजन-योजना खो गई
थकन से निराशा तुझे हो गई ?
इसी ध्वंस में मूर्छित-सी कहीं
पड़ी हो नई जिन्दगी, क्या पता !
सृजन की थकन भूल जा देवता !

—धर्मवीर भारती

प्रश्नावली

१. यदि फूल नहीं बो सकते तो

१. इस कविता में कवि ने किस बात पर विशेष बल दिया है ?

२. 'काँटे कम से कम मत बोओ,' से कवि का क्या तात्पर्य है ?

३. कवि हर सपने पर विश्वास करने के लिए क्यों कहता है ?

४. कवि ने कैसे व्यक्ति को चेतन माना है ?

५. कविता की किन पंक्तियों में मानव-जीवन के यथार्थ का चित्रण किया गया है और किन पंक्तियों में उसका निदान सुझाया गया है ?

६. शब्द-चयन की दृष्टि से इस कविता की कुछ विशेषताएँ उद्घाटित कीजिए ।

७. इस कविता की कौन-सी पंक्तियाँ या उनके अंश आपको अधिक सुंदर लगे ? सकारण उत्तर दीजिए ।

८. इस कविता में अनेक स्थलों पर सूक्ष्म भाववाचक संज्ञाओं के साथ कवि ने कुछ मूर्त संज्ञाओं का प्रयोग किया है—जैसे चेतना की घाटी । कवि ने ऐसा किस उद्देश्य से किया है ? रूपक अलंकार के ऐसे अन्य स्थल चुनकर उनका सौन्दर्य उद्घाटित कीजिए ।

९. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए :

है अगम चेतना·········प्राणों का क्षुब्ध पवन ।

२. सावधान, जन-नायक

१. कवि जन-नायकों को किन-किन बातों के प्रति सावधान कर रहा है ?

२. कवि ने स्तुति को साँप के समान और अनुशंसा (प्रशंसा) को हाला के समान क्यों बताया है ?

३. इस कविता में संकेतित दोनों अंतर्कथाओं का उल्लेख कीजिए ।

४. 'अपने उपास्य के·········मूर्ति बना देते हैं' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए ।

५. निम्नलिखित पदबंधों का आशय स्पष्ट कीजिए :

धृतराष्ट्र-मोहपाश, वंदना की वंचना, आत्म रति, आत्मपोषण, आत्मा की क्षति ।

३. दे मन का उपहार सभी को

१. इस कविता का मुख्य संदेश क्या है ?

२. इस कविता की उन पंक्तियों का चयन कीजिए जिनमें सहयोगी जीवनयापन की कामना की गई है।

३. 'मन का उपहार' और 'मन का भार' का भाव स्पष्ट कीजिए ।

४. हृदय के उल्लास का वास्तविक उपयोग क्या हो सकता है ?

५. कवि हृदय की व्यथा को अपने तक ही सीमित रखने के लिए क्यों कह रहा है ?

६. मौखिक सहानुभूति के संबंध में कवि ने क्या कहा है ?

७. इस कविता की कुछ भावपूर्ण पंक्तियाँ चुनकर उनका भाव-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए ।

४. थके हुए कलाकार से

१. सृजन की थकन भूल जाने का निवेदन कवि क्यों करता है ?

२. इस कविता में प्रयुक्त देवता शब्द से कवि ने किसे संबोधित किया है ?

३. यदि सर्जक सृजन करना छोड़ देगा तो उसका परिणाम क्या होगा ?

४. कवि अधूरे सृजन से निराश न होने के लिए क्यों कहता है ?

५. सर्जक की निराशा किस बात को सोचकर होती है ? कवि ने इस विषय में उसे क्या परामर्श दिया है ?

६. सृजन और प्रलय सृष्टि की विकास-प्रक्रिया के अनिवार्य अंग हैं। इस सत्य को स्पष्ट करने के लिए कुछ उदाहरण दीजिए ।

७. इस कविता से आप क्या प्रेरणा ग्रहण करते हैं ?

८. निम्नांकित पंक्तियों का सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए :

(क) अभी तो पलक·········सुरभि में सनी ।

(ख) तिमिरमय नयन में·········सातरंगी सपन ।

(ग) सिसकती हुई·········सृजन-योजना खो गई ।

(घ) इसी ध्वंस में·········क्या पता ।

९. इस कविता की कुछ विशेषताएँ उपयुक्त उदाहरण देते हुए बताइये ।

टिप्पणियाँ

२. सावधान, जननायक

धृतराष्ट्र-मोहपाश — महाभारत की कथा है कि युद्ध के बाद धृतराष्ट्र ने अपने पुत्र दुर्योधन की मृत्यु का प्रतिशोध लेने के लिए मोहग्रस्त हो कर भीम को मार डालने के लिए एक उपाय सोचा। उन्होंने प्यार के बहाने भीम को आलिंगन करने के लिए बुलाया और अपनी बलिष्ट भुजाओं में दबा कर उन्हें मार डालना चाहा। श्रीकृष्ण उनकी चाल समझ गए। उन्होंने लोहे की बनी भीम की मूर्ति अंधे धृतराष्ट्र के आगे बढ़ा दी। धृतराष्ट्र ने अपने आलिंगन द्वारा उसे चूर-चूर कर दिया।

कवि कहना चाह रहा है कि प्रशंसा और खुशामद की धृतराष्ट्र जैसी शक्तिशालिनी भुजाओं से बचो।

३. दे मन का उपहार सभी को

सकेले — समेट कर

शिला — शापवश शिला बनी हुई अहल्या

(ङ) सौन्दर्य और प्रेम

१. प्रेम-माधुरी

रोकहिं जौ तौ अमंगल होय औ प्रेम नसै जौ कहैं पिय जाइए।
जौ कहैं जाहु न तौ प्रभुता, जौ कछू न कहैं तौ सनेह नसाइए।
जौ 'हरिचंद' कहैं तुम्हरे बिन जीहैं न, तौ यह क्यों पतिआइए।
तासौं पयान समै तुमसौं हम का कहैं आपै हमें समझाइए॥

घेरि घेरि घन आए छाइ रहे चहुँ ओर
  कौन हेत प्राननाथ सुरति बिसारी है।
दामिनी दमक जैसी जुगनू चमक तैसी
  नभ में बिसाल बक-पंगति सँवारी है।
ऐसो समै 'हरिचंद' धीर न धरत नैकु
  बिरह-बिथा तैं होत ब्याकुल पियारी है।
प्रीतम पियारे नंदलाल बिनु हाय यह
  सावन की रात किधौं द्रौपदी की सारी है।

इन दुखियान कौ न चैन सपनैहूँ मिल्यौ
  तासौं सदा व्याकुल विकल अकुलाएँगी।
प्यारे 'हरिचंद जू' की बीती जानि औध प्रान
  चाहत चलै पै यै तौ संग ना समाएँगी ।
देख्यौ एक बारहू न नैन भरि तोहि यातें
  जौन जौन लोक जैहैं तहाँ पछताएँगी।
बिना प्रान-प्यारे भए दरस तुम्हारे हाय
  मरैहू पै आँखें ये खुली ही रहि जाएँगी ।।

—भारतेन्दु हरिश्चंद

२. श्रद्धा का सौन्दर्य

और देखा वह सुंदर दृश्य
नयन का इद्रजाल अभिराम,
कुसुम-वैभव में लता समान
चंद्रिका से लिपटा घनश्याम ।

हृदय की अनुकृति बाह्य उदार
एक लंबी काया, उन्मुक्त
मधु पवन क्रीड़ित ज्यों शिशु साल
सुशोभित हो सौरभ संयुक्त ।

मसृण गांधार देश के, नील
रोमवाले मेषों के चर्म,
ढक रहे थे उसका वपु कांत
बन रहा था वह कोमल वर्म ।

नील परिधान बीच सुकुमार
खुल रहा मृदुल अधखुला अंग,
खिला है ज्यों बिजली का फूल
मेघ-बन बीच गुलाबी रंग ।

आह ! वह मुख ! पश्चिम के व्योम
बीच जब घिरते हों घन श्याम
अरुण रवि मंडल उनको भेद
दिखाई देता हो छबिधाम

या कि, नव इंद्रनील लघु शृंग
फोड़ कर धधक रही हो कांत
एक लघु ज्वालामुखी अचेत
माधवी रजनी में अश्रांत ।

घिर रहे थे घुँघराले बाल
अंस अवलंबित मुख के पास,
नील घन-शावक से सुकुमार
सुधा भरने को विधु के पास ।

और उस मुख पर वह मुसकान ।
रक्त किसलय पर ले विश्राम
अरुण की एक किरण अम्लान
अधिक अलसाई हो अभिराम ।

नित्य यौवन छवि से ही दीप्त
विश्व की करुण कामना मूर्ति :
स्पर्श के आकर्षण से पूर्ण
प्रकट करती ज्यों जड़ में स्फूर्ति ।

उषा की पहली लेखा कांत,
माधुरी से भीगी भर मोद :
मद भरी जैसे उठे सलज्ज
भोर की तारक-द्युति की गोद ।

कुसुम कानन अंचल में मंद
पवन प्रेरित सौरभ साकार,
रचित परमाणु पराग शरीर
खड़ा हो ले मधु का आधार ।

और पड़ती हो उस पर शुभ्र
नवल मधु-राका मन की साध :
हँसी का मद विह्वल प्रतिबिम्ब
मधुरिमा खेला सदृश अबाध ।

—जयशंकर प्रसाद

३. मानसरोदक खंड

(जायसी ने 'पदमावत' में सिंहलद्वीप की राजकुमारी पद्मावती तथा चित्तौड़ के राजकुमार रत्नसेन के प्रेम और विवाह का वर्णन किया है। पद्मावती अपने रूप और गुणों के लिए प्रसिद्ध थी। एक बार पूर्णिमा के दिन वह अपनी सखियों के साथ स्नान करने के लिए मानसरोवर गई। इस अवतरण में उसी प्रसंग का वर्णन है। कवि ने सखियों के वार्तालाप तथा एक सखी के हार खोने और मिलने का अत्यंत सरस वर्णन किया है। वास्तव में पद्मावती के दर्शन और स्पर्श की अभिलाषा से मानसरोवर ने ही वह हार छिपा लिया था। अतः पद्मावती के प्रवेश करते ही वह हार तुरंत जल के ऊपर आ गया।)

एक दिवस पून्यौ तिथि आई। मानसरोदक चली नहाई॥
पदमावति सब सखी बुलाई। जनु फुलवारि सबै चलि आई॥
खेलत मानसरोवर गई। जाइ पाल पर ठाढ़ी भई॥
देखि सरोवर हँसैं कुलेली। पदमावति सौं कहहिं सहेली॥
ए रानी! मन देखु बिचारी। एहि नैहर रहना दिन चारी॥
जौ लगि अहै पिता कर राजू। खेलि लेहु जो खेलहु आजू॥
पुनि सासुर हम गवनब काली। कित हम, कित यह सरवर-पाली॥
कित आवन पुनि अपने हाथा। कित मिलि के खेलब एक साथा॥
सासु ननद बोलिन्ह जिउ लेहीं। दारुन ससुर न निसरै देहीं॥

पिउ पियार सिर ऊपर, पुनि सो करै दहुँ काह॥
दहुँ सुख राखै की दुख, दहुँ कस जनम निबाह॥

सरवर तीर पदमिनी आई। खोंपा छोरि केस मुकलाई॥
ससि-मुख, अंग मलयगिरि बासा। नागिन झाँपि लीन्ह चहुँ पासा॥
ओनई घटा परी जग छाहाँ। ससि के सरन लीन्ह जनु राहाँ॥

छपि गै दिनहिं भानु कै दसा। लेइ निसि नखत चाँद परगसा॥
भूलि चकोर दीठि मुख लावा। मेघघटा महँ चंद देखावा॥

सरवर रूप विमोहा, हिये हिलोरहि लेइ।
पाँव छुवै पावौं एहि मिस लहरहि देइ॥

लागीं केलि करै मझ नीरा। हंस लजाइ बैठ ओहि तीरा।
पदमावति कौतुक कहँ राखी। तुम ससि होहु तराइन्ह साखी॥
बाद मेलि कै खेल पसारा। हार देइ जो खेलत हारा॥
सँवरिहि साँवरि, गोरहि गोरी। आपनि आपनि लीन्ह सो जोरी॥
बूझि खेल खेलहु एक साथा। हार न होइ पराए हाथा॥
आजुहि खेल, बहुरि कित होई। खेल गए कित खेलै कोई?
धनि सो खेल खेल सह पेमा। रउताई औ कूसल खेमा?

मुहमद बाजी पेम कै, ज्यों भावै त्यों खेल।
तिल फूलहि के संग ज्यों, होइ फुलायल तेल॥

सखी एक तेइ खेल न जाना। भै अचेत मनि-हार गँवाना॥
कँवल डार गहि भै बेकरारा। कासौं पुकारौं आपन हारा॥
कित खेलै आइउँ एहि साथा। हार गँवाइ चलिउँ लेइ हाथा॥
घर पैठत पूँछब यह हारू। कौन उतर पाउब पैसारू॥
नैन सीप आँसू तस भरे। जानौ मोति गिरहिं सब ढरे॥
सखिन कहा बौरी कोकिला। कौन पानि जेहि पौन न मिला?
हार गँवाइ सो ऐसे रोवा। हेरि हेराइ लेइ जौं खोवा॥

लागीं सब मिलि हेरै, बूड़ि बूड़ि एक साथ।
कोइ उठी मोती लेइ, काहू घोंघा हाथ॥

कहा मानसर चाह सो पाई। पारस रूप इहाँ लगि आई ॥
भा निरमल तिन्ह पाँयन्ह परसे। पावा रूप रूप के दरसे ॥
मलय समीर बास तन आई। भा सीतल, गै तपनि बुझाई ॥
न जनौं कौन पौन लेइ आवा। पुन्य-दसा भै पाप गँवावा ॥
ततखन हार बेगि उतिराना। पावा सखिन्ह चंद बिहँसाना ॥
बिगसा कुमुद देखि ससि रेखा। भै तहँ ओप जहाँ जोइ देखा ॥
पावा रूप रूप जस चहा। ससि-मुख जनु दरपन होइ रहा ॥

नयन जो देखा कँवल भा, निरमल नीर सरीर ।
हँसत जो देखा हंस भा, दसन जोति नग हीर ॥

—मलिक मुहम्मद जायसी

प्रश्नावली

१. प्रेम-माधुरी

१. नायक की विदाई के समय नायिका के मन में उठने वाले अंतर्द्वन्द्व का स्पष्ट वर्णन करते हुए नायिका की चतुराई का उद्घाटन कीजिए ।

२. 'सावन की रात' को 'द्रौपदी की साड़ी' क्यों कहा गया है ?

३. अंतिम कवित्त में दुखिया आँखों की मर्म व्यथा का जो सजीव वर्णन हुआ है, उसका अपने शब्दों में प्रभावशाली वर्णन कीजिए ।

२. श्रद्धा का सौन्दर्य

१. इस कविता में श्रद्धा के किन-किन अंगों के सौन्दर्य का वर्णन किया गया है और उनका सादृश्य प्रकृति की किन-किन वस्तुओं से दिखाया गया है ?

२. कोई भी वस्तु उपयुक्त पृष्ठभूमि में ही सुंदर लगती है। श्रद्धा के सौन्दर्य को उभारने के लिए कवि ने जिस परिदृश्य की आयोजना की है, उसका वर्णन कीजिए ।

३. श्रद्धा के तथा उसके अंगों के वर्णन के लिए कवि ने किन-किन उपमेयों का प्रयोग किया है ?

४. इस कविता में वर्णित श्रद्धा के वस्त्राभूषण का सौन्दर्य उद्घाटित कीजिए ।

५. इस कविता के अनुसार श्रद्धा के सौन्दर्य का प्रभावशाली शब्दांकन कीजिए ।

६. श्रद्धा के रूप-वर्णन को सुंदर और सजीव बनाने के लिए कवि ने किन-किन युक्तियों का सहारा लिया है ?

७. इस कविता और अब तक पढ़ी गई अन्य छायावादी कविताओं के आधार पर छायावाद की किन्हीं चार विशेषताओं का उल्लेख कीजिए ।

३. मानसरोदक खंड

१. पद्मावती के रूप का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए ।

२. इस अंश के आधार पर मानसरोवर का सुंदर वर्णन कीजिए ।

३. हार खो जाने के बाद सखियों के मन की क्या दशा हुई ? खोया हार कैसे मिला ? हार मिल जाने की प्रसन्नता का वर्णन कवि ने किस प्रकार किया है ?

४. पठित अंश के आधार पर निम्नलिखित उपमानों के उपमेय लिखिए—

ससि, मेघ-घटा, तराइन्ह, सीप, कुमुद, मोती।

५. जायसी अपने काव्य के बीच-बीच में आत्मा और परमात्मा के संबंधों का संकेत करते चलते हैं। इस अंश के उस स्थल को बताइए जहाँ ऐसा संकेत किया गया है। इसके आधार पर जायसी के 'आत्मा-परमात्मा संबंध' की मान्यता स्पष्ट कीजिए।

६. निम्नलिखित अंशों को स्पष्ट कीजिए—

(क) सरवर रूप·········लहरहि देइ।

(ख) नयन जो·········नग हीर।

टिप्पणियाँ

१. प्रेम-माधुरी

पतिआइए — विश्वास करेंगे
सुरति — स्मृति, याद
औध — अवधि

२. श्रद्धा का सौंदर्य

साल — शाल—एक प्रकार का वृक्ष
मसृण — चिकना, मुलायम, चमकदार
मेषों — भेड़ों
वर्म — कवच, आच्छादन

३. मानसरोदक खंड

खोंपा	— जूड़ा
मुकलाई	— मुक्त किया
श्रोनई	— झुक आई
राहाँ	— राहु
लबाइ	— लुभाकर

(च) रहस्यानुभूति

१. तुम मुझमें प्रिय ! फिर परिचय क्या

तुम मुझमें प्रिय ! फिर परिचय क्या !
तारक में छवि, प्राणों में स्मृति,
पलकों में नीरव पद की गति,
लघु उर में पुलकों की संसृति,
भर लाई हूँ तेरी चंचल
और करूँ जग में संचय क्या !

तेरा मुख सहास अरुणोदय,
परछाई रजनी विषादमय,
वह जागृति वह नींद स्वप्नमय,
खेल-खेल थक-थक सोने दो
मैं समझूँगी सृष्टि प्रलय क्या !

तेरा अधर-विचुंबित प्याला
तेरी ही स्मित-मिश्रित हाला,
तेरा ही मानस मधुशाला,
फिर पूछूँ क्या मेरे साकी !
देते हो मधुमय विषमय क्या ?

रोम-रोम में नंदन पुलकित,
साँस-सांस में जीवन शत-शत,
स्वप्न-स्वप्न में विश्व अपरिचित,
मुझमें नित बनते मिटते प्रिय !
स्वर्ग मुझे क्या निष्क्रिय लय क्या?

हारूँ तो खोऊँ अपनापन
पाऊँ प्रियतम में निर्वासन,
जीत बनूँ तेरा ही बंधन
भर लाऊँ सीपी में सागर
प्रिय मेरी अब हार विजय क्या ?

चित्रित तू मैं हूँ रेखा-क्रम,
मधुर राग तू मैं स्वर संगम,
तू असीम मैं सीमा का भ्रम,
काया छाया में रहस्यमय ।
प्रेयसि प्रियतम का अभिनय क्या
तुम मुझमें प्रिय ! फिर परिचय क्या !

—महादेवी वर्मा

२. पद

मोको कहाँ ढूँढे बंदे, मैं तो तेरे पास में।
ना मैं देवल ना मैं मस्जिद, ना काबे कैलास में।
ना तो कौनो क्रिया करम में नाहिं जोग बैराग में।
खोजी होय तो तुरतहि मिलिहौं, पलभर की तालास में।
कहै कबीर सुनो भई साधो, सब साँसों की साँस में।।

जतन बिन मिरगनि खेत उजारे।
टारे टरत नाहिं निसि बासुरि, बिडरतना हिं बिडारे।
अपनै अपनै रस के लोभी, करतब न्यारे-न्यारे।
अति अभिमान बदत नहिं काहू, बहुत लोग पचि हारे।
बुधि मेरी किरखी, गुर मेरौ बिझुका आखर दोइ रखवारे।
कहै कबीर अब चरन न दइहै, बेरियाँ भली सँभारे।।

साधो यह तन ठाठ तँबूरे का।

ऐंचत तार मरोरत खूँटी, निकसत राग हजूरे का ।
टूटे तार बिसर गई खूँटी, हो गया धूरम धूरे का ।
कहै कबीर सुनो भई साधो, अगम पंथ कोई सूरे का ।।

—कबीर

प्रश्नावली

१. तुम मुझमें प्रिय

१. कवयित्री ने यहाँ 'प्रिय' शब्द से किसे संबोधित किया है ?

२. उसे अपने प्रिय की छवि कहाँ-कहाँ और किस प्रकार दिखाई देती है ?

३. कवयित्री परमात्मा को साकी के रूप में क्यों देखती है ?

४. परमात्मा से एकाकार होने पर आत्मा को क्या अनुभूति होती है ?

५. कवयित्री ने परमात्मा को चित्रित, मधुर राग और असीम तथा आत्मा को रेखा-क्रम, स्वर-संगम और सीमा का भ्रम क्यों कहा है ?

६. इस कविता के आधार पर कवयित्री की मान्यता स्पष्ट कीजिए।

७. निम्नलिखित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए;

> हारूँ तो खोऊँ अपनापन,
> पाऊँ प्रियतम में निर्वासन,
> जीत बनूँ तेरा ही बंधन,
> भर लाऊँ सीपी में सागर,
> प्रिय, मेरी अब हार विजय क्या !

२. पद

१. कबीर के अनुसार परमात्मा का सच्चा निवास स्थान कहाँ है ?

२. कबीर ने मानव-शरीर की उपमा तंबूरे से क्यों दी है ?

३. उन्होंने भौतिक शरीर की किस सीमा की ओर संकेत किया है ?

४. अंतिम पद में कबीर ने मृग और खेत से किन की ओर संकेत किया है ? इन मृगों द्वारा किए जाने वाले नाश से कैसे बचा जा सकता है ?

५. इंद्रियों का स्वभाव क्या है ? कबीर ने इंद्रियों पर विजय पाने के लिए क्या उपाय सुझाया है ?

६. कबीर की खेती का स्वरूप क्या है ? उसमें गुरु और रामनाम क्या सहायता करते हैं ?

सामान्य

१. रहस्यवादी कविताओं की कुछ विशेषताएँ निम्नलिखित हैं। कविताओं से इनके उदाहरण दीजिए :

(क) आत्मा और परमात्मा के रहस्यमय संबंधों का संकेत

(ख) परमात्मा को प्रिय और आत्मा का प्रेमिका के रूप में चित्रण

(ग) परमात्मा के लिए आत्मा की विरह-व्यथा का वर्णन

(घ) परमात्मा में आत्मा के विलीन हो जाने की तीव्र इच्छा का संकेत

(ङ) आत्मा और परमात्मा में अद्वैत का संकेत

(च) प्रकृति में सर्वत्र परमात्मा के रूप को देखना

टिप्पणियाँ

पद

मिरगनि — पशु, हिरन (यहाँ इंद्रियाँ)

बिडरत — भगाने से भागते नहीं हैं

बवत — मानता नहीं

किरखी — कृषि

बिभुका — खेतों में पक्षियों आदि को भगाने के लिए खड़ा किया गया पुतला

बेरियाँ — बाड़ी, बगीचा

(छ) विविध

१. भ्रमर-गीत-प्रसंग

अँखियाँ हरि दरसन की प्यासी ।
दख्यौ चाहति कमलनैन कौं, निसि-दिन रहति उदासी ।।
आए ऊधौ फिरि गए आँगन, डारि गए गर फाँसी ।
केसरि तिलक मोतिनि की माला, वृंदावन के बासी ।।
काहू के मन की कोउ जानत, लोगनि के मन हाँसी ।
सूरदास प्रभु तम्हरे दरस कौं, करवत लैहौं कासी ।।

निरगुन कौन देस को बासी ?
मधुकर कहि समुझाइए सौंह दै, बूझति सोच न हाँसी ।।
को है जनक, कौन है जननी, कौन नारि, को दासी ?
कैसो बरन, भेष है कैसो, किहिं रस के अभिलाषी ?
पावैगो पुनि कियौ आपनौ, जौ रे करैगी गाँसी ।
सुतन मौन ह्वै रलौ बावरौ, सूर सतै मति नासी ।।

ऊधौ मन न भए दस-बीस ।

एक हुतौ सो गयौ स्याम सँग, को आराधै ईस ॥
इंद्री सिथिल भई केसव बिनु, ज्यौं देही बिनु सीस ।
आसा लागि रहति तन स्वासा जीवहिं कोटि बरीस ॥
तुम तो सखा स्यामसुंदर के, सकल जोग के ईस ।
सूर हमारे नँद-नंदन बिनु और नहीं जगदीस ॥

२. उद्धव की बिदाई

(श्रीकृष्ण के मथुरा चले जाने पर ब्रज के लोग बहुत दुःखी हुए। उन्हें ज्ञान का उपदेश देने के लिए कृष्ण ने अपने परम मित्र और ज्ञानी उद्धव को भेजा। किन्तु गोपियों के प्रेम को देखकर उद्धव ज्ञान की बातें भूल गए और स्वयं प्रेम-विभोर हो उठे। 'उद्धवशतक' से उद्धृत प्रस्तुत कवित्तों के वर्ण्य विषय है—(१) ब्रज से उद्धव की विदा और (२) उद्धव के हृदय पर गोपियों के प्रेम का प्रभाव।)

धाई जित-तित तैं बिदाई हेत ऊधव की,
गोपी भरीं आरति सँभारति न साँसु री।
कहै रतनाकर मयूर-पच्छ कोऊ लिए,
कोऊ गुंज-अंजुली उमाहै प्रेम-आँसु री॥
भाव-भरी कोऊ लिए रुचिर सजाव दही,
कोऊ मही मंजु दाबि दलकति पाँसुरी।
पीत पट नंद जसुमति नवनीत नयौ,
कीरति-कुमारी सुरवारी दई बाँसुरी॥

कोऊ जोरि हाथ कोऊ नाइ नम्रता सौं माथ,
भाषन की लाख लालसा सौं नहि जात हैं।
कहै रतनाकर चलत उठि ऊधव के,
कातर ह्वै प्रेम सौं सकल महि जात हैं॥
सबद न पावत सो भाव उमगावत जो,
ताकि-ताकि आनन ठगे से ठहि जात हैं।
रंचक हमारी सुनौ रंचक हमारी सुनौ,
रंचक हमारी सुनौ कहि रहि जात हैं॥

आए लौटि लज्जित नवाए नैन ऊधौ अब,
सब सुख-साधन कौ सूधौ सौ जतन लै।
कहै रतनाकर गँवाए गुन गौरव औ,
गरब-गढ़ी कौ परिपूरन पतन लै॥
छाए नैन नीर पीर-कसक कमाए उर,
दीनता अधीनता के भार सौं नतन लै।
प्रेम-रस रुचिर बिराग-तूमड़ी मैं पूरि,
ज्ञान-गूदड़ी मैं अनुराग सौ रतन लै॥

प्रेम मद-छाके पग परत कहाँ के कहाँ
थाके अंग नैननि सिथिलता सुहाई है।
कहै रतनाकर यौं आवत चकात ऊधौ,
मानौ सुधियात कोऊ भावना भुलाई है॥
धारत धरा पै ना उदार अति आदर सौं,
सारत बँहोलिनि जो आँस-अधिकाई है।
एक कर राजै नवनीत जसुदा कौ दियौ,
एक कर बंसी बर राधिका पठाई है॥

आँसुनि की धार औ उभार कौं उसाँसनि के,
तार हिचकीनि के तनिक टरि लेन देहु।
कहै रतनाकर फुरन देहु बात रंच,
भावनि के विषम प्रपंच सरि लेन देहु॥
आतुर ह्वै और हू न कातर बनावौ नाथ,
नैसुक निवारि पीर धीर धरि लेन देहु।
कहत अबै हैं कहि आवत जहाँ लौं सबै,
नैंकु थिर कढ़त करेजौ करि लेन देहु॥

छावते कुटीर कहूँ रम्य जमुना कै तीर,
गौन रौन-रेती सौं कदापि करते नहीं ।
कहै रतनाकर बिहाइ प्रेम-गाथा गूढ़,
स्त्रौन रसना मैं रस और भरते नहीं ।।
गोपी ग्वाल बालनि के उमड़त आँसू देखि,
लेखि प्रलयागम हूँ नैकु डरते नहीं ।
होतौ चित चाव जौ न रावरे चितावन कौ,
तजि ब्रज-गाँव इतै पाँव धरते नहीं ।।

—जगन्नाथ दास 'रत्नाकर'

प्रश्नावली

१ भ्रमर-गीत-प्रसंग

१. गोपियों की उदासी का क्या कारण है ? उनकी हार्दिक अभिलाषा क्या है ?

२. उद्धव कौन थे ? वे कौन फंदा गोपियों के गले में डाल गए ? उनसे गोपियों की क्या शिकायत है ?

३: 'केसरि तिलक मोतिनि की माला, वृंदावन के वासी' से गोपियों का संकेत किन की ओर है ?

४. गोपियों की योगियों से क्या शिकायत है ?

५. दूसरे पद में निर्गुण ब्रह्म का उपहास गोपियों ने क्या-क्या कहकर किया है ?

६. निर्गुण ब्रह्म की उपासना करने में गोपियाँ क्यों असमर्थ हैं ? इसके लिए वे क्या-क्या तर्क देती हैं ?

७. प्रथम पद में गोपियाँ भावुक प्रतीत होती हैं जबकि दूसरे और तीसरे पदों में तार्किक। उपयुक्त उदाहरण देकर उपर्युक्त कथन की समीक्षा कीजिए।

८. उपर्युक्त पदों के आधार पर श्रीकृष्ण के प्रति गोपियों के अनन्य प्रेम का वर्णन कीजिए।

२. उद्धव की विदाई

१. संकलित कवित्तों के आधार पर उद्धव की भाव भीनी विदाई का वर्णन कीजिए।

२. दूसरे कवित्त के आधार पर विदा के समय गोपियों की भाव-विह्वलता का वर्णन कीजिए।

३. वृंदावन से लौटते समय उद्धव की मानसिक दशा में जो परिवर्तन हुए उनका वर्णन कीजिए।

४. उद्धव ब्रज भूमि छोड़कर मथुरा क्यों नहीं लौटना चाहते थे ?

५. रत्नाकर का उद्धव-शतक पद-लालित्य के लिए प्रसिद्ध है। इन कवित्तों से पद-लालित्य की उक्तियों के कुछ उदाहरण दीजिए।

६. इन कवित्तों में सबसे अच्छा कवित्त आपको कौन-सा लगा ? क्यों ? उसे लय के साथ गाकर कक्षा में सुनाइए।

७. व्याख्या कीजिए: (क) रंचक हमारी सुनौ''''''रहि जात हैं।
(ख) प्रेम-रस रुचिर''''''रतन लै।

सामान्य

१. सूर और रत्नाकर की गोपियों की तुलना कीजिए।

२. सूर और रत्नाकर दोनों ने एक ही प्रसंग पर अपनी-अपनी रचनाएँ की हैं। दोनों के दृष्टि-कोण, विषय-प्रतिपादन, भाषा और छंद में आपको क्या अंतर दिखाई पड़ता है? दोनों में आपको कौन-सी रचना प्रिय लगती है?

टिप्पणियाँ

१. भ्रमर-गीत-प्रसंग

गाँसी — व्यंग्योक्ति

२. उद्धव की विदाई

उमाहे — उमड़ आए हुए
दलकति — काँपती
पाँसुरी — पसली
सारत — पोंछते हैं
बँहोलिनि — बोहों से
फुरन — स्फुट होना, स्पष्ट निकलना
सरि — शांत
नैसुक — थोड़ा सा, रंच मात्र